TYPING WAY

भारत का इतिहास – NOTES

पटवार | पुलिस | ग्राम सेवक

पटवारी पुलिस व ग्रामसेवक की आगामी परीक्षा की तैयारी हेतु भारतीय इतिहास पर संकलित सर्वश्रेष्ठ नोट्स सम्पूर्ण सिलेबस के साथ विद्यार्थी के समय को ध्यान में रख कर बनाये गए है। परीक्षा की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण तथ्य व संभावित प्रश्न इसमें शामिल है ।

संकलन कर्ता : अजित त्रिवेदी
28/7/2020

" बाधाएं है कौरव दल सी, इन सब पर तुम कूच करो।
अर्जुन सा योद्धा बन कर गाण्डीव लेकर टूट पड़ो।"

कल्पना करे की एक नक्शा है, जो आपको आपके सपनो की सरकारी नौकरी तक पहुँचने का सबसे सटीक व अवरोध रहित मार्ग दिखता है। आप ऐसे ही एक नक़्शे को अपने हाथ में लिए है। भारीतय इतिहास पर 100 पन्नो की यह पुस्तक एक नक्शा है जो आपको आपकी आगामी परीक्षा में सफलता की और ले जायेगा।

वैसे तो बाजार में कई पुस्तके उपलब्ध है जो भारत के इतिहास के सिलेबस को कवर करती है, और जिनमे भर भर के जानकारी उपलब्ध है। पर सवाल यह है की आपको इतनी जानकारी चाहिए क्यों, क्या आप इतिहासकार बनना चाहते है, या आपको इतिहास का शिक्षक बनने की चेष्ठा है।

मेरे ख्याल से नहीं, आपको हर हाल में इस परीक्षा को क्लियर करना है जो आपके सपने की नौकरी आपको दिलाएगी।

कॉम्पिटिशन के इस युग में वह सफल नहीं होता जो सिलेबस प्रत्येक कोने में झाकने का प्रयत्न करता है अपितु सलेक्शन उसका निश्चित होता है जिसे यह पता हो की उसे क्या नहीं पढ़ना है।

कल्पना कीजिये की आप एक 10 लोगो के समूह में कीसी जंगल में फस गए है और चीता आपको खाने के लिए आपके समूह के पीछे भाग रहा है। ऐसी स्तिथि में क्या करेंगे आप? क्या आप चीता से तेज भागने की कोशिश करेंगे? क्या आप चीता से तेज भाग भी पाएंगे?

इसका सीधा सा समाधान यह है की आपको बस उन 9 लोगो से तेज़ भागना है जो आपके साथ उस भीड़ में दौड़ रहे है ।

सामान्य ज्ञान का सिलेबस वही चीता है। हकीकत में इसे कोई भी समय रहते पूरा नहीं कर सकता है। इसीलिए पहेचानना सीखे की क्या पढ़े और क्या छोड़े।

इस पुस्तक में हमने उन अति महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन किया है जो की परीक्षा की दृष्टि से नज़रअंदाज करने योग्य नहीं है। इन नोट्स को मन से पढ़े और याद कर ले ताकि आपको परीक्षा में सफल होने से यह विषय रोक ना सके।

TYPING WAY

भारत का इतिहास - अध्याय 1

(इतिहास का परिचय व सिंधुघाटी सभ्यता)

इतिहास शब्द की रचना :: इतिहास = **इति** + **ह** + **आस**

इतिहास में निम्न लिखित घटनाओ को सम्मिलित किया जाता हे

1 जो मानव जीवन को प्रभावित करे या भौगोलिक जीवन को प्रभावित करे।

2 जिसमे क्रमबद्धता हो।

3 जिसके साक्ष्य मौजूद हो, जो तीन प्रकार के होते हे -

- **पुरातात्विक साक्ष्य** - जैसे अभिलेख (शिलालेख स्तम्भलेख गुहाभिलेख)
- **साहित्यिक साक्ष्य** - धार्मिक साहित्य व धर्मेतर साहित्य
- **विदेशी विवरण** - विदेशी यात्रियों या व्यक्तियों के द्वारा तत्कालीन भारतीय समाज व राजनीती के उप्पर दिया गया विवरण जैसे - मगस्थनीज की इंडिका , फाहियान की फ़ो-को-की , व्हेनसांग की सी-यू-की

इतिहास की 4 परिभाषाए

- अतीत की घटनाओ का अध्ययन।
- अतीत की घटनाओ का क्रमबद्ध अध्ययन।
- अतीत की घटनाओ का क्रमबद्ध अध्ययन जिसके साक्ष्य मौजूद हो।
- अतीत की घटनाओ का वर्त्तमान की घटनाओ के साथ क्रमबद्ध अध्ययन जिसके साक्ष्य मौजूद हो।

इतिहास का वर्गीकरण

इतिहास को हम निम्नलिखित 3 भागो में विभाजित कर सकते है ।

1 प्रागैतिहास - ज्ञात इतिहास से पूर्व का इतिहास या वह काल जिसके लिखित साक्ष्य मौजूद नहीं हे अर्थात किसी भी लिपि का उध्दरण नहीं हे केवल पुरातात्विक साक्ष्य ही मिलते है।
2 आद्य इतिहास - वह काल जिसके लिखिहित साक्ष्य तो मौजूद है परन्तु अब तक उन्हें पढ़ा नहीं जा सका है ।
3 इतिहास / आधुनिक / वर्त्तमान इतिहास- वह काल जिसके लिखित साक्ष्य मौजूद है और उन्हें पढ़ा जा चूका है।
NOTE: 1842 में कर्नाटक के रायचूर जिले के लिंगसुगर नामक गाँव से कुछ पाषाण कालीन औजार प्राप्त किये गए हे इसी आधार पर प्रागैतिहासिक काल को निम्नलिखित रूप में विभाजित कर दिया गया।

1 प्रागैतिहास पाषाण काल (पत्थरो का युग)

प्राप्त औजारों की बनावट के आधार पर पाषाण काल को तीन भागो में विभाजित किया गया पुरापाषाण, मध्यपाषाण व नवपाषाण काल। तीनो का विस्तार निम्न लिखित है -

पुरापाषाण काल -

इस काल में आदिमानव की उत्पत्ति मानी जाती हे।

इस काल के दौरान आदिमानव की स्तिथि दयनीय थी तथा वह घुम्मकड़ जीवन व्यतीत करता था

इस काल में आदिमानव केवल शिकार करता था। शिकार करने हेतु उसने पत्थर से औजार बनाने प्रारम्भ किये

*अदिमानव ने सर्व प्रथम हस्तकुठार (hand exe) का निर्माण किया जो की अदि मानव का प्रथम औजार माना जाता है.

मध्यपाषाण काल -

इस काल के दौरान आदिमानव ने समूह में रहना प्रारम्भ किया तथा पशुपालन भी प्रारम्भ कर दिया

सर्वप्रथम उसने कुत्ते को अपना पालतू जानवर बनाया

इस काल के औजारों का आकर छोटा था जिन्हे सूक्ष्मपाषाण (macroliths) कहा जाता था

इस काल में अदिमानव की स्तिथि यायावर थी तथा शिकार ही करता था।

नवपाषाण काल -

इस काल के दौरान आदिमानव ने आग का आविष्कार किया

इसी काल में आदिमानव ने स्थायी बसावट प्रारम्भ की तथा कृषि करना भी प्रारम्भ किया।

पहिये का आविष्कार सबसे क्रन्तिकारी आविष्कार माना जाता है।

आदिमानव ने सर्वप्रथम ताम्बा धातु का प्रयोग किया तथा अनाज के भण्डारण हेतु उसने मृदभांडों का निर्माण किया

NOTE: नवपाषाण काल में आदिमानव उपभोक्ता के साथ साथ उत्पादक भी बन गया तथा वह खाद्य संग्राहक के रूप में विक्सित हुआ

NOTE: मध्यपाषाण काल को भारतीय इतिहास का संक्रमणकालीन चरण कहा जाता है।

2 आद्यइतिहास काल

वह काल जिसके लिखित साक्ष्य तो मौजूद है परन्तु अब तक उन्हें पढ़ा नहीं जा सका है। आद्यइतिहास काल में हम विशेष रूप से सिंधु सभ्यता और वैदिक सभ्यता का अध्ययन करते है। इस अध्याय में हम सिंधु घाटी सभ्यता के बारे मे जानेंगे। आद्यइतिहास काल का दूसरा चरण जो की वैदिक काल है उसे हम अगले अध्याय में पढ़ेंगे।

~सिंधु घाटी सभ्यता~

लिपि - ब्रुस्टोफेदन / सर्पिलाकार / गौमुत्री / भाव चित्रात्मक - इसमें 64 मूल चिन्ह है और सर्वाधिक अक्षर U आकर के मिले है । यह लिपि दाएं से बाएं और बाएं से दाएं (सर्पिलाकार) लिखी जाती थी। इस लिपि को **विष्व में** सबसे पहले पढ़ने का प्रयास **वेडेन महोदय** ने किया था लेकिन असफल रहे। इस लिपि को **भारत में** सबसे पहले पढ़ने का प्रयास श्री **नटराज** जी ने किया था लेकिन असफल रहे।

सिंधु सभ्यता का अतीत

अब तक संसार में निम्नलिखित चार सभ्यताए हुई है।

1 – मेसोपोटामिया की सभ्यता- **दजला व फरात नदी**

2 – मिश्र की सभ्यता- **निल नदी**

3 - सिंधु सभ्यता - **सिंधु नदी**

4 - चीन की सभ्यता- **व्हांग हो नदी**

नामकरण - इस सभ्यता हेतु तीन नाम प्रयुक्त किये जाते हे:

1 सिंधु सभ्यता : यह नाम सर्वप्रथम John Marshal के द्वारा दिया गया जो की इस सभ्यता के निर्देशक भी थे।
2 सिंधु घाटी सभ्यता : यह नाम डॉ.रफ़ीक़ मुघल द्वारा दिया गाया ।
3 हड़ुपा :यहाँ इसका वर्तमान में प्रचलित नाम है जो की इसके प्रथम उत्खनित क्षेत्र के आधार पर रखा गया।

सिंधु घाटी सभ्यता का विस्तार:

इस सभ्यता का विस्तार 3 देशो में मिलता है - भारत, पाकिस्तान व अफगानिस्तान

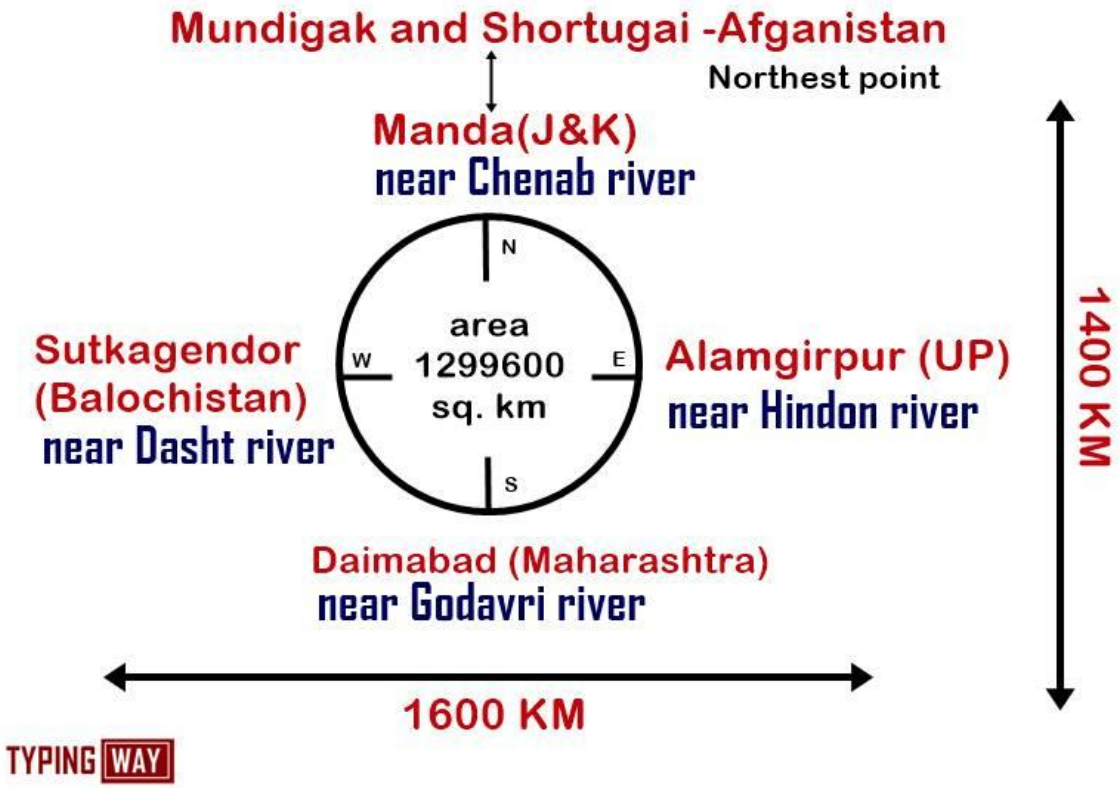

सिंधु घाटी सभ्यता के क्षेत्र और उनके पुरास्थल:

1 अफगानिस्तान – मुंडीगाक & शोर्तगोई (यह सिंधु घाटी सभ्यता के सबसे उत्तरतम बिंदु है)
2 बलोचिस्तान - मेहरगढ़, राणाघुड़ई, सुत्कांगेडोर, सुतकाकोह, क्वेटा घाटी, कुल्ला-कुल्ली, डाबरकोट
3 सिंध (पाकिस्तान) -अलीमुराद, मोहन-जो-दड़ो, आमरी, कोटदीजी, चन्हुदडो
4 पंजाब (पाकिस्तान) - रहमान ढेरी, ज़लीलपुर, हड्डपा, डेरा इस्माइल खान
5 पंजाब (भारत) - रोपड़, संघोल, चक-86, बाड़ा
6 हरियाणा - कुनाल, राखीगढ़ी, मित्ताथल, बनावली, भर्राना
7 राजस्थान - बालाथल, कालीबंगा
8 उत्तर प्रदेश - आलमगीरपुर, बड़ागांव, हुलास
9 गुजरात - लोथल, धोलावीरा, रंगपुर, रोजड़ी, देशलपुर, भगतराव, सुरकोटडा

सिंधु घाटी सभ्यता का काल -

1 - मार्शल के अनुसार :- 3250 ई. पू. - 2750 ई. पू.

2 - C-14 के अनुसार :- 2350 ई. पू. - 1750 ई. पू.

3 - डॉ. रोमिला थापर और डी. पि. अग्रवाल के अनुसार :- 2350 ई. पू. - 1750 ई. पू.

सिंधु घाटी सभ्यता की प्रजातियाँ:

सैन्धव सभ्यता भारत की प्रथम नगरीय सभ्यता मानी जाती है। यहाँ कांस्य युगीन सभ्यता थी। इस सभ्यता में निम्न लिखित 4 प्रकार की प्रजातियां पायी जाती थी।

1. प्रोटो ऑस्ट्रेलियाइड
2. अल्पाइन
3. मंगोलियन
4. भूमध्य सागरीय (द्रविड़) | सर्वाधिक साक्ष्य इन्ही लोगो के प्राप्त हुए है | इन्हे सिंधु सभ्यता के निर्माता भी कहा जाता है

सिंधु घाटी सभ्यता के स्थल

अब हम सैंधव सभ्यता के कुछ प्रमुख स्थलों की विशेष बातो का अध्यन करेंगे जो परीक्षा उपयोगी है। इन स्थलों के बारे में आप अच्छे से समज लीजिये और याद कर लीजिये-

1 हड़ुपा नगर

हड़ुपा के बारे में सर्वप्रथम जानकारी 1826 में चार्ल्स मेसन के द्वारा दी गयी। उसने अपने लेख में लिखा की भारत में एक हड़ुपा नामक प्राचीनतम नगर है।

1856 में कराची से लाहौर रेलवे लाइन बिछाते समय जॉन बर्टन व विलियम बर्टन के आदेश से हड़ुपा के टीले से कुछ ईटे निकाली गइ जिससे यहाँ छुपी हुई सभ्यता लोगो के सामने आयी।

- खोज :- दयाराम साहनी
- समय :- 1921
- स्थान :- पंजाब -मोंटगोमरी (वर्तमान नाम शाहीवाल)
- नदी :- रावी नदी के बाये तट पर
- उत्खनन :- 1926 में - माधोस्वरूप वत्स और 1946 में मार्टिन व्हीलर

यह नगर 2 भागो में विभाजित था -

1 - दुर्ग टीला (पश्चिमी टीला)

2 - नगर टीला (पूर्वी टीला)

* दुर्ग टीले को मार्टिन व्हीलर ने माउंट AB कहा है।

हड़ुपा से निम्न लिखित चीज़े प्राप्त होती है -

6-6 की पंक्तियों में दो अन्नागार है। इस अन्नागार से गेहू व जौ के साक्ष्य मिलते है। दुर्ग टीले में श्रमिक आवास, मजदुर बैरक व प्रशासनिक वर्ग के लोगो के लिए भवन के साक्ष्य भी प्राप्त होते है।

हड़ुपा का नगर नियोजन:

हड़ुपा के नगर दो भागो में विभाजित थे लकिन धोलावीरा एक मात्र ऐसा स्थल है जो की 3 भागो में विभाजित था।

दुर्ग टीले में अन्नागार बने हुए होते थे। हड़ुपा से प्राप्त अन्नागार सम्पूर्ण सैंधव सभ्यता की दूसरी सबसे बड़ी ईमारत है। (प्रथम सबसे बड़ी ईमारत लोथल का गोड़ीवाड़ा (बंदरगाह) है) ।

हड़ुपा नगर की सड़के एक दूसरे को समकोण पे काटती थी जिसे ऑक्सफ़ोर्ड सर्कस पद्दति या ग्रिड पैटर्न कहा जाता है। नगर का मुख्य प्रवेश द्वार पूर्व दिशा की और होता था, जबकि मुख्य सड़क **उत्तर से दक्षिण** की और बानी हुई होती थी। यह मिटटी से निर्मित तथा 9 से 10 मीटर चौड़ी होती थी । नगर के घरो के दरवाजे एक दूसरे के आमने सामने गलियों में खुलते थे।

नगर टीले के दक्षिणी भाग में कब्रिस्तान बने हुए होते थे। हड़ुपा से दो प्रकार के कब्रिस्तान के साक्ष्य मिलते है जिन्हे क्रमशः कब्रिस्तान H व R-37 कहा गया है।

NOTE: लोथल एक मात्र ऐसा स्थल था जिसके घरो के दरवाजे मुख्य सड़क की और खुलते थे।

अन्य अवशेष :

- स्त्री के गर्भ से निकलते हुए पौधे की मृण मूर्ति जिसे हड़ुपा वासियो ने उर्वरकता देवी या पृथ्वी देवी कहा है।
- हड़ुपा से मानव के साथ बकरे के शवदान के साक्ष्य प्राप्त होते है।
- यहाँ से प्रसाधन मञ्जूषा व काँसे का दर्पण भी प्राप्त हुआ है।
- सर्वाधिक अभिलेख युक्त मोहरे हड़ुपा से जब की सर्वाधिक मोहरे मोहन-जो-दड़ो से मिली है।
- हड़ुपा से प्राप्त मोहोरे सेलखड़ी (steatite) से निर्मित थी जिन पर एक श्रृंगी बेल या हिरण , कूबड़दार बैल व पशुपतिनाथ का अंकन मिलता है।

2 मोहन-जो-दड़ो

मोहन-जो-दड़ो की **खोज 1922** में **राखल दास बनर्जी** के द्वारा की गयी थी यह **सिंध प्रान्त** के लरकाना जिले में स्थित है। मोहन-जो-दड़ो का **शाब्दिक अर्थ मृतकों का टीला** होता है। मोहन-जो-दड़ो की **सबसे बड़ी सार्वजनिक ईमारत** यहाँ से प्राप्त **स्नानागार है** जिसका धार्मिक महत्व था। **जान मार्शल** ने इसे तत्कालीन विश्व का **आस्चर्यजनक निर्माण** कहा है तथा इसे विराट वास्तु (**ग्रेट बाथ**) की संज्ञा दी है।

अन्य प्राप्त अवशेष :

- काँसे की नृत्यरत नारी की मूर्ति
- मंगोलियन पुजारी का सिर
- महाविद्यालय भवन के अवशेष
- हथी का कपालखण्ड
- घोड़े के दाँत
- ऊनि वस्त्र

NOTE: पशुपतिनाथ की मुद्रा जिसमे एक तीन मुख वाले देवता का अंकन किया गया है। जिसके चारो और हथी, भैसा, व्याघ्र, व बैल का अंकन मिलता है जिसे मार्शल महोदय ने आध्यतम शिव की संज्ञा दी है। Stuart Piggott ने मोहन-जो-दड़ो व हड़प्पा को किसी विशाल साम्राज्य की **जुड़वाँ राजधानी** कहा है।

3 चन्हुदडो:

यह भी सिंध प्रान्त में स्थित था जिसकी खोज 1931 में N. G. मजूमदार के द्वारा की गयी।

इसका उत्खनन 1935 में अर्नेस्ट मेके के द्वारा किया गया।

चन्हुदडो एक औद्योगिक नगर था। यहाँ से मनके बनाने का कारखाना, पीतल की इक्का गाड़ी , श्याही की दावत, हथी व गुड़िया का खिलौना, लिपिस्टिक के साक्ष्य, बिल्ली के पीछे भागते हुए कुत्ते के पदचिन्ह के साक्ष्य प्राप्त होते है। यहाँ से किसी भी प्रकार के दुर्ग के साक्ष्य नहीं मिले है।

4 लोथल – गुजरात :

यह भोगवा नदी के किनारे स्थित है जिसकी खोज 1953-54 में रंगनाथ राव के द्वारा की गयी यहाँ से चावल व बाजरे के प्रथम साक्ष्य और चक्की के दो पाट के साक्ष्य मिलते है।

यह एक औद्योगिक नगर था, जहा से मनके बनाने का कारखाना भी प्राप्त हुआ है।

यहाँ से बाट माप तोल पैमाना व हाथीदाँत पैमाना भी प्राप्त होता है।

लोथल का गोड़ीवाड़ा या बंदरगाह (dockyard) सम्पूर्ण सैंधव सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल मन जाता है।

लोथल से खोपड़ी की शैल्य चिकित्सा, तीन युगल शवादन, कौआ व लोमड़ी के साक्ष्य भी मिलते है।

लोथल से हवन कुंड या अग्नि कुंड के साक्ष्य भी मिलते है।

5 कालीबंगा राजस्थान :-

कालीबंगा राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में घग्घर(प्राचीन सरस्वती) नदी के किनारे स्थित है, जिसकी खोज 1951-52 में अमलानंद घोष के द्वारा की गइ। कालीबंगा का शाब्दिक अर्थ काली चुड़िया होता है। कालीबंगा का उत्खनन 1961 से 1969 के दौरान B. B. Lal व B. K. Thapar के द्वारा किया गया।

यहाँ से ऊट के साक्ष्य, मिटटी से बना हुआ हल व जुते हुए खेत के साक्ष्य प्राप्त हुआ है। **IMPORTANT:** पूरी सैंधव सभ्यता में लकड़ी से बना हुआ हल अभी तक कही से भी नहीं मिला है
कालीबंगा के लोग एक साथ दो फसल उगते थे अर्थात मिश्रित खेती के साक्ष्य मिलते है। कालीबंगा के प्रत्येक तीसरे घर से कुए के साक्ष्य मिलते है। कालीबंगा से कच्ची ईटो से निर्मित मकान के साक्ष्य मिले है अतः इसे दीनहीन की बस्ती कहा जाता था

सम्पूर्ण सैंधव सभ्यता में सर्वप्रथम खोपड़ी की शैल्य चिकित्सा के साक्ष्य कालीबंगा से ही प्राप्त होते है।

कालीबंगा में तीन प्रकार के शवदान के साक्ष्य प्राप्त होते है-

- 1 आंशिक शवदान
- 2 पूर्ण शवदान
- 3 दाह संस्कार

कालीबंगा से प्रथम भूकंप के साक्ष्य मिलते है, जो की लगभग 2100 इसा पूर्व के आस पास आया होगा।

यहाँ से अलंकृत फर्श व ईट के साक्ष्य मिलते है । सम्पूर्ण सैंधव सभ्यता में यह एक मात्रा ऐसा स्थल था जहा से बेलनाकार मोहरे प्राप्त हुई है। इस प्रकार की मोहरे मेसोपोटामिया में प्रचलित थी अतः विद्वानों के अनुसार कालीबंगा व मेसोपोटामिया के बिच व्यापारिक सम्बन्ध रहे होंगे

यहाँ से हवन कुंड के साक्ष्य भी मिलते है। लकड़ी की नालियों के साक्ष्य भी एकमात्र कालीबंगा से ही मिले है
IMPORTANT

6 बनावली या वनवाली -

यह हरियाणा में प्राचीन सरवस्ती नदी के किनारे स्थित है, जिसकी खोज 1973-74 में R. S. Bisht ने की। यहाँ से उत्तम किस्म की जौ, तिल, सरसों व चावल की खेती के साक्ष्य मिलते है। मिटटी से बना हुआ हल भी प्राप्त हुआ है। मिट्टी से बने हुए बर्तन, ताम्बे के बाणाग्र, मातृ देवी की मृण मूर्ति, तथा एक मोहर के साक्ष्य भी प्राप्त हुए है।

NOTE : यह सम्पूर्ण सैंधव सभ्यता का एकमात्र ऐसा स्थल है जहा नालियों का आभाव पाया गया है।

7 सुरकोटड़ा -

यह गुजरात के कच्छ के राण में स्थित है जिसकी खोज 1964 में जगपति जोशी के द्वारा की गयी। सुरकोटड़ा एक मात्र ऐसा स्थल है जहा से सिंधु सभ्यता के पतन या विनाश के साक्ष्य मिलते है।

सैंधव सभ्यता का पतन नगर - सुरकोटड़ा

सैंधव सभ्यता का पातन / पत्तन नगर - लोथल

यहाँ से तराज़ू के दो पलड़े के साक्ष्य भी मिलते है

यहाँ से खुदाई के अंतिम चरण में घोड़े की अस्थिओं के साक्ष्य मिले है

8 धोलावीरा -

धोलावीरा गुजरात में स्थित है तथा मानसर व मनहर नदियों के बिच में स्थित है इसकी खोज 1967-68 मै जगपति जोशी के द्वारा की गयी। धोलावीरा से विश्व के प्राचीनतम स्टेडियम के साक्ष्य प्राप्त होते है। तथा यहाँ से एक सुचना पट्ट भी प्राप्त हुआ है जिसपर सैंधव लिपि अंकित थी

धोलावीरा से नहर व जल संरक्षण के साक्ष्य भी प्राप्त होते है।

**भारत में खोजे गए स्थलों में धोलावीरा सबसे बड़ा नगर है, यह तीन भागो में विभाजित था

1 दुर्ग टीला

2 मध्यमा

3 नगर टीला

NOTE: सम्पूर्ण सैंधव सभ्यता में, सबसे बड़े नगरों के रूप में क्रमशः मोहन-जो-दड़ो > हड़ुपा > गनेड़ीवाल > धोलावीरा > राखीगढ़ी ।

जबकि क्षेत्रफल की द्रष्टि से सबसे बड़े नगर क्रमशः गनेड़ीवाल > हड़ुपा > मोहन-जो-दड़ो > धोलावीरा > राखीगढ़ी ।

धोलावीरा व राखीगढ़ी को राजधानी के रूप में माना गया जबकि डॉ दशरथ शर्मा ने कालीबंगा को सैंधव सभ्यता की तीसरी राजधानी बताया है ।

9 रोपड़ -

यह पंजाब में सतलज नदी के किनारे स्थित है। जिसकी खोज 1950 में B.B. Lal के द्वारा की गई जब की इसका व्यापक रूप से उत्खनन 1955-56 के दौरान यज्ञदत्त शर्मा के द्वारा करवाया गया।

रोपड़ से मानव के साथ कुत्ते के शवदान के साक्ष्य प्राप्त होते है।

NOTE: इस प्रकार के प्राचीनतम साक्ष्य नव पाषाणिक स्थल बुर्जहोम से मिलते है। बुर्जहोम में लोग गर्तावास में निवास करते थे।

10 राखीगढ़ी -

यह हरियाणा के हिसार जिले में स्थित है। इसकी खोज डॉ रफीक मुग़ल के द्वारा की गयी। जबकि इसका उत्खनन 1997-98 के दौरान अम्रेन्द्रनाथ के द्वारा करवाया गया। राखीगढ़ी से मातृ देवी अंकित एक लघु मोहर प्राप्त हुई है।

सिंधु घाटी सभ्यता के अन्य महत्वपूर्ण तथ्य :

*हरियाणा के कुणाल से चांदी के दो मुकुट प्राप्त होते है

*स्वतंत्र भारत में सर्वप्रथम 1947 में रंगपुर की खोज की गयी जबकि सर्वप्रथम उत्खनन रोपड़ का किया गया

* हाल ही में हरियाणा के भर्राना नामक स्थान से स्वर्ण आभूषण प्राप्त हुए है

* विश्व के प्रथम ज्वारीय बंदरगाह का निर्माण लोथल के वास्तुकारों के द्वारा किया गया।

* हरियाणा के नाल नामक स्थान से कपास की खेती के साक्ष्य मिले है

NOTE : सैंधव सभ्यता में सर्व प्रथम कपास की खेती करने का श्रेय यूनानियों को जाता है। जिसे इन्होने सिन्डन नाम दिया।

सिंधु घाटी सभ्यता के नगर - नदी युग्म

- मोहन-जो-दड़ो,चन्हुदडो, कोटदीजी - **सिंधु नदी**
- हड़ुपा - **रावी नदी**
- रंगपुर, रोजदी - **मादर नदी**
- कालीबंगा, बनावली - **प्राचीन सरस्वती नदी**
- रोपड़, बाड़ा - **सतलज नदी**
- लोथल - **भोगवा नदी**
- मंडा - **चेनाब नदी**
- आलमगीरपुर - **हिण्डन नदी**
- दैमाबाद - **प्रवरा नदी**

सिंधु घाटी सभ्यता के धातु - स्थल युग्म

- सोना : कर्नाटक, फारस, ईरान
- चांदी : बलोचिस्तान, फारस, अफगानिस्तान
- ताम्बा : खेतड़ी, फारस
- सेलखड़ी : राजस्थान, गुजरात, बलोचिस्तान
- नील रत्न : बदख्शा (अफगानिस्तान)

सिंधु घाटी सभ्यता की देन

1. मातृदेवी की उपासना : सम्पूर्ण सैंधव सभ्यता में मातृदेवी की मृण्मूर्तिया प्राप्त हुई है। आग में पकी हुई मृदभांडों को टेराकोटा कहा जाता है।
2. मातृ सत्तात्मक परिवार सैंधव सभ्यता की देन है
3. पशुपतिनाथ की पूजा जिसे मार्शल ने आध्यतम शिव कहा इसी मोहोर पर भारतीय चित्रकला के प्रथम साक्ष्य मिले है।**भारतीय चित्रकला के प्राचीनतम साक्ष्य भीमबेटका से प्राप्त हुए है। **
4. लिंग व योनि की पूजा, सवस्तिक का चिन्ह, सूर्य उपासना सैंधव सभ्यता की देन है।
5. सर्वप्रथम चाक का प्रयोग सैंधव सभ्यता में किया गया है। इस काल के दौरान लाल व काले रंग के मृदभांड बनाये गए।
6. सैंधव सभ्यता के लोग तलवार, गाय व घोड़े से परिचित नहीं थे। यहा से किसी भी प्रकार के वर्ग संघर्ष के साक्ष्य नहीं मिलते है
7. सैंधव सभ्यता के किसी भी स्थान से मंदिर के साक्ष्य नहीं मिले है।
8. चावल के प्राचीनतम साक्ष्य कोल्डिहवा से प्राप्त हुए है। चावल के प्रथम साक्ष्य - लोथल। जले हुए चावल के साक्ष्य - कालीबंगा

CURRENT:

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने केंद्रीय बजट 2020 में पांच पुरातात्विक स्थलों के विकास का ऐलान किया है जो निम्नलिखित है :-

1 हरियाणा का राखीगढ़ी

2 महाभारत काल का हस्तिनापुर (उत्तर प्रदेश)

3 शिवसागर (असम)

4 धोलावीरा (गुजरात)

5 आदिचनल्लूर (तमिलनाडु)

इस अध्याय में हमने सिंधु घाटी सभ्यता के बारे मे जाना। आद्यइतिहास काल का दूसरा चरण जो की वैदिक काल है उसे हम अगले अध्याय में पढ़ेंगे।

भारत का इतिहास - अध्याय 2

(वैदिक सभ्यता - ऋग्वैदिक व उत्तरवैदिक काल)

सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के बाद भारत में एक नयी सभ्यता का जन्म हुआ जिसका उल्लेख वेदो में मिलने के कारण इसे वैदिक सभ्यता कहा गया। यह भारत की प्रथम ग्रामीण सभ्यता मानी जाती है।

वैदिक सभ्यता के संस्थापकों को वेदो में आर्य कहा गया है। आर्य संस्कृत भाषा के अरि + य शब्द से मिल के बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ - सुसंस्कृत या श्रेष्ठ या उच्च कुल में उत्पन्न व्यक्ति होता है।

आर्य नार्डिक शाखा की सफ़ेद उपजाति से सम्बंधित मानव समूह को कहा गया है। आर्यो के मूल स्थानों को लेकर अलग अलग विद्वानों ने अलग अलग मत दिए है जो की निम्न लिखित है

1 बाल गंगाधर तिलक - उत्तरी ध्रुव ।

2 दयानन्द सरस्वती - तिब्बत ।

3 मैक्स मुलर - मध्य एशिया - इसे सबसे प्रामाणिक मत माना जाता है।

बोगाजकोई अभिलेख - 1400 ई. पु. के आस पास एशिया माइनर से प्राप्त हुआ इस अभिलेख की भाषा इंडो-ईरानी है। खोज 1907 में ह्यूगो के द्वारा की गई इस अभिलेख में चार ऋगवेदिक आर्य देवताओ का उल्लेख मिलता हे - इंद्र, वरुण, मित्र और नास्त्य इस अभिलेख से हमे सर्वप्रथम लोहकालीन सभ्यता की जानकारी मिलती है।

वैदिक सभ्यता - 1500 ई. पू से 600 ई. पु.

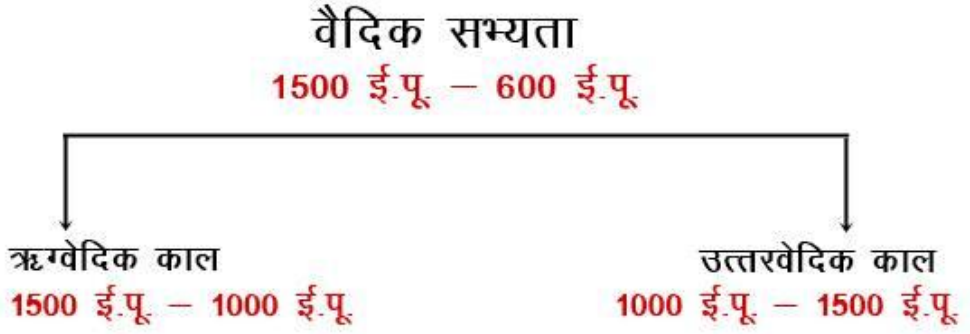

ऋग्वेदिक काल 1500 ई. पू - 1000 ई. पू

इस काल के दौरान आदिमानव के जीवन का प्रथम ग्रन्थ ऋग्वेद लिखा गया अतः इस काल को ऋग्वेदिक काल कहा गया

वैदिक साहित्य के रचियता - अपौरुषेय

वैदिक साहित्य के संकलनकर्ता - महर्षि कृष्ण द्वैपायन व्यास

ऋग्वेदिक काल मे वदो की संख्या -4

1. **ऋग्वेद** - इसमें श्लोक है जिससे देवताओ की स्तुति की गई है। ऋग्वेद को मानव जाती का प्रथम ग्रन्थ माना जाता है। इस वेद में कुल 10552 श्लोक 10 मंडल व 1028 सूक्त है। असतो मा सदगमय का उल्लेख व गायत्री मंत्र का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। गायत्री मंत्र सविता नमक देवता को समर्पित है।

2. **यजुर्वेद** - इसमें यज्ञ हवन व कर्म कांड से सम्बंधित चीज़ो का उल्लेख है। यह वेद गद्य व पद्य दोनों में मिलता है अतः इसे चम्पू काव्य कहा जाता है। यजुर्वेद की दो शाखाए है - कृष्ण व शुक्ल।

3. **सामवेद** - सामवेद को भारतीय संगीत का जनक कहा जाता है। सबसे कम महत्व इसी वेद का माना जाता है

4. **अथर्ववेद** - इस वेद में जादू टोना टोटका से सम्बंधित क्रियाओ का उल्लेख मिलता हे। अतः इस वेद को लोकप्रिय धर्म प्रतिनिधित्व साबित करने वाला ग्रन्थ कहा गया है।

NOTE: ऋग्वेद यजुर्वेद और सामवेद को सम्मिलित रूप से वेदत्रेय कहा जाता है। जबकि यजुर्वेद सामवेद और अथर्ववेद उत्तरवैदिक काल की रचनाये है। सबसे नवीनतम वेद अथर्व को माना गया है।

वदो के अन्य महत्वपूर्ण तथ्य :

आरण्यक : वानप्रस्थ आश्रम के दौरान लिखे गए ग्रंथो को आरण्यक कहते हे। इसका शाब्दिक अर्थ वन होता है।

ब्राम्हण : वेदो की विशेष रूप से व्याख्या करने वाले ग्रंथो को ब्राम्हण कहा जाता है।

उपनिषद : इसका शाब्दिक अर्थ गुरु के साथ ध्यान पूर्वक बैठना होता है। कुल उपनिषदो की संख्या 108 मानी गयी है जिनमे से 12 उपनिषदों को मुख्या माना जाता है। सत्यमेव जयते - मुंडकोपनिषद से लिया गया है। जबकि हाल ही में लोकपाल बिल का प्रमुख वाक्य ईशोपनिषद से लिया गया है। उपनिषदों को वेदांत भी कहा जाता है।

ऋग्वेद में 25 नदियों का उल्लेख मिलता है , जबकि सम्पूर्ण वेदो में कुल 31 नदियों का उल्लेख मिलता है।

आर्यो की सबसे महत्वपूर्ण नदी सिंधु नदी थी वह इस नदी के आसपास आकर बसे अतः उनके इस स्थान को सैंधव प्रदेश कहा गया।आर्य सिंधु और उसकी सहायक नदियों के क्षेत्र में आकर बेस अतः इस सम्पूर्ण क्षैत्र को सप्त सैंधव प्रदेश कहा गया यूनानियों ने इसे हिंदुस्तान नाम दिया आर्यो की दूसरी सबसे महत्वपूर्ण नदी सरस्वती नदी थी जिसे नदीत्तमा कहा गया है

आर्यो की सबसे महत्वपूर्ण जनजाति भरत थी इसी आधार पर आगे चल कर हमारे देश का नाम भारत पड़ा। आर्यो का स्थान होने के कारण परवर्ती ग्रंथो में भारत को आर्यवृत्त कहा गया है।

दाशराज्ञ युद्ध : भारत राजा सुदास व दस जानो के बिच रावी नदी (पुरूषणी) के किनारे युद्ध लड़ा गया। जिसे दाशराज्ञ युद्ध कहा जाता हे। इस युद्ध में भरत राजा सुदास विजयी रहे। यहाँ त्रित्सु वंश से सम्बंधित राजा थे।

ऋग्वेदिक काल का सामाजिक जीवन

परिवार पितृसत्तात्मक था मुख्या को गृहपति कहा जाता था।

खान पान सामान्य था - दुग्ध से निर्मित वस्तुओ का प्रयोग होता था। मीठे हेतु शहद का प्रयोग होता था। मांस मछली खाने से घृणा करते थे। गाय को न मरने योग्य कहा गया है। प्रमुख पेय पदार्थ के रूप में सोमरस का प्रयोग करते थे, जिसका उल्लेख ऋग्वेद के 9 वे मंडल में मिलता है।

NOTE : गाय वस्तु विनिमय का साधन था अर्थात गाय धन के रूप में कार्य करता था।

ऋग्वेदिक काल का पहनावा

निवि - शरीर के निचले भाग को ढकने हेतु प्रयुक्त वस्त्र को निवि कहते थे

आधीवास - शरीर के ऊपरी भाग को ढकने हेतु प्रयुक्त वस्त्र को अधिवास कहते थे

अंतक - उन से बना हुआ वस्त्र

उष्णीय - पगड़ी को उष्णीय कहा जाता था

क्षोम - धनि वर्ग के द्वारा पहना जाने वाला विशेष वस्त्र।

ऋग्वेदिक काल में स्त्रियों की स्तिथि

स्त्रियों की स्तिथि सम्मानजनक थी उन्हें पुरुषो के सामान अधिकार प्राप्त थे जैसे। उपनयन व समावर्तन संस्कार। कई विदुषी महिलाओं के सश्त्रार्थ करने का उल्लेख मिलता है जैसे लोपामुद्रा, घोषा, श्रद्धा, अपाला, चंपा, विश्वश्वरा।

महिलाओ को विधवा विवाह, पुनर्विवाह, करने का अधिकार प्राप्त था, उन्हें नियोग करने की अनुमति भी प्राप्त थी। विवाह हेतु 16 या 17 वर्ष की आयु निर्धारित थी। 16 वर्ष तक आश्रम में रह कर अध्यन करने वाली व उसके बाद ग्रहस्त आश्रम में प्रवेश करने वाली महिला को सद्योवधु कहा जाता था, जब की आजीवन ब्रम्हचर्य का पालन करने वाली महिला को ब्रम्हवादिनी कहा जाता था।

जब की आजीवन अविवाहित रहने वाली महिला को अमाजू कहा था

ऋग्वेदिक काल में आश्रम व्यवस्था

सम्पूर्ण मानव जीवन को 100 वर्ष का मानते हुए इसे चार बराबर आश्रमों में विभाजित कर दिया गया।

1. **ब्रम्हचर्य आश्रम (0 - 25 वर्ष) :** इस आश्रम का प्रारम्भ उपनयन संस्कार के द्वारा जब की समापन समावर्तन संस्कार के द्वारा होता था।
2. **गृहस्त आश्रम (25 - 50 वर्ष) :** इसे संसार की रीढ़ की हड्डी कहा गया हे।
3. **वनपरस्त आश्रम (50-75 वर्ष) :** इस आश्रम के दौरान मानव पूर्ण रूप से मोह माया बंधनो से मुक्त नहीं हो पता।
4. **सन्यास आश्रम (75 -100 वर्ष) :** पूर्ण रूप से मोह माया बंधनो से मुक्त

NOTE इन चारो आश्रमों का उल्लेख जाबालो उपनिषद में मिलता है।

ऋग्वेदिक काल में वर्ण व्यवस्था :

इसका उल्लेख ऋग्वेद के 10वे मंडल पुरुष सूक्त में है, जहा सम्पूर्ण समाज को 4 वर्णो में विभाजित कर दिया गया। ऋग्वेदिक काल में वर्ण व्यवस्था कर्म पर आधारित थी जबकि उत्तेरवादिक काल मे यह वर्ण व्यवस्था जन्म पर आधारित हो गयी। वर्णो की उत्पत्ति निम्न प्रकार से हुई है।

मुख - ब्राह्मण

भुजा - क्षत्रिय

जंघा - वैश्य

पैर - शूद्र

ऋग्वेदिक काल का धार्मिक जीवन :

ऋग्वेदिक आर्य एकेश्वरवादीवादी थे, वह प्रकृति की पूजा करते थे। देवता तीन प्रकार के - पृथ्वी, धौस(आकाशीय देवता) और वरुण। पृथ्वी व धौस के मिलान से इस सृष्टि का निर्माण हुआ है, तथा इन दोनों के बिच जो कुछ भी है उसमे वरुण का निवास माना गया है। वरुण को दैत्य देवता के रूप में पूजा जाता था।

आर्यो के सबसे प्रमुख देवता के रूप में इंद्रा का उलेख मिलता है। इंद्र को पुरंदर भी कहा जाता था, अर्थार्त किलो को तोड़ने वाला देवता। इसे आंधी तूफान व वर्षा का देवता कहा गया है। ऋग्वेद में सर्वाधिक 250 श्लोक इंद्र के लिए प्रयुक्त होते है।

दूसरे प्रमुख देवता के रूप में अग्नि का उलेख मिलता है। ऋग्वेद में अग्नि के लिए 200 श्लोक मिलते है। कई जगह इसके लिए 220 श्लोको का उलेख भी मिलता है।

विष्णु को संरक्षक के रूप में पूजा जाता था। प्रार्थनाओ का पितामह बृहस्पति को माना गया है। अद्वैतवाद का सिद्धांत शंकराचार्य के द्वारा दिया गया जबकि द्वैतवाद का सिद्धांत मध्वाचार्य के द्वारा दिया गया।

ऋग्वेदिक काल का आर्थिक जीवन :

मुख्या व्यवासय कृषि व पशुपालन था। कृषि उल्लेख ऋग्वेद में ३३३ बार मिलता है। कृषि योग्य भूमि को उर्वरा या क्षेत्र कहा जाता था। भूमि पर सामूहिक अधिकार होता था। बिना जुटी हुई भूमि को खिल्य कहा गया। प्रमुख आनाज के रूप में यव (जौ), ब्रीहि (चावल), गोधूम(गेहू) का उल्लेख मिलता है।

राजा को कर के रूप में उपज का 1/6 भाग दिया जाता था। प्रजा अपनी स्वेच्छा से राजा को कुछ भेट प्रदान करती थी जिसे बलि कहा जाता था।

ऋण लेने पर अत्यदिक ब्याज लेने वाले सूदखोर को बेकनॉट कहा जाता था। व्यापारी हेतु पणी शब्द का उल्लेख मिलता है जो की मूलतः गयो के चोर होते थे।

निष्क नामक स्वर्ण मुद्रा का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेदिक आर्य लोहे से परिचित नहीं थे।

उत्तरवैदिक काल 1500 ई. पू - 1000 ई. पू

उत्तरवैदिक आर्यो का विस्तार गंगा यमुना दोआब क्षैत्र तक हो गया था। इस काल में सभा व समिति का अस्तित्व समाप्त हो गया। सभा को राजा की प्रिवी कौंसिल बना दिया गया। तथा राजा में देवत्व का निवास माना गया अर्थात राजा को देवताओ के प्रतिनिधि के रूप में पूजा गया। राजनैतिक जीवन राजा ने एक सुव्यवस्थित प्रशाशनिक तंत्र की स्थापना की जिसमे राजा की पटरानी से लेकर रथकार तक के लोग शामिल थ, जिन्हे सम्मिलित रूप से रत्निन कहा जाता था।

Important: राजा सहित कुल 12 रत्निन होते थे, जब की राजा के प्रमुख सहयोगियों रूप में 11 रत्निन थे जो की निम्नलिखित थे -

1. पुरोहित - राजा का प्रमुख सलाहकार
2. सेनानी - सेना का प्रमुख अध्यक्ष
3. सूत - राजा का रथवान व युद्ध के समय राजा का उत्साहवर्धन करता था।
4. ग्रामीणी - गांव का मुखिया।
5. संग्रहिता - कोषाध्यक्ष
6. अक्षवाप - पसे विभाग का प्रमुख तथा पसे के खेल में राजा का प्रमुख सहयोगी
7. पलागल - राजा का मित्र और राजा का विदूषक
8. गोविकर्तन - गयो का अध्यक्ष
9. क्षत्रि - राजप्रासाद का प्रमुख रक्षक
10. भागदूध - कर संग्रहिता
11. तक्षण - रथकार
12. महिषि - राजा की पटरानी

NOTE: कई विद्वानों के अनुसार ग्रामिणी व तक्षण को राजकृत अर्थात राजा द्वारा निर्मित बताया गया है। अतः राजा के अलावा अन्य रत्निनों की संख्या 11 ही मानी जाएगी।

- बाबाता - दूसरी सबसे प्रिय रानी।
- परिवृत्ति - उपेक्षित रानी।
- शातिपति - 100 गावो का प्रशाशक
- स्थपति - सीमांत गावो का प्रशाशक जो की मुख्य न्यायाधीश के रूप में भी कार्य करता था।

NOTE: शातिपति + स्थपति - ये दोनों राजा के रत्निनों में सम्मिलित नहीं थे

उत्तरवैदिक काल का सामाजिक जीवन :

सबसे बड़ा परिवर्तन वर्ण व्यस्था में हुआ। समाज पूर्णतः 4 वर्णो में विभाजित हो गया। और वर्ण व्यवस्था जन्म पर आधारित हो गयी।

समाज में दो प्रकार के विवाह प्रचलन में आये:

1 अनुलोम विवाह - उच्च वर्ण के पुरुष के द्वारा निम्न वर्ण की महिला के साथ विवाह

2 प्रतिलोम विवाह - निम्न वर्ण के पुरुष के द्वारा उच्च वर्ण की महिला के साथ विवाह

विवाह 2 चरणो में सम्पादित होता था:

1 पाणीग्रहण संस्कार

2 सप्तपदी

उत्तरवैदिक काल मे स्त्रियों की स्तिथि

उत्तरवैदिक काल में स्त्रियों की स्तिथि दयनीय थी । कन्या के जन्म को कष्ट का सूचक माना जाने लगा। इन कष्टों के निवारण हेतु अनेक प्रकार के यज्ञो का प्रचलन हुआ। जन्म से लेकर मृत्यु तक 16 संस्कार प्रचलन में आये

उत्तरवैदिक काल का धार्मिक जीवन

उत्तरवैदिक काल में धार्मिक जीवन में तर्क का उदय हुआ अतः स्वर्ग व नर्क की अवधारणा का उदय हुआ। देवमंडल की कल्पना की गयी तथा ब्रम्हा विष्णु और महेश की कल्पना भी की गयी।

अनेक प्रकार के यज्ञ प्रचलन में आये जैसे

1. राजसु यज्ञ - राजा के सिंहासन धारण करने के समय किया जाने वाला यज्ञ।
2. वाजपेय यज्ञ - राजा में देविय शक्तियों के आरोपण हेतु किया जाने वाला यज्ञ।
3. किरिरिस्ठ यज्ञ -अकाल के समय वर्षा हेतु किया जाने वाला यज्ञ।
4. पुत्रेष्टि यज्ञ - पुत्र की प्राप्ति हेतु किया जाने वाला यज्ञ।
5. अश्वमेध यज्ञ - राजा के चक्रवर्ती होने हेतु किया जाने वाला यज्ञ। इसमें पत्नी का होना अनिवार्य था।

NOTE : 4 पुरुषार्थो की कल्पना की गई - धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष,

उत्तरवैदिक काल का आर्थिक जीवन :

कृषि व पशुपालन पर आधारित था। उत्तरवैदिक काल के आर्य लोह से परिचित हुए। लोहे को कृष्ण या श्याम अयस कहा गया और ताम्बे को लोहित अयस कहा गया।

मुद्रा के रूप में शतमान, कृष्णल और पाद का उल्लेख मिलता है सबसे प्रचलित शतमान थी जिसका प्रयोग ब्राह्मणो को दक्षिणा देने में किया जाता था।

श्रेणी प्रथा का उल्लेख मिलता है। व्यापारियों हेतु श्रेष्टि गणपति व श्रेणीन शब्दों का उल्लेख मिलता है जबकि इन कबीलो के आगे चलने वाले व्यक्ति के लिए सार्थवाह शब्द का उल्लेख मिला है।

महाजनपद काल हम अगले अध्याय में पढ़ेंगे

भारत का इतिहास - अध्याय 3

(महाजनपद युग का उदय)

महाजनपद युग में 16 महाजनपद थे जिनकी सूचि निम्न है।

क्र. स.	महाजनपद का नाम	महाजनपद की राजधानी	वर्तमान शहर या स्थान जहाँ ये महाजनपद थे
1.	अंग	चम्पा	बिहार के मुंगेर –भागलपुर जिलों का क्षेत्र।
2.	मगध	पाटलिपुत्र	बिहार के गया और पटना जिलों का क्षेत्र।
3.	काशी	वाराणसी	उत्तर प्रदेश के वर्तमान के वाराणसी और उसके आसपास का क्षेत्र।
4.	कौशल	श्रावस्ती	उत्तर प्रदेश के अवध के अयोध्या फैजाबाद का क्षेत्र।
5.	वज्जि	वैशाली	गंगा नदी के उत्तर में नेपाल की पहाड़ियों तक बिहार में वैशाली का क्षेत्र।
6.	मल्ल	कुशीनारा, पावा	बिहार के पटना जिले के पास कुशीनगर एवं पावा क्षेत्र में फैला था एवं उत्तरप्रदेश के गोरखपुर एवं देवरिया जिले में।
7.	चेदि	शक्तिमती	यमुना के किनारे बुन्देल खण्ड एवं झांसी का क्षेत्र।
8.	वत्स	कौशाम्बी	उत्तरप्रदेश में इलाहाबाद का क्षेत्र।
9.	कुरु	इन्द्रप्रस्थ	दिल्ली, मेरठ और गाजियाबाद के आसपास का क्षेत्र ।
10.	पांचाल	अहिच्छत्र, कांम्पिल्य	गंगा–यमुना के मध्य में रुहेलखण्ड, रायपुर–बरेली बदायुँ एवं फर्रुखाबाद जिले।
11.	मत्स्य	विराटनगर	राजस्थान का जयपुर, भरतपुर, और अलवर का क्षेत्र।
12.	शूरसेन	मथुरा	उत्तरप्रदेश के मथुरा, वृन्दावन एवं आसपास का क्षेत्र।
13.	अश्मक	पोतन	दक्षिण में गोदावरी नदी के तट पर फैला दोनों ओर का क्षेत्र।
14.	अवन्ति	उज्जयिनी, महिषमती	मध्यप्रदेश के उज्जैन एवं नर्मदा घाटी का क्षेत्र।
15.	कम्बोज	राजपुर	जम्मू कश्मीर, अफगानिस्तान एवं पाकिस्तान तक फैला था।
16.	गान्धार	तक्षशिला	पूर्वी अफगानिस्तान, जिसमें कश्मीर घाटी एवं तक्षशिला का भू–भाग सम्मिलित है।

मगध महाजनपद :

प्रारम्भ में एक छोटा सा जनपद जो की अपनी राजनैतिक एकता व धर्म के कारण प्रसिद्ध था। यह राज्य वर्त्तमान पटना एवं गया के आसपास का क्षेत्र था। इसकी प्रारम्भिक राजधानी गिरिवज्र थी इसके बाद राजगृह व अंत मे पाटलिपुत्र स्थानांतरित कर दी गयी।

मगध पर शासन करने वाले राजवंश :

- 1 बृहद्रथ (समय ज्ञात नहीं है) - संस्थापक = बृहद्रथ
- 2 हर्यंक (544 ई. पु. - 412 ई. पु.) - संस्थापक = बिंबसार
- 3 शिशुनाग (412 ई. पु. - 344 ई. पु.) - संस्थापक = शिशुनाग
- 4 नन्द (344 ई. पु. - 323 ई. पु.) - संस्थापक = महापद्म नन्द
- 5 मौर्य (323 ई. पु. - 185 ई. पु.) - संस्थापक = चन्द्रगुप्त मौर्य

ब्रहद्रथ राजवंश :

इसका संस्थापक ब्रहद्रथ था। यह मगध पर शासन करने वाला प्रथम राजवंश था। शासको का क्रम - **ब्रहद्रथ > जरासंध > ..अज्ञात.. >रिपूजन्य (अंतिम शाशक)**

ब्रहद्रथ का पुत्र जरासंध जिसने भगवन श्रीकृष्ण के साथ 21 बार युद्ध किया परन्तु अंत में पाण्डुपुत्र भीम के हाथो मरा गया। इस वंश का अंतिम शाशक रिपूजन्य हुआ जिसे उसीके सामंत भट्टिय ने मार डाला और मगध पर एक नए राजवंश हर्यंक वंश की स्थापना की।

हर्यंक राजवंश :

हर्यंक का प्रथम शासक सामंत भट्टीय था परन्तु इस वंश का सबसे प्रतापी शासक व वास्तविक संस्थापक बिम्बिसार को माना जाता है।

बिंबसार (544 से 492 ई.पु.):

मगध का प्रथम शासक जिसने वृहद् मगध साम्राज्य की नीव रखी इसने अपने पडोसी राज्यों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये तथा पहली बार मगध को राजनैतक एकता के सूत्र में बांधने का प्रयास किया।

इसके द्वारा किये गए विवाह क्रमशः काशी राजकुमारी कौशल देवी , वैशाली की राजकुमारी चेल्लना / वपवि , भद्र (पंजाब) की राजकुमारी क्षेमा

अवन्ति नरेश प्रद्योत के पांडुरोग से पीड़ित हो जाने पर अपने राजवैद्य जीवक को भेजा तथा उसे इस रोग से मुक्त करवाया

अज्ञातशत्रु (492 ई.पु. - 460 ई.पु.) :

अज्ञातशत्रु का उपनाम कुणिक था। इसी के शासन काल में प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया।

NOTE: इसी के शासन काल में गौतम बुद्ध, महावीर, व मोखलीपुत्र पुत्र गौसल को निर्वाण की प्राप्ति हुई।

अज्ञातशत्रु ने अपने मंत्री वात्स्कार की सहायता से वैशाली के लिच्छीविओ पर विजय प्राप्त की। उसने लगातार 16 वर्ष तक युद्ध लड़ा । अज्ञातशत्रु ने अपने शासनकाल के अंतिम समय में सोन व गंगा के किनारे एक दुर्ग का निर्माण करवाया। फिर अज्ञातशत्रु को उसके पुत्र उदायिन ने मार डाला और स्वयं शासक बन गया।

NOTE: अज्ञातशत्रु को भारतीय इतिहास का प्रथम पितृहन्ता शासक कहा जाता है जबकि उदायिन को द्वितीय पितृहन्ता माना गया है। भारतीय इतिहास में पहला ऐसा राजवंश था जिसमे सर्वाधिक पितृहन्ता हुए।

उदायिन (459 ई.पु. - 432 ई.पु.) :

इसने पाटलिपुत्र नगर की स्थापना की तथा इसे अपनी राजधानी बनाया।

उदयिन के बाद अनिरुद्ध मुंड व नागदशक शासक बने तथा इन्होने 412 ई.पु. तक शासन किया नागदशक को बनारस के राज्यपाल शिशुनाग ने मार डाला, और शिशुनाग वंश की स्थापना कर स्वयं शासक बना

शिशुनाग राजवंश :

शासको का क्रम - शिशुनाग (412 - 393 ई. पू.) > कालाशोक(393 - 361 ई. पू.) > नन्दिवर्धन + 9 भाई (361 - 344 ई. पू.)

शिशुनाग :

यह राजा बनने से पूर्व बनारस का राज्यपाल था। इसने पहली बार मगध के लिए 2 राजधानिया बनवाई 1 - राजगृह और 2 - वैशाली

कालाशोक :

इसका उपनाम काकवर्ण था। इसने अपनी राजधानी एक बार पुनः पाटलिपुत्र को बनाया जो की अंतिम रूप से मगध की राजधानी बानी। इसी के शासन काल में 383 ई. पू. में द्वितीय बुध संगीति का आयोजन वैशाली में किया गया।

यूनानी इतिहासकार कर्टियस के अनुसार कालाशोक के दरबार में अग्रसेन का पिता हजाम था, उसकी मृत्यु के बाद अग्रसेन राजा का हजाम बना, और रानी का प्रेमी बन बैठा उसने रानी की सहायता से कालाशोक व उसके समस्त पुत्रो को मौत के घाट उतार दिया। यही अग्रसेन आगे चल कर महापद्मनंद के नाम से विख्यात हुआ तथा उसने मगध पर एक नए राजवंश नन्द वंश की स्थापना की।

नन्द राजवंश : 344 ई. पू - 323 ई. पू.

संस्थापक: महापद्मनंद

शासक: महापद्मनंद > --- अज्ञात --- > घनानंद

महापद्मनंद :

नन्द वंश का प्रथम शासक था। इसने सभी क्षत्रियो का नाश करने की शपत ली अतः इसे परशुराम की भाती सर्वेक्षयान्तक भी कहा जाता है। अनगिनत सेना का स्वामी कारण इसे अग्रसेन कहा गया। खारवेल के हाथी गुम्भा अभिलेख के अनुसार इसने कलिंग के उप्पेर विजय प्राप्त की।

महापद्मनंद के 8 पुत्र थे अतः नन्द सहित इन समस्त राजाओ को नवनन्द कहा जाता था।

घनानंद –

अतुल्य धन सम्पति होने के कारण इसे घनान्द कहा जाता था। यह नन्द वंश का अंतिम शासक था तथा सिकंदर का समकालीन था। इसकी सेना की विशालता को देखते हुए ही सिकंदर की सेना ने व्यास नदी को पार करने से माना करदिया।

इसने तक्षशिला के आचार्य कौटिल्य का अपमान किया अतः कौटिल्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य व घनान्द के मंत्रियो की सहायता से इसका समूल विनाश करदिया। और मगध पर एक नए राजवंश मौर्य वंश की नीव डाली।

घनानंद के समय ही सिकंदर ने 326 ई. पू. के आस पास भारत पर आक्रमण किया। तक्षशिला के शासक आम्बी ने बिना लाडे ही सिकंदर के सामने आत्मसमर्पण करदिया। और वह उसका सहयोगी बन गया अतः आम्बी को भारतीय इतिहास का प्रथम देशद्रोही शासक कहा जाता है।

सिकंदर ने झेलम व चेनाब नदियों के बिच स्थित पुरु राज्य पर आक्रमण किया जिसका शासक पोरस था इन दोनों के बिच झेलम नदी के किनारे युद्ध लड़ा गया। अतः इस युद्ध को झेलम का युद्ध या वितस्ता का युद्ध कहा जाता है। यूनानीओं ने इसे हाईडेस्पीज का युद्ध कहा है

मौर्य काल हम अगले अध्याय में पढ़ेंगे

भारत का इतिहास - अध्याय 4

(मौर्य काल का इतिहास)

मौर्य काल का समय 323 ई. पू. से 185 ई. पू. था, इसके जानकारी के स्त्रोत निम्नलिखित है :-

1 साहित्यिक स्त्रोत:

अर्थशास्त्र : अर्थशास्त्र की रचना कौटिल्य (विष्णुगुप्त / चाणक्य) के द्वारा की गयी। कौटिल्य के अर्थशास्त्र भारतीय राजनीती पर लिखा गया प्रथम ग्रन्थ था। जिसकी तुलना मैकियावली के "THE PRINCE" के साथ की जाती है अतः चाणक्य को भारत का मैकियावली कहा जाता है। अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण 180 प्राधिकरण व 6000 श्लोक मिलते है।

यह संस्कृत भाषा में लिखा गया था तथा इसकी शैली गद्य व पद्य थी। 1905 में तंजौर के ब्राह्मण भट्ट्स्वामी ने पुणे के पुस्तकालय अध्यक्ष प्रोफेसर श्याम शास्त्री को इसकी एक पाण्डुलिपि भेंट की। सर्वप्रथम इसका प्रकाशन 1909 में संस्कृत भाषा में करवाया गया, जबकि 1915 में इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया गया।

अर्थशास्त्र के 6th अधिकरण का नाम मंडल योनि है जिसमे राज्य के 7 अंग बताये गए है।

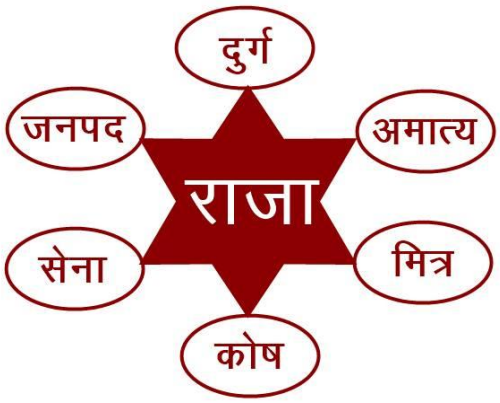

इंडिका : इंडिका की रचना मैगस्थनीज़ के द्वारा की गयी है। यह मूल रूप से अप्राप्य है परन्तु अनेक लेखकों के विवरण के आधार पर डॉ स्वान बेक के द्वारा इसका पुनः संकलन किया गया। मैगस्थनीज़ 305 ई. पू. में सेल्यूकस निकेटर के राजदूत रूप में भारत आया। तथा तत्कालीन मौर्य समाज व राजनीती की जानकारी दी।

मुद्राराक्षस : यह विशाखादत्त के द्वारा लिखित है। यह ग्रन्थ गुप्त काल में लिखा गया। 10वि सदी में इसपर टिका ढुंढिराज ने लिखा। यह भारत का प्रथम जासूसी ग्रन्थ माना जाता है।

2 पुरातात्विक साक्ष्य:

अभिलेख : अशोक के अभिलेखों की खोज सर्वप्रथम 1750 में टी फैनथेलर के द्वारा की गई। सर्वप्रथम उसने दिल्ली - मेरठ अभिलेख को खोजै। अशोक के अभिलेखों को सर्वप्रथम पढ़ने का श्रेय jems prisep को जाता है जिसने 1837 में दिल्ली-टोपरा स्तम्भलेख को पढ़ा।

शिलालेख : अशोक के शिलालेखों की संख्या 14 है जो की 8 निम्नलिखित स्थानों से प्राप्त होते है।

- 1 - गिरनार (गुजरात) - ब्राह्मी लिपि
- 2 - धौली (उड़ीसा) - ब्राह्मी लिपि
- 3 - जोगढ़ (उड़ीसा) - ब्राह्मी लिपि
- 4 - शाहबाजगढ़ी (पाकिस्तान) - खरोष्टी लिपि
- 5 - मानसेहर (पाकिस्तान) - खरोष्टी लिपि
- 6 - कालसी (उत्तराखंड) - ब्राह्मी लिपि
- 7 - सोपारा (महाराष्ट्र) - ब्राह्मी लिपि
- 8 - एर्रेगुड़ी (आंध्रप्रदेश) – ब्रुस्टोफेदन (ब्राह्मी लिपि + खरोष्टी लिपि)

NOTE: कंधार से प्राप्त शेर-ए-कुना में ग्रीक व अरमाइक लिपियों में प्राप्त होता हे। अतः अशोक के अभिलेखों की लिपिया खरोष्टी ब्राह्मी ग्रीक व अरमाइक थी जब की इन्हे प्राकृत भाषा में लिखा जाता था। भारत से प्राप्त सभी अभिलेखों की लिपि ब्राह्मी है। जब की भारत से बहार खरोष्टी लिपि में प्राप्त होते है।

स्तम्भ लेख : अशोक को स्तम्भ लगाने की प्रेरणा ईरानी शासक डरा-1 से मिली। अशोक के वृहद स्तम्भ लेखो की संख्या 7 है, जो की निम्नलिखित 6 स्थानों से प्राप्त होते है।

- दिल्ली-टोपरा - एक मात्र ऐसा स्तम्भ लेख है , जिस पर पूरी के पूरी 7 लाइन मिलते है। अन्य सभी पर 6 लाइन ही उत्कीर्ण है। यह पहले हरियाणा के अम्बाला में स्तिथ था परन्तु फ़िरोज़ शाह तुगलक द्वारा दिल्ली में गढ़वा दिया गया।
- दिल्ली-मेरठ - यह मेरठ उप्र में था जिसे फ़िरोज़ शाह तुगलक ने दिल्ली में गढ़वा दिया।
- लौरिया-अरराज - बिहार के चम्पारन जिले में स्तिथ है।
- लौरिया-नंदनगढ़ - बिहार के चम्पारन जिले में स्तिथ है।
- रमपुरवा - बिहार के चम्पारन जिले में स्तिथ है।
- कौशाम्बी (प्रयागराज)- इसे अकबर द्वारा इलाहबाद के किले में लगवाया गया।

लघु स्तम्भ लेख :

1- साँची (मप्र)
2- सारनाथ (उप्र)
3- कौशाम्बी (उप्र)
4- रुम्मिनदेई (नेपाल)
5- निग्लवासागर (नेपाल)

कौशाम्बी के लघु स्तम्ब लेख को रानी का अभिलेख भी कहा जाता है क्युकी इसमें अशोक एक मात्र सबसे प्रिय रानी कोरुवाकी का उल्लेख मिलता है। जो की तीवर की माता थी। रुम्मिनदेई एक मात्र ऐसा अभिलेख है, जिससे मौर्यकालीन कर व्यवस्था की जानकारी मिलती है।

सारनाथ स्तम्भ लेख UP : यह आधनिक भारत का राष्ट्रीय प्रतिक चिन्ह है। इसके फलक पर 4 सिंह पीठ सटा कर बैठे हुए ह, जो की आक्रामक अवस्था में है तथा एक चक्र धारण किये हुए है। यह चक्र गौतम बुद्ध के धर्म चक्र प्रवर्तक का सूचक है। सारनाथ के स्तम्भ में कुल 4 चक्र है, तथा इसके फलक पर क्रमशः हाथी गोदा बैल व सिंह का अंकन किआ गया है। तथा सत्यमेव जयते श्लोक लिखा गया है

गुहभिलेख : आजीवक धर्म के अनुयाइयों के निवास हेतु मौर्य सम्राठ अशोक व उसके पौत्र दशरथ के द्वारा बारबरा व नागार्जुन की पहाड़ियों (बिहार) में 60 गुफाओ का निर्माण करवाया गया।

- बारबरा -
    - 1 कर्ण चौपार : अशोक
    - 2 विश्व झोपड़ी : अशोक
    - 3 सुदामा : अशोक
    - 4 लोमेश ऋषि : दशरथ
- नागार्जुन -
    - 1 गोपी : दशरथ
    - 2 वापी : दशरथ
    - 3 पदथिक : दशरथ

NOTE : आजीवक धर्म का संस्थापक मुखलिपूत गोसाल था।

भगवान बुद्ध

भगवान बुद्ध ने 29 वर्ष की आयु में गृह त्याग किया इस घटना को बौद्ध धर्म में महाभिनिष्क्रमण कहा जाता है। गृह त्याग के बाद उन्होंने वैशाली के आलरकलाम को अपना प्रथम गुरु बनाया जो की सांख्य दर्शन के ज्ञाता थे। बुद्ध ने अपना दूसरा गुरु वैशाली के ही रामपुत्त को बनाया। भगवान बुद्ध ने वैशाख पूर्णिमा के दिन ज्ञान की प्राप्ति की इस घटना को बौद्ध धर्म में सम्बोधि कहा जाता है। भगवन बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश सारनाथ में 5 ब्राह्मणो को दिया जिनका नाम क्रमशः बाप्पा, भदीय , अस्सागी, महानामा , और कौडीन्य था। बौद्ध धर्म में इस घटना को धर्म चक्र प्रवर्तन कहा जाता है। भगवान बुद्ध का निर्वाण 483 BC में कुशीनगर में हुआ इस घटना को महापरिनिर्वाण कहा जाता है।

बौद्ध धर्म के त्रिरत्न - बुद्ध, धम्म, और संघ को माना जाता है। भगवान बुद्ध को एशिया का ज्योतिपुंज कहा जाता है।

चंद्रगुप्त मौर्य : 322ई.पू. - 298 ई. पू.

यह मौर्य वंश का संस्थापक माना जाता है। इसने अपने गुरु चाणक्य की सहायता से नन्द वंश के घनानंद को पराजित किया तथा चाणक्य को अपना प्रधानमंत्री बनाया। यूनानी इतिहास करो ने चन्द्रगुप्त मौर्य के लिए 2 नाम प्रयुक्त किये है।

- 1 सेंड्रोकोटस - जस्टिन , स्ट्रेबो , एरिअन
- 2 एंड्रोकोटस - एपियन , प्लूटार्क

सर्वप्रथम 1793 में विलियम जोन्स ने इन नामो के लिए चन्द्रगुप्त मौर्य की पहचान की। प्लूटार्क व स्ट्रेबो के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य ने 6 लाख की सेना लेकर सम्पूर्ण भारत को रोंध डाला

बौद्ध ग्रन्थ महावंश के अनुसार कौटिल्य ने चन्द्रगुप्त को सकल जम्बू द्वीप का स्वामी बना दिया 305 ई.पू. में चन्द्रगुप्त मौर्य व यूनानी शासक सेल्युकस निकेटर के बिच युद्ध लड़ा गया जिसमे सेल्युकस निकेटर पराजित हुआ तथा दोनों के बिच संधि हुई जिसकी निम्नलिखि शर्ते थी।

- हेलना (कार्नेलिया) के साथ विवाह - यह भारत का प्रथम अंतराष्ट्रीय विवाह था।
- काबुल , कंधार , बलोचिस्तान , और हेरात दहेज़ के तौर पर।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने सेलुकस निकेटर को 500 हथी उपहार में दिए
- सेल्युकस निकेटर ने अपने राजदूत के रूप में मेगस्थनीज को मौर्य दरबार में भेजा जिसने इंडिका ग्रन्थ लिखा।

Note : मेगस्थनीज भारत में नियुक्त होने वाला प्रथम विदेशी राजदूत था।

312 BC के आसपास मगध में एक भयंकर अकाल पड़ा जो की 12 वर्ष तक चला। इस दौरान जैन मुनि भद्रबाहु अपने शिष्यो को लेकर दक्षिण भारत चला गय, परन्तु स्थूल भद्र अपने शिष्यों के साथ मगध में ही रहा। 12 वर्ष का अकाल समाप्त हुआ तो 300 BC के आसपास भद्रबाहु पुनः मगध लौटा। 300 BC में पहेली जैन सभा का आयोजन पाटलिपुत्र में हुआ जिसकी अध्यक्षता भद्रबाहु व स्थूलभद्र ने की। इसी जैन सभा के दौरान जैन धर्म दो भागो में विभाजित हो गया। पहला तो **दिगंबर** और दूसरा **शेवताम्बर**

चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपनी गुजरात (सौराष्ट्र) के प्रांतपाल पुष्यगुप्त वैश्य को आदेश देकर इतिहास प्रसिद्ध सुदर्शन झील का निर्माण करवाया। सुदर्शन झील का उल्लेख रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख में मिलता है। यह झील ऊर्जियत पर्वत के पास सुवर्ण सिकना नदी व पलासिनी नदी के पास स्तिथ है। इसका पुनर्निर्माण क्रमशः अशोक(प्रांतपाल = तुषस्प), रुद्रदामन(प्रांतपाल = सुविशाख), और स्कन्दगुप(प्रांतपाल = पर्णहरित) ने करवाया

चन्द्रगुप्त मौर्य जैन मुनि भद्रबाहु के साथ कर्णाटक के श्रवणबेलगोला चला गया जहा उसने संलेखना के द्वारा अपना देह त्याग दिया। जिस पहाड़ी पर देह त्यागी उस पहाड़ी का नाम बदल कर चन्द्रगिर पहाड़ी कर दिया गया।

बिन्दुसार : 298 ई. पू. - 274 ई. पू.

चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के बाद बिन्दुसार शासक बना। चाणक्य कुछ समय के लिए बिन्दुसार का प्रधानमंत्री बना रहा परन्तु उसकी मृत्यु के बाद राधागुप्त प्रधानमंत्री बना।

बिन्दुसार के दरबार में 500 सदस्यों की एक मंत्री परिषद् थी जिसका प्रधान खल्लाटक था। ग्रीक इतिहासकारो ने बिन्दुसार को अमित्रोकेटस या अमित्रखाद कहा है। वायु पुराण में इसे भद्रसार जबकि जैन ग्रंथो में इसे सिंह सेन कहा गया है। जैन ग्रंथो के अनुसार, बिन्दुसार की माता का नाम दुर्धरा था।

बिन्दुसार ने मिश्र के शासक टॉलमी II को एक पत्र लिखा टॉलमी II ने बिन्दुसार के दरबार में डाइनोसियस नामक राजदूत की नियुक्ति की।

बिन्दुसार ने यूनानी शासक अंटिओकस I को भी पत्र लिखा तथा निम्नलिखित 3 चीज़ो की मांग की।

1- सूखे मेवे -अंजीर
2- विदेशी मीठी शराब
3- दार्शनिक

यूनानी शासक ने अंजीर व शराब तो भेज दी परन्तु दार्शनिक भेजने से इंकार कर दिया। उसने अपने राजदूत के रूप में डायमेकस को भेजा।

बिन्दुसार के शासनकाल के अंतिम समय में तक्षशिला में 2 विद्रोह हुए जिन्हे दबाने हेतु सबसे पहले उसने अशोक को भेजा तथा बाद में सुसीम को भेजा।

अशोक 273 ई. पू. - 232 ई. पू. :

सिंहली अनुश्रुतियों के अनुसार बिन्दुसार की मृत्यु के बाद 4 वर्ष तक उत्तराधिकार संघर्ष चला और इस उत्तराधिकार संघर्ष में अशोक ने अपने 99 भइओ की हत्या कर 269 ई. पू. में विधिवध राज्याभिषेक करवाया। अशोक ने केवल अपने एक भाई तिष्य को जीवित रखा

बौद्ध ग्रंथो के अनुसार अशोक की माता का नाम सुभद्रांगी या धम्म या जंपादकल्याणी व वनदेवी मिलता है। यह चंपा के एक ब्राह्मण की पुत्री थी। राजा बनने से पूर्व अशोक उज्जैन का प्रांतपाल था। अशोक के सम्पूर्ण शासनकाल को 3 भागो में विभाजित किया जा सकता है

- भाग 1 राज्याभिषेक से 8वे वर्ष तक - > चंडाशोक
- भाग 2 8वे वर्ष से 27वे वर्ष तक - > धम्माशोक
- भाग 3 27 वे वर्ष से 37 वर्ष तक - > अज्ञात

कलिंग युद्ध -

इस युद्ध का उल्लेख अशोक ने अपने 13वे शिलालेख में किया है। यह युद्ध अशोक के राज्याभिषेक के 8वे वर्ष अर्थात 261 BC में लड़ा गया। खारवेल के हाथीगुम्फा अभीलेख के अनुसार कलिंग का शासक नंदराज था। कलिंग युद्ध हेतु निम्नलिखित 3 कारण माने जाते है।

- आर्थिक कारण (हाथीदाँत व्यापर व व्यापरिक मार्ग)
- कलिंग की स्वंत्रता
- पिता के अपमान का बदला

इस युद्ध में लाखो लोग मरे गए व बेघर हो गए। अशोक द्वारा लड़ा गया अंतिम युद्ध था। इसके बाद अशोक ने रण घोष के स्थान पर धम्म घोष को अपनाया

कल्हण की राजतरंगिणी के अनुसार अशोक ने झेलम नदी के किनारे श्रीनगर नामक नगर की स्थापना की। अशोक का साम्राज्य नेपाल में भी था। उसने नेपाल में देवपाटन या ललित पतन नमक नगर बसाया अशोक की पटरानी का नाम असिन्धमित्र था उसकी मृत्यु के बाद तिष्यरक्षिता पटरानी बनी जिसने कुणाल को अंधा करवादिया। कुणाल की माता का नाम पद्मावती मिलता है। अशोक की एक अन्य पत्नी देवी थी जिसकी 2 संताने महेंद्र वे संगमित्रा थी। अशोक ने बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार करने हेतु श्रीलंका भेजा

NOTE : श्रीलंका के शासक का नाम तिष्य था। जिसे अशोक की भाती देवनाम प्रिये या देवनामपियदशी की उपाधि प्राप्त थी। यह उपाधिया अशोक के पौत्र दशरथ को भी प्राप्त थी। जो की कुणाल का पुत्र था।

जैन ग्रंथो के अनुसार अशोक की मृत्यु के बाद सम्प्रति शासक बना परन्तु बौद्ध ग्रंथो के अनुसार शासक का नाम कुणाल मिलता है।

मौर्य वंश के अंतिम शासक के रूप में ब्रहद्रथ का नाम मिलता हे जिसकी हत्या 185 B.C. में पुष्यमित्र शुंग के द्वारा कर दी गया

अशोक का नाम "अशोक" निम्नलिखित अभिलेखों से प्राप्त होता है। गुर्जरा(MP) मस्की(karnatak) नेट्टूर(karnatak) उदयगोलम(karnatak)

अशोक का धम्म

अशोक ने अपनी जनता के नैतिक उत्थान के लिए जो नियमो की संहिता प्रस्तुत की उसे अभिलेखों में धम्म कहा गया है। अशोक का धम्म उपासक बौद्ध धर्म था सर्वप्रथम अशोक को निग्रोथ नामक बालक ने बौद्ध धर्म से परिचित किया लेकिन मोग्गली पूत तिस्स के प्रभाव में आकर वह पूर्ण रूप से बौद्ध हो गया। दिव्यावदान के अनुसार उपगुप्त नामक ब्राह्मण ने अशोक को बौद्ध धर्म से दीक्षित किया। अशोक के धम्म की परिभाषा दूसरे व सातवे अभिलेखों से मिलती है जो की राहुलवाद सूत से मिलती है।

मौर्यकालीन प्रशासन

मौर्य प्रशासन केंद्रीय राजतंत्रात्मक प्रशासन था जिसका उल्लेख कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में किया है। प्राचीन भारत में सबसे विशाल नौकरशाही मौर्य काल में थी। अर्थशास्त्र में मंत्री परिषद् को वैधानिक आवयश्कता बताते हुए कहा हे की। राज्य एक पहिये पर नहीं चल सकता। इस मंत्रिपरिषद को अशोक के अभिलेखों में परिषा कहा गया है। मंत्रिपरिषद में 2 भाग होते थे -

1 मंत्रिण : यह राजा के विश्वासपात्र लोगो का समूह था जिनमे 3 से 5 लोग शामिल होते थे। इन्हे 48000 पण वार्षिक वेतन मिलता था।

2 सदस्य: इनका वेतन 12000 पण वार्षिक था।

केंद्रीय प्रशासन : राजा के प्रमुख 18 सहयोगियो को तीर्थ कहा जाता था, इन्हे महामात्य कहा जाता था। प्रमुख तीर्थ मंत्री व पुरोहित थे। तीर्थो से निचे द्वितीय श्रेणी के पदाधिकारी होते थे जिन्हे अध्यक्ष कहा जाता था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार अध्यक्षों की संख्या 26 होती थी। तीर्थो व अध्यक्षों में मध्य संयोजक कड़ी के रूप में युक्त व उपयुक्त नियुक्त होते थे। इन सभी की नियुक्ति से पूर्व इनके चरित्र की जांच हेतु उपधा परिक्षण किया जाता था।

प्रांतीय प्रशासन :

मौर्य साम्राज्य प्रांतो में विभाजित था चन्द्रगुप्त मौर्य के समय प्रांतो की संख्या 4 जब की अशोक के समय प्रांतो की संख्या बढ़ कर 5 हो गयी।

प्रान्त - राजधानी - सम्राट

1 उत्तरापथ - तक्षशिला

2 दक्षिणापथ - सुवर्णगिरि

3 अवन्ति - उज्जैन

4 मध्यदेश - पाटलिपुत्र

5 कलिंग - तोसलि - सम्राट अशोक

साम्राज्य का विभाजन निम्न प्रकार था।

साम्राज्य > प्रान्त > आहार (विषय) > स्थानीय > द्रोणमुख > खवर्टिक > संग्रहण > ग्राम

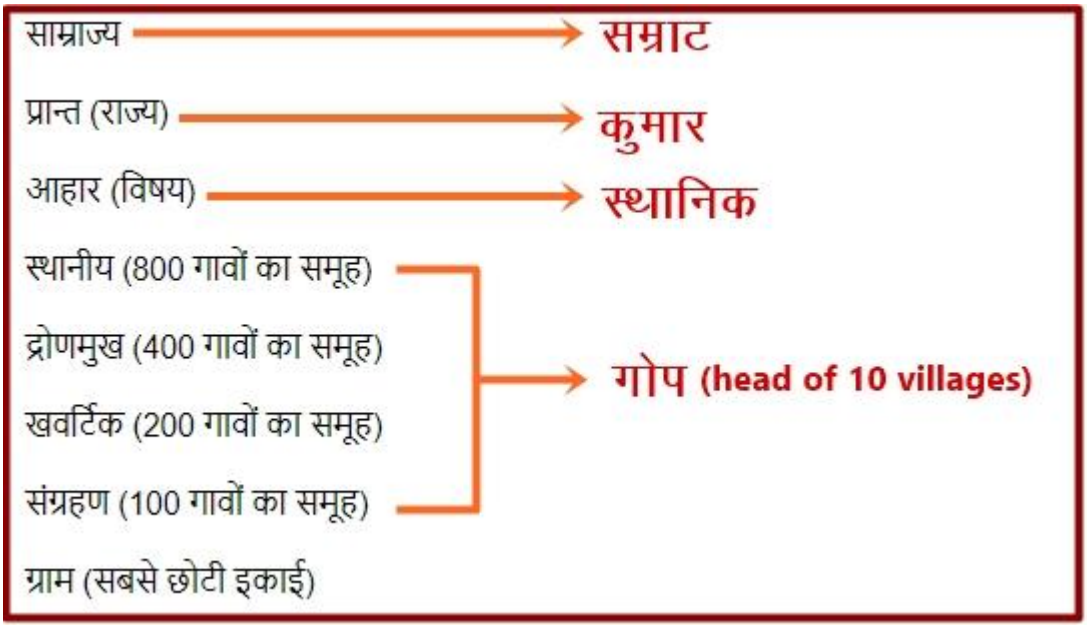

IMPORTANT : प्राचीन भारत में पहेली बार जनगणना मौर्य काल में की गयी। जनगणना अधिकारी को नागरक कहा जाता था।

मौर्यकालीन न्याय व्यवस्था :

सर्वोच्च न्यायाधीश राजा होता था। अर्थशास्त्र में 2 प्रकार के न्यायालयों का उल्लेख मिलता है,

1. **धर्मस्थीय :** जिनमे दीवानी मामले आते थे जैसे चोरी लूट जिन्हे साहस कहते थे। और पुलिस को रक्षिण कहा जाता था और मुख्या न्यायाधीश हो व्यावहारिक कहा जाता था।
2. **कंटकशोधन :** जिसमे फौजदारी मामले आते थे इसके मुख्य न्यायाधीश को प्रदिष्ठा कहा जाता था।

मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था :

मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था कृषि पशुपालन व व्यापर पर आधारित थी जिसे सम्मिलित रूप से वार्ता कहा जाता था। कृषि योग्य भूमि को उर्वरा या क्षेत्र कहा जाता था। भूमि के स्वामी को क्षेत्रक कहा जाता था। जबकि कृषि करनेवाले काश्तकार को उपवास कहा जाता था। राज्य की सम्पूर्ण भूमि पर राजा का अधिकार होता था। राजा को कर के रूप में 1/6 भाग दिया जाता था। अर्थशास्त्र में 10 प्रकार की भूमियो का उल्लेख मिलता है। जिसमे से प्रमुख निम्नलिखित थी।

- अदेवमातृक - वह भूमि जो की वर्षा पर आधारित नहीं होती थी। अर्थात सिचाई के माध्यम से खेती की जाती थी।
- देवमात्रिक - वर्षा आधारित भूमि
- अकृष्ट - बिना जूती हुई भूमि
- कृष्ट - जुटी हुई भूमि
- स्थल - ऊचाई पर स्तिथ भूमि

मौर्यकालीन कर : अर्थशास्त्र में कुल 21 प्रकार के करो का उल्लेख मिलता है जिनमे से प्रमुख निम्नलिखित थे

- भाग : कृषि उपज पर लिया जाने वाला कर
- सीता : राजकीय भूमि व वन्य भूमि से प्राप्त आय पर लिया जाने वाला कर।
- प्रणयकर : आपातकालीन कर
- बलि : स्वेच्छा से दिए जाने वाले राजा को उपहार
- सेतुबंध : सिचाई कर
- हिरण्य : नगद के रूप में लिया जाने वाला कर
- विष्टि : बेगारी कर

मौर्यकालीन सिक्के

- कशापर्ण /पण /धरण : चांदी का सिक्का (राजकीय सिक्के)
- सुवर्ण /निष्क : सोने का सिक्का
- मषक : ताम्बे का बड़ा सिक्का
- काकनी : ताम्बे के छोटे सिक्के

** मौर्यकालीन सिक्के : पंचमार्क / आहत

अन्य महत्त्व पूर्ण तथ्य

चन्द्रगुप्त मौर्य ने उत्तरापथ का निर्माण करवाया जो की मौर्य काल की सबसे लम्बी सड़क थी मध्यकाल में इस उत्तरापथ का पुनर्निर्माण शेर शाह सूरी के द्वारा करवाया गया तथा इसे सड़क ए आजम नाम दिया। आधुनिक भारत में अंग्रेज गवर्नर जनरल ऑकलैंड(1836 - 1842) ने इसका नाम (**G. T. Road)** रखा (Grand Trunk Road)।

मौर्यकाल में सूती वस्त्र उद्द्योग सबसे प्रमुख उद्द्योग था।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में मौर्यकालीन समाज में 4 वर्णो का होना बताया गया है।

कौटिल्य ने पहेली बार शुद्रो को आर्य कहा हे तथा कृषि व वाणिज्य को शुद्रो की प्रथम वार्ता मन गया है।

मेगस्थनीज ने अपनी इंडिका में भारतीय समाज में7 जातिया बताई है।

गुप्त काल हम अगले अध्याय में पढ़ेंगे

भारत का इतिहास - अध्याय 5

(गुप्त काल का इतिहास)

गुप्त काल(300 ई. - 600 ई.) को भारतीय इतिहास का स्वर्णिम काल कहा जाता है क्युकी इस काल के दौरान भारतीय कला एवं संस्कृति का विकास अपनी चरम सिमा को छू गया।

मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद उत्तरी भारत की राजनैतिक एकता समाप्त हो गयी जिसे एक बार पुनः स्थापित करने का प्रयास कुषाण व सातवाहन वंश के द्वारा किया गया परन्तु वह अपने क्षेत्रों तक ही सिमित रहे। गुप्तो को कुषाणो का सामंत कहा जाता है।

गुप्त वंश का संस्थापक श्रीगुप्त को कहा जाता है, जिसका शासनकाल 275 ई. से 300 ई. माना गया है यह गुप्त वंश का प्रथम ऐसा शासक था जिसने महाराज की उपाधि धारण की।

श्रीगुप्त के बाद शासक गटोतघच बना , इसके बारे में कोई भी अन्य जानकारी नहीं मिलती है।

चन्द्रगोमिन के व्याकरण में गुप्ता को जर्ट (जाट) कहा गया है। जबकि चन्द्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावती गुप्त ने अपने पूना ताम्र पत्र में धारण गौत्र का उल्लेख किया है। जो की उसके पिता की गौत्र रही होगी। क्युकी उसके पति वाकाटक नरेश रुद्रसेन द्वितीय विष्णुवृध्दि गौत्र के ब्राह्मण थे।

गुप्तों की उत्पत्ति से सम्बंधित अनेक विद्वानों ने अपने अलग-अलग मत दिए है।

- 1 के. पी. जैसवाल : शूद्र
- 2 रोमिला थापर : वैश्य
- 3 हेमचन्द्र राय चौधरी : ब्राह्मण
- 4 मजूमदार और ओझा : क्षत्रि

चन्द्रगुप्त 1st :

इसे गुप्त वंश का वास्तविक संस्थापक मन जाता है। यह गुप्त काल का ऐसा शासक था जिसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की। इसने लिच्छिवि राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया इस विवाह की पुष्टि उसके द्वारा चलाये गए कुमारदेवी प्रकार के सोने के सिक्को से होती है। इस विवाह उपरांत चन्द्रगुप्त प्रथम को पाटलिपुत्र दहेज़ में मिला जिसे गुप्तो ने अपनी राजधानी बनाया

NOTE : गुप्त वंशवली में यह पहला शासक था जिसके सोने के सिक्के प्राप्त होते है । इसने अपने राज्यारोहण के दिन 9 मार्च 319 ई को एक नया गुप्त सम्वत चलाया

समुद्रगुप्त :: 335 ई. - 375ई.

समुद्रगुप्त के बारे में जानकारी प्रयाग प्रशस्ति से मिलती है। जिसकी रचना उसके दरबारी कवी हरिसेन के द्वारा की गयी प्रयाग प्रशस्ति को उत्कीर्ण का श्रेय तिलभट्ट को जाता है। प्रयाग प्रशस्ति में समुद्रगुप्त को 100 युद्धो का विजेता बताया है। अतः विन्सेंट स्मिथ ने समुद्रगुप्त को भारत का नेपोलियन कहा है। प्रयाग प्रशस्ति में समुद्रगुप्त की कविराज उपाधि का वर्णन मिलता है।

प्रयाग प्रशस्ति में समुद्रगुप्त के युद्धों का वर्णन मिलता है तथा उसके द्वारा अपने गयी नीतियों का भी उल्लेख हुआ है जो की निम्न प्रकार थी -

- 1- समुद्रगुप्त ने उत्तरभारत के 12 राजाओ को पराजित किया। उसने आर्यवृत्त के इन युद्धों में प्रसभौद्धरण (जड़ से उखड फेकना) की निति का अनुसरण किया।
- 2- समुद्रगुप्त ने दक्षिणापथ के युद्ध में भी 12 राजाओ को पराजित किया तथा उसने यहाँ ग्रहणमोक्षानुग्रह निति का अनुसरण किया। अर्थात राज्यों को अधिनता स्वीकार करवा कर उनसे उपहार कर इत्यादि स्वीकार किया तथा उन्हें पुनः मुक्त किया। प्रोफेसर राय चौधरी ने दक्षिणापथ की इस विजय को धर्म विजय कहा है।
- 3- समुद्रगुप्त ने विदेशी शक्तियों को भी प्रभावित किया तथा इस हेतु विदेशी शक्तियों ने निम्नलिखित विधि अपना कर समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार की।
    - **कन्योपायन :** अपनी कन्याओ का विवाह गुप्त शासको के साथ करवा कर
    - **आत्मनिवेदन :** स्वयं दरबार में उपस्थित हो कर आत्मनिवेदन करते थे
    - **स्वविषय भुक्ति शासन याचना :** अपने भुक्ति(प्रान्त) का शासन संचालित करने के लिए शासन आदेश प्राप्त करते थे।
- 4- समुद्रगुप्त ने उत्तर-पूर्व व उत्तर-पस्चिम के शासको को अधीन करने हेतु निम्नलिखित निधि अपनायी:
    - **सर्वकरदानम :** सारा कर दान देते थे।
    - **आज्ञाकारम :** सेशन आदेश प्राप्त कर के।
    - **प्रणाम आगमनम :** अर्थार्त दरबार में प्रणाम हेतु उपस्थित होकर।
- 5- समुद्रगुप्त की इन समस्त विजयो का उद्देश्य धरणिबंध था अर्थार्त सम्पूर्ण भारत को राजनैतिक एकता के सूत्र में बांधना।

एरण अभिलेख में समुद्रगुप्त को रुष्ठ(क्रोधित) होने पर उसे यमराज के सामान जबकि प्रसन्न होने पर उसे कुबेर के सामान बताया गया है। इसी अभिलेख में समुद्रगुप्त की पत्नी का नाम दत्त देवी बताया गया है।

समुद्रगुप्त के सिक्के

1. गरुड़ प्रकार
2. धनुर धारी प्रकार
3. परशु प्रकार
4. अश्वमेध प्रकार
5. व्याग्रहनन प्रकार
6. वीणावादन प्रकार : कविराज की उपाधि

समुद्रगुप्त के सिक्को पर उसे लिच्छिवि दोहित्र कहा गया है। गुप्तकालीन सिक्को के ढेर राजस्थान में बयाना (भरतपुर) से प्राप्त हुए है।

चन्द्रगुप्त II :: 380 ई. - 412 ई.

चन्द्रगुप्त II की उपाधिया: चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य की उपाधिया निम्नलिखित है -

अप्रतिरथ : जिसके विजयरथ को रोका नहीं जा सकता। सम्पूर्ण गुप्त शासको में समुद्रगुप्त व चन्द्रगुप्त II को ही यह उपाधि प्राप्त थी।

परमभागवत : गुप्त वंश में यह उपाधि धारण करने वाला प्रथम शासक था। इसके अलावा इसे देवगुप्त, देवश्री, देवराज, विक्रमांक, श्री विक्रम सिंह उपाधिया भी प्राप्त थी।
विशाखदत्त के नाटक देवीचंद्रगुप्तम में समुद्रगुप्त व चन्द्रगुप्त II के बिच एक निर्बल शासक के रूप में रामगुप्त का उल्लेख मिलता है। चन्द्रगुप्त II ने रामगुप्त की हत्या कर ध्रुवस्वामिनी से विवाह कर लिया। सर्वप्रथम 1924 में राखल दस बनर्जी ने रामगुप्त की ऐतहासिकता सिद्ध करने का प्रयास किया।

चन्द्रगुप्त द्वितीय ने नागवंश की राजकुमारी कुबेरनागा से विवाह किया। इसी विवाह से इसे प्रभावती नामक पुत्री प्राप्त हुई प्रभावती का विवाह वाकाटक नरेश रुद्रसेन II के साथ किया गया इसी रुद्रसेन की सहायता से चन्द्रगुप्त II ने पस्चिमी भारत से शैको का पूर्णतः उन्मूलन करदिया अर्थात चन्द्रगुप्त II को शकारी कहा जाता है।

शैको पर विजय प्राप्त करने के उपलक्ष में चन्द्रगुप्त II ने **विक्रमादित्य** की उपाधि धारण की तथा व्यग्र प्रकार के चांदी के सिक्के चलाये ऐसा करने वाला वह प्रथम शासक था
चन्द्रगुप्त II के शासन काल में 399 ई. से लेकर 414 ई. तक फाहियान आया इसने अपने ग्रन्थ फ़ो-को -की में चन्द्रगुप्त II का उल्लेख नहीं किया है। इसमें लिखा हे की मध्यदेश के लोग व्यापर हेतु कोडियो का प्रयोग करते थे। फाहियान ने गुप्त कालीन न्याय व्यवस्था के लिए लिखा हे की गुप्त काल के दौरान न्याय कठोर नहीं था, परन्तु बार बार अपराध करने पर अपराधी का दाहिना हाथ काट लिया जाता था।

चन्द्रगुप्त II के बारे में मेहरोली(दिल्ली) के लोह स्तम्ब से भी जानकारी प्राप्त होती है।

चन्द्रगुप्त द्वितीय के दरबार में 9 विद्वानों की एक मंडली निवास करती थी जिसे नवरत्न कहा जाता था जो निम्नलिखित हे । कालिदास, धन्वंतरि, क्षपणक, बेतालभट्ट, अमरसिंह, घटकर्पर, शंकु, वररुचि, वराहमिहिर

कुमारगुप्त (महेन्द्रादित्य) :: 412 ई. 455 ई.

सम्पूर्ण गुप्त वंश के शासको की वंशवली बिल्सड़ अभिलेख(UP) से प्राप्त होती है। गुप्त काल में सर्वाधिक अभिलेख कुमारगुप्त के में ही लगाए गए।

तुमेन अभिलेख में इसे शरदकालीन सूर्य की भाती शांत कहा गया है। गुप्त वंश का प्रथम ऐसा शासक था जिसके तीन (ताम्रपत्र) अभिलेख बंगाल से भी प्राप्त होते है, दामोदरपुर धनदेह और वेग्राम। यह गुप्त वंश का ऐसा शासक था जिसने गुप्तकालीन सिक्को पर गरुड़ के स्थान पर मयूर का अंकन करवाया, जिससे गुप्त शासको के शैव होने का भी प्रमाण मिलता है।

Important: नालंदा विष्व विद्यालय की स्थापना की गयी जिसे महायान बौद्ध धर्म का ऑक्सफ़ोर्ड कहा जाता है।

NOTE: चतुर्थ संगीति का आयोजन कुषाण शासक कनिष्क शासन काल में कश्मीर के कुण्डलवन में किया गया। इस बौद्ध संगीति में बौध्द धर्म दो भागो में विभाजित हो गया, हीनयान और महायान। महायानो का नेता नागार्जुन था जिसने शून्यवाद का सिद्धांत दिया। नागार्जुन को भारत का einstein कहा जाता है।

नालंदा विश्वविद्यालय में धर्मगंज नमक पुस्तकालय है जो की तीन भागो में विभाजित है, रत्नरंजक रत्नोदधि व रत्नासागर

स्कंदगुप्त :: 455 ई. - 467 ई.

इसने हुनो के आक्रमण को निष्फल किया जिसका उल्लेख भीतरी अभिलेख (UP) में मिलता है। इसने सुदर्शन झील का पुनर निर्माण करवाया। इसके शासन काल में सोने के सिक्को का वजन सर्वाधिक था। क्युकी सोने के सिक्को में सर्वाधिक मिलावट इसी के शासनकाल में हुई। इसने परमभागवत की उपाधि धारण की। इसकी मृत्यु के साथ ही गुप्त साम्राज्य का पतन हो गया।

स्कंदगुप्त के बाद : **पुरुगुप्त , कुमारगुप्त II, बुधगुप्त, नरसिंहगुप्त, वलादित्य , व भानुगुप्त।**

510 ई. के भानुगुप्त के एरण अभिलेख में पहली बार सती प्रथा का उल्लेख मिलता है। भानुगुप्त के सैनिक गोपराज की पत्नी के सती होने का उल्लेख है।

गुप्तकालीन प्रशासन

प्राचीन काल से चली आ रही उपाधिया जैसे राजन इत्यादि को त्याग कर नयी उपाधिया धारण की

राज्यो में :

- महाराज - उपरीक
- भोगिक - भोक्ता , गुप्ता

केंद्र में :

- महाराजा धीराज - सम्राट
- परमभागवत
- परमभट्टारक
- अप्रतिरथ

गुप्ता की राजधानी पाटलिपुत्र रही परन्तु चन्द्रगुप्त II के शासन काल में द्वितीय राजधानी के रूप में उज्जैन था जबकि स्कंदगुप्त के समय में इसे अयोध्या स्थान्तरित किया गया था।

गुप्त काल में पहली बार राजस्थानीय शब्द का उल्लेख मिलता है। जो की पश्चिमी क्षेत्रो के शासको के लिए प्रयुक्त किया जाता था।

गुप्तो का राजचिन्ह गरुड़ था। राजा का पद वंशानुगत था परन्तु जयेष्ठाधिकार नहीं था।

गुप्तकाल में मंत्रिपरिषद का विस्तृत विवरण नहीं मिलता है, परन्तु फिर भी कुछ अधिकारियो के नाम मिलते है। जैसे

- 1 महाबलाधिकृत : सेनापति
- 2 महादण्डनायक : न्यायाधीश
- 3 कुमारामात्य : सर्वोच्च प्रशासनिक अधिकारी(IAS)
- 4 महासंधिविग्रहिक : शांति मंत्री/ विदेश मंत्री

पदसंख्या 2 3 व 4 समुद्रगुप्त के समय हरिषेण के पास थे जब की चन्द्रगुप्त II के समय यह पद हरिषेण के पुत्र वीरषेण के पास थे।

प्रांतीय प्रशासन:

- साम्राज्य : सम्राट
- भुक्ति : उपरीक
- विषय/जिला :विषयपति
- पेठ / तहसील : ग्रामिक / भोजक
- ग्राम (स्वशासित) : ग्रामिक / भोजक
- ग्रामसभा(स्वशासित) : ग्रामिक / भोजक
- ग्राम सभा को मध्यभारत में पंचमंडली कहा जाता था।

गुप्तकालीन अर्थ व्यवस्था :

गुप्तकालीन राजस्व व्यवस्था कृषि व पशुपालन पर आधारित थी। व्यापर में कमी आयी। लम्बी दुरी के व्यापर लगभग समाप्त हो गए थे।

सम्पूर्ण भूमि का स्वामी राजा होता था। राजा को उपज का कुल 1/6 भाग कर के रूप में मिलता था। जिसे "भाग" कहा जाता था।

अन्य कर :

- भोग : राजा को अपनी इच्छा से प्रतिदिन दी जाने वाली भेट जैसे फल फूल इत्यादि।
- उपरीकर : स्थाई व अस्थाई किसानो द्वारा दिया जाने वाला कर।
- हिरण्य : नगद के रूप में दिया जाने वाला कर गुप्त काल में राजस्व नगद व मैय के रूप में दिया जाता था।
- **भूमि के प्रकार** :
- **क्षैत्र** : कृषि योग्य भूमि
- **वास्तु :** निवास योग्य भूमि
- **अप्रहत :** जंगली मीणा जूती हुई भूमि
- **अदेवमातृक :** बिना वर्षा वाली भूमि
- **खिल :** जूती हुई भूमि

सिक्के :

प्राचीन भारत में सर्वाधिक सोने सिक्के गुप्त काल में चले। यह सिक्के कुषाणों की नक़ल पर बनाये गए थे। चांदी के सिक्के को रुपियक व सोने के सिक्को को दीनार कहा जाता था . इन सिक्को पर सर्वाधिक अंकन गरुड़ का मिलता है। इसके अलावा मयूर, राजा, कार्तिके और वृषभ

गुप्तकालीन समाज

समाज 4 वर्णो में विभाजित था। गुप्त काल में पहेली बार शुद्रो की स्तिथिया सुधरी उन्हें महाभारत व पुराण सुनने का अधिकार मिला। शुद्रो को सैनिक कार्यो में लगाया जाता था। गुप्त काल में वर्ण व्यवस्था में सबसे बड़ा परिवर्तन हुआ।

एक नया वर्ण चांडाल विकसित हुआ, जो की ग्राम से बहार निवास करता था। तथा ग्राम में प्रवेश करते समय यह ढोल बजाते हुए आते थे। ताकि लोग इनसे दूर हैट जाये। अतः समाज में अस्पर्शयता का जन्म हुआ।

स्त्रियों की स्तिथि ठीक नहीं थी क्योकि सती प्रथा का उल्लेख में मिलता है। महाभारत में स्त्रियों के बिना जीवन को शुन्य मन गया है।

गुप्तकालीन धर्म :

गुप्त काल को हिन्दू धर्म का पुनरुत्थान काल मन जाता है। इस कल में हिन्दू धर्म के 2 प्रमुख संप्रदाय वैष्णव व शैव का सर्वाधिक विकास हुआ। भानुगुप्त का एरण अभिलेख विष्णु की स्तुति से प्रारम्भ होता है।

लक्ष्मीनारायण की पूजा गुप्त काल की देन है।

शिव पारवती की सम्मिलित मुर्तिया तथा उन्हें अर्धनारीश्वर के रूप में गुप्त काल में पूजा गया।

ब्रह्मा विष्णु व महेश की त्रिमूर्ति के रूप में पूजा। चतुर्मुखी तथा षड्मुखी शिवलिंग की पूजा गुप्त काल की देन है।

IMPORTANT: महाभारत व पुराणों का वर्त्तमान स्वरुप जो हमे देखने को मिलता है, गुप्त काल की देन है।

बौद्ध धर्म व जैन धर्म - तीसरे प्रमुख धर्म के रूप में सबसे प्रमुख धर्म बौद्ध धर्म था। फाहियान ने खोतान व नालंदा को बौद्ध धर्म का सबसे बड़ा केंद्र बताया है।
सुल्तानगंज से बुद्ध की साढ़े सात फिट ऊँची काँसे की प्रतिमा प्राप्त हुई है। मथुरा से खड़े बुद्ध की प्रतिमा व सारनाथ से बैठे बुद्ध की प्रतिमा प्राप्त हुई है।

जैन धर्म की द्वितीय जैन संगीति का आयोजन गुजरात के वल्लभी नगर में किया गया। जिसकी अध्यक्षता क्षमाश्रवण / देवदारधीनी के द्वारा की गयी।

गुप्तकालीन कला एवं साहित्य :

गुप्त काल में पहेली बार मंदिर निर्माण कला का जन्म हुआ अर्थात भारत में एक नयी वास्तु कला ने जन्म लिया। वास्तुकला हेतु निम्नलिखित शैलिया प्रचलित थी :

1. नगर शैली : इसे आर्य शैली भी कहा जाता है। यह शैली उत्तरी भारत में प्रचलित थी। इसकी प्रमुख विशेषता विशाल शिखर। भारत में सर्वप्रथम शिखर का प्रयोग झांसी स्तिथ देवगढ़ के दशावतार मंदिर में किया गया। इसका शिखर 12 मीटर ऊचा था।
2. द्रविड़ शैली : यह शैली दक्षिण भारत में प्रचलित थी। इसकी प्रमुख विशेषता इसके विशाल प्रवेश द्वार है। जिन्हे गोपुरम कहा जाता है। इनका आकर पिरामिड के सामान होता है।
3. बेसर शैली : नगर शैली व द्रविड़ शैली का मिश्रण। इसे खच्चर या चच्चर शैली भी कहा जाता है। चालुक्य शासको द्वारा प्रचलित करने के कारन इसे चालुक्य शैली भी कहा जाता है।
4. एकायतन शैली : वह मंदिर जिसके गर्भगृह में सिर्फ एक प्रतिमा हो।
5. पंचायतन शैली : वह मंदिर जिसके गर्भगृह में एक से अधिक अर्थात 5 तक प्रतिमाये हो उसे पंचायतन शैली का मंदिर कहते है। जैसे दशावतार मंदिर।
6. महामारू शैली : जहा पर अनेक मंदिर एक साथ बने हुए हो।

तक्षण : छेनी व हतोड़े के माध्यम से मूर्तियों का निर्माण तक्षण कहलाता है।
सिलावट : मूर्ति का निर्माण करने वाले कलाकार।

गुप्तकालीन प्रमुख मंदिर :

- 1 दशावतार मंदिर : झाँसी UP
- 2 भूमरा शिव मंदिर : MP
- 3 तिगवा विष्णु मंदिर : MP
- 4 नाचना कुठार : MP
- 5 सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर : छत्तीसगढ़ (ईटो से निर्मित)
- 6 भीतरगांव : कानपूर (ईटो से निर्मित)

अजंता एलोरा की गुफा :
यह महाराष्ट्र के अजंता(अनिष्ठा) नामक ग्राम के पास स्तिथ है। इसमें कुल २९ गुफाएं है जिसमे से गुफा संख्या 16 व 17 गुप्तकालीन है। इन गुफाओ की खोज 1819 मै मद्रास रेजिमेंट के एक सैनिक सर अलेक्सजेंडर के द्वारा की गयी। इन गुफाओ का निर्माण वाकाटक नरेश पृथ्वीसेन के आदेश पर उसके सामंत व्याग्रदेव द्वारा करवाया गया। इन गुफाओ का आकर घोड़े के खुर (नाल) के सामान है। 1983 में इसे विष्व विरासत सूचि में सम्मिलित करलिया गया।

गुप्तकालीन साहित्य :

कालिदास: कालिदास को भारत का शेक्शपिअर कहा जाता है। कालिदास के 3 प्रमुख नाटक : मालविकाग्निमित्रम , विक्रमोवर्शियम, अभिज्ञानशाकुंतलम। 2 प्रमुख महाकाव्य : रघुवंशम, कुमार सम्भवम। और 2 प्रमुख खंडकाव्य : ऋतूसंहार, मेघदूत।
आर्यभट्ट : यह 5वि शताब्दी के महान गणितज्ञ ज्योतिषविद / खगोलविद माने जाते है। यह कुसुमपुर के निवासी थे। इन्होने आर्यभट्टीयम नामक ग्रन्थ लिखा। जिसके चार भाग थे।

1. गणितपाद
2. काल क्रिया पाद
3. गोलपाद
4. दशगति का पाद

आर्य भट्ट प्रथम ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने कहा की पृथ्वी गोल है। तथा सूर्य के चारो ओर घूर्णन करती है इसी कारन दिन और रात बनते है। आर्यभट्ट ने सबसे पहले ग्रहण के बारे में बताया। उन्होंने दशमलव पद्दति, जीवा का मान, व पाई का मान 3.14 बताया।

वराहमिहिर : इन्होने बारह राशियों का सिद्धांत दिया। इन्होने कुछ ग्रन्थ लिखे है जैसे पंचसिद्धान्तिक , वृहज्जातक, लाघुज्जातक, वृहतसंहिता। वराहमिहिर ने पहली बार पृथ्वी की आकर्षण शक्ति की बात कही।
ब्रम्हगुप्त : इसके ग्रन्थ - ब्रम्हसिद्धान्तिका , खंड खाद्यक। ब्रह्मगुप पहले ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के बारे में बताया।
अमरसिंघ : अमरकोश
विष्णु शर्मा : पांच तंत्र => सर्वाधिक भाषाओ में अनुवादित।
वात्स्यायन : कामसूत्र।
शूद्रक : मृच्छकटियम (मिटटी की गाड़ी)

भारत का इतिहास - अध्याय 6

(मध्यकालीन भारत: सल्तनत काल)

पृष्टभूमि : अरब देश में इस्लाम धर्म की स्थापना मोहम्मद हजरत के द्वारा की गयी। इनका जन्म 570 ई. में हुआ। इनके पिता का नाम अब्दुल्ला माता का नाम अमीना। तथा पुत्री का नाम फातिमा तथा दामाद का नाम अली था। हजरत मोहम्मद को 612 ई. में ज्ञान की प्राप्ति हुई। इन्होने **622 ई. में हिजरी सम्वत की स्थापना**की। यह इन्होने मक्का से मदीना जाने के उपलक्ष में चलाया। 632 ई. में इनकी मृत्यु हो गई। मृत्यु होने के साथ ही। इस्लाम धर्म 2 भागो में विभाजित हो गया - शिया व सुन्नी।

सर्वप्रथम सुन्नी संप्रदाय के लोगो ने अबूबक्र को अपना खलीफा नियुक्त किया तथा शिया सम्बंधित लोगो ने मोहोम्मद साहब के दामाद अली को अपना खलीफा नियुक्त किया।

671 ई. में खलीफा के **पद का राजनैतिकरण** कर दिया गया। इस्लाम धर्म के सर्वोच्च प्रमुख को खलीफा कहा जाने लगा।

अरबो का आक्रमण

कारण : अरब ईरान के प्रांतपाल अल हज्जाज व वहा के खलीफा वालिद को श्रीलंका के शासको ने 8 जहाज रत्न आभूषणों से भर कर भेजे जिन्हे देवल थट्टा के समुंद्री किनारे पर लुटेरों द्वारा लूट लिया गया। इसपर सिंध के शासक दाहिर सेन ने कोई कार्यवाही नहीं की।

भारत पर सर्वप्रथम अरब आक्रमणकारियों ने आक्रमण किये, यह पहले मुस्लिम थे।

सिंध का शासक रायसहस जो की एक शूद्र था, इसकी हत्या एक चच नामक ब्राह्मण ने की तथा ब्राह्मणाबाद नामक नगर बसाया और सिंध पर एक हिन्दू साम्राज्य की स्थापना की। सिंध की राजधानी आलोर जो की वर्त्तमान में रहिरा है। दाहिर द्वारा अलहज्जाज को समुद्री लुटेरों पर कार्यवाही करने से मना करने के बाद हज्जाज ने दाहिर के उप्पर दो बार आक्रमण किये परन्तु वह सफल नहीं हो सका।

NOTE: अल हज्जाज ईरान का प्रांतपाल था तथा उस समय अरब का खलीफा वालिद था इन दोनों के कहने पर ही 711 ई. में मोहम्मद बिन कासिम ने सर्वप्रथम देवल पर आक्रमण किया।

712 ई. में मोहम्मद बिन कासिम ने **सिंध के शासक** दाहिर पर आक्रमण किया। इस आक्रमण में दाहिर की मृत्यु हुई तथा दाहिर की विधवा पत्नी रानी बाई ने अग्नि का वरण करलिया जो की मध्यकालीन भारत का प्रथम जोहर माना जाता है। कासिम ने रवार का युद्ध जितने के बाद दाहिर के पुत्र जय सिंह पर आक्रमण किया वह भाग निकला। किले में उपस्तिथ दाहिर की दूसरी पत्नी लाडोदेवी व उसकी दो पुत्रियों सूर्या देवी व पारमल देवी को बंधक बना लिया। इन दोनों पुत्रियों को कासिम ने बाद में खलीफा वालिद की सेवा में भेज दिया। वालिद ने इन दोनों के बहकावे में आकर कासिम को मृत्यु दंड दे दिया। इस समस्त घटना का विवरण चचनामा में मिलता है।

NOTE : चचनामा की रचना कासिम के किसी अज्ञात सैनिक के द्वारा की गयी परन्तु इसका बाद में फ़ारसी भाषा में अनुवाद - **मु. अली बिन अबू बक्र काफी** ने किया। तथा इसका अंग्रेजी भाषा में अनुवाद **U. M. Dawood Pota** ने किया।

713 ई. में कासिम ने मुल्तान के उप्पर आक्रमण किया इस मुल्तान आक्रमण से उसे बहुत अधिक मात्रा में सोना प्राप्त हुआ। अतः उसने मुल्तान का नाम बदलकर सोने का नगर रख दिया।

कासिम ने सिंध विजय के बाद। जजिया कर लगाया तथा दिरहम नामक एक नयी मुद्रा प्रचलित की। जजिया कर ब्राह्मण, स्त्रियों, अनाथ बालको व अपांग लोगो से नहीं वसूला जाता था। भारत में खजूर की खेती व ऊट अरबो की देन है

तुर्को का आक्रमण :

कारण: भारत की अतुल लूटना

कब: 10 वी शताब्दी में

कौन: सुबक्तगीन , गजनी, गौरी

कहाँ: गजनी (अफगानिस्तान)

संस्थापक: अलप्तगीन 962 ई.

सुबक्तगीन (977 ई. – 997 ई.) :

यह अलप्तगीन का गुलाम था जिसने 977 ई. में यामिनी वंश की स्थापना की, एवं गजनी की राजगद्दी पर बैठा।

पंजाब के शासक जयपाल ने 986-87 ई. में एक विशाल सेना लेकर सुबक्तगीन पर आक्रमण किया परन्तु वह पराजित हो गया और संधि कर के पुनः पंजाब लौट आया।

पंजाब लौटने के बाद उसने संधि का उल्लंघन किया क्युकी अजमेर दिल्ली व कालिंजर के शासको ने जयपाल को युद्ध में सहयोग देने का वायदा किया। इस पर सुबक्तगीन ने अपनी विशाल सेना लेकर जयपाल पर आक्रमण किया और इन चारो शासको की संयुक्त सेना पराजित कर लिया। एक बार पुनः संधि हुई तथा संधि के फल स्वरुप पेशावर व लगमान के क्षेत्र सुबुक्तगीन को दिए गए। 998 ई. में सुबक्तगीन की मृत्यु हो गयी।

महमूद गजनवी (998 -1030 ई.) :

सुबक्तगीन ने अपने बड़े पुत्र स्माइल को राजगद्दी पर बिठाया परन्तु महमूद ने स्माइल को मार डाला और स्वयं शासक बन बैठा।

जन्म : 1 नवंबर 971

उपाधि : यामीन-उल-दौला (साम्राज्य का दाहिना हाथ), यामीन-उल-उल्ला (मुस्लिमो का संरक्षक)

पहला ऐसा तुर्क शासक जिसने भारत पर कुल 17 बार आक्रमण किया। इरफ़ान हबीब ने लिखा हे की उसका उद्देश्य केवल धन लूटना था। न की साम्राज्य विस्तार करना। गजनवी के आक्रमण के समय सिंध व मुल्तान पर अब्दुल फ़तेह दाऊद का शासन था

गजनवी ने निम्न आक्रमण किये

- **1st आक्रमण :** 1001 ई. - पेशावर
- **2nd आक्रमण :** 1001 ई. - पंजाब (हिन्दू शासक जयपाल) - मुस्लिम इतिहासकारो ने जयपाल को ईश्वर का शत्रु कहा है
- **3rd आक्रमण :** 1004 ई. - कच्छ (शासक वजीरा)
- **4th आक्रमण :** 1005 ई. - मुल्तान (दाऊद) गजनवी ने यह आक्रमण इसलिए किया क्युकी दाऊद शिया मुस्लमान था तथा उसने महमूद की सेना को अपने राज्य से निकलने नहीं दिया।
- **5 वा आक्रमण :** 1007 ई. - ओहिन्द मुल्तान को जित कर गजनवी ने वहा का शासक जयपाल के पुत्र सुखपाल (राज्यपाल) को बना दिया जिसने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था। इस्लाम धर्म स्वीकार करने के बाद वह नौशाशाह के नाम से विख्यात हुआ।
- **6th आक्रमण :** 1008 ई. नगरकोट(नेपाल) : यहाँ के हिन्दू शासक आनंद पाल को पराजित किया। इसकी इस विजय को मूर्तिवादी विचारधारा पर पहली सफलता माना जाता है।
- **7 वा आक्रमण :** 1009 ई. - अलवर, नारायणपुर : यहाँ के हिन्दू मंदिरो को भी तोड़ा गया।
- **8 वा आक्रमण :** 1010 ई. - मुल्तान
- **9 वा आक्रमण :** 1013 ई. - महमूद ने थानेश्वर(हरियाणा) पर आक्रमण किया
- **10 वा आक्रमण :** 1013 ई. - नंदन दुर्ग (नेपाल) : वहा के शासक त्रिलोचन पाल को पराजित किया।
- **11 वा आक्रमण :** 1015 ई. - नेपाल :त्रिलोचन पाल के पुत्र भीम पर आक्रमण किया।
- **12 वा आक्रमण :** 1018 ई. मथुरा और कन्नौज - मथुरा आक्रमण पर उत्थवि लिखता है की महमूद ने ऐसा सहर जीता जिसका वैभव स्वर्ग जैसा था। कन्नौज के शासक राज्यपाल ने बिना लाडे ही गजनवी के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। मथुरा के शासक विद्यादाहर ने राज्यपाल के आत्मसर्मपण से क्रोधित हो कर ग्वालियर की सहायता से राज्यपाल को मार डाला। गजनवी ने विद्याधर के उप्पर आक्रमण किया विद्याधर पराजित हुआ तथा 1019 में इन दौने के बिच संधि हो गयी
- **13 वा आक्रमण :** 1020 - बुंदेलखंड (उप्र)
- **14 वा आक्रमण :** 1021 - ग्वालियर और कालिंजर पर आक्रमण किया। यहाँ के शासक गौंडा ने महमूद के साथ संधि कर ली।
- **15 वा आक्रमण :** 1024 जैसलमेर व गुजरात के चिकलोदर पर किया गया।
- **16 वा आक्रमण :** 1025 सोमनाथ आक्रमण - यह गजनवी का सबसे प्रसिद्ध आक्रमण माना जाता है। इसने सोमनाथ मंदिर को लुटा तथा शिवलिंग के टुकड़े टुकड़े करवा दिया। इन टुकड़ो को उसने जमीं मस्जिद गजनी की सीढ़ियों पर जड़वा दिया। इस समय गुजरात का शासक भीम प्रथम था। इस आक्रमण के दौरान लगभग 50,000 ब्राह्मणो को मार दिया गया।
- **17 वा आक्रमण :** 1027 - यह महमूद का अंतिम आक्रमण था जो की मुल्तान व सिंध के जाटो के खिलाफ था। जिस समय महमूद सोमनाथ मंदिर को लूट कर जा रहा था। उस समय इन जाटो ने महमूद को बड़ा परेशान किया

NOTE : सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण चालुक्य शासक भीमपाल प्रथम द्वारा 1026 में करवाया गया। इसके बाद इसी वंश के शासक कुमारपाल द्वारा 1196 में पुनर्निर्माण किया। 1765 के ब्रिटिश साम्राज्य में अहिल्याबाई होल्कर पुनर्निर्माण ने करवाया। 1950 (स्वतंत्र भारत) में सरदार पटेल ने इसका पुनर्निर्माण करवाया।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य :

महमूद गजनवी का समकालीन इतिहासकार अलबरूनी था जिसने अरबी भाषा में किताब-उल-हिन्द की रचना की। जिसमे इतिहास भूगोल विज्ञान व गणित का वर्णन मिलता है।

अलबरूनी प्रथम ऐसा मुस्लिम था जिसने **पुराणों का अध्ययन** किया

मध्य काल में सुलतान की उपाधि धारण करने वाला प्रथम शासक महमूद गजनवी था। गजनवी को बूत-शिकन (मुर्तिया तोड़ने वाला) कहा जाता है।

गजनवी के आक्रमण का सबसे बड़ा परिणाम यह हुआ की पंजाब स्थायी रूप से तुर्को के अधिकार में चला गया।

गजनी वंश का अंतिम शासक खुशरव महमूद था जिसे 1192 ई. में गौरी ने कैद किया और मार डाला।

गौरी वंश :

गजनी वंश के पतन के बाद एक नविन राजवंश का उड़ाई हुआ। जिसे गौर वंश कहा जाता है। यह क्षेत्र गजनी व हैरत के बिच का पहाड़ी क्षेत्र था। यहाँ के निवासी गौरी कहलाते थे। 1155 ई. में अलाउद्दीन हुसैन ने गजनी पर आक्रमण कर उसे बुरी तरह से लुटा तथा गजनी में आग लगा दी। इसी कारन उसे जहाँ-सौज (विष्व को जलने वाला कहा जाता है।)

1163 में गयासुद्दीन मुहम्मद बिन साम ने गजनी के पास एक स्वतंत्र गौर राज्य की स्थापना की। इसने 1173 में गजनी में बचे हुए तुर्को को भगा दिया। तथा गजनी का शासक अपने भाई मजुइद्दीन शिहाबुद्दीन मुहम्मद बिन साम को गजनी का शासक बना दिया। यही शिहाबुद्दीन आगे चल कर मोहम्मद गौरी के नाम से विख्यात हुआ।

मोहम्मद गौरी :

ने 1175 में भारत के मुल्तान पर आक्रमण किया यह इसका भारत पर प्रथम आक्रमण था। भारत पर आक्रमण का उद्देश्य साम्राज्य विस्तार था।

1176 ई. में उच्छ (सिंध) पर आक्रमण किया और विजय प्राप्त की।

1178 ई. गुजरात (अबू का युद्ध) : शासक भीम देव II / मूलराज द्वितीय - इन्होने अपनी माता नायका देवी के नेतृत्व में युद्ध लड़ा और गौरी को बुरी तरह से पराजित किया। भारत में यह गौरी की प्रथम हार थी।

गौरी ने **1179 ई.** , **1181 ई.** , **1189 ई.** , में क्रमशः पेशावर लाहौर व भटिंडा पर आक्रमण किया तथा विजय प्राप्त की।

तराइन का प्रथम युद्ध 1991 ई. : तराइन भटिंडा व थानेश्वर पड़ता है। यह युद्ध पृथ्वीराज तृतीय व मोहम्मद गौरी के बिच लड़ी गई। पृथ्वीराज विजयी रहा।

तराइन का द्वितीय युद्ध 1992 ई. : पृथ्वीराज तृतीय व गौरी के बिच - गौरी विजयी रहा।

इस युद्ध से पूर्व, गौरी ने अपने राजदूत के रूप में किवाम- उल-मुल्क को भेजा ताकि पृथ्वीराज को अधीनता स्वीकार करवाई जाये। इस युद्ध के समय गौरी की सेना के साथ ख्वाजा मोईनुद्दीन चिस्ती भारत आए और भारत में चिस्ती संप्रदाय की स्थापना करी। इस युद्ध ने भारत पर तुर्की सत्ता की नीव दाल ली।

चंदवार का युद्ध 1194 : कन्नौज के शासक जयचंद गहड़वाल को गौरी ने पराजित किया और मार डाला। भारत में गौरी को तुर्की(मुस्लिम) साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।

NOTE : गहड़वाल के कहने पर ही गौरी ने पृथ्वीराज पर आक्रमण किया था।

NOTE : चंदवार के युद्ध के बाद गौरी ने अपनी सेना का नेतृत्व कुतुबुद्दीन ऐबक (गुलाम) को सौपा तथा इंद्रप्रस्थ से मध्य ऐशिया चला गया।

अंतिम समय में खोखरो ने विद्रोह किया जिसे दबाने के लिए गौरी पुनः भारत आया परन्तु वापस गजनी जाते समय 15 - मार्च - 1206 को इसे जाटो ने सिंधु नदी के किनारे देयमक नामक स्थान पर मार डाला।

गौरी कहता था की किसी सुल्तान की एक या दो संतान हो सकती है परन्तु मेरे हजारो-लाखो संताने है, जो की मेरे तुर्की गुलाम है, मेरे मरने के बाद ये मेरे नाम का खुतबा पढ़ेंगे।

गौरी के सिक्को पर एक तरफ लक्ष्मी का अकन तथा दूसरी तरफ कलमा छापा हुआ होता था। इस प्रकार के सिक्के को देहलीवाल का सिक्का कहा जाता था।

दिल्ली सल्तनत
(1206 ई. - 1526 ई.)

गुलाम वंश / मामलुक वंश

1 कुतुबुद्दीन ऐबक (1206 ई. – 1210 ई) :

चंदवार के युद्ध के बाद गौरी ने इसे अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था। अतः गौरी की मृत्यु के बाद जून 1206 में लाहौर के स्थानीय लोगो के अनुरोध पर गद्दी पर बैठा, तथा लाहौर को ही अपनी राजधानी बनाया। ऐबक के माता पिता तुर्किस्तान के तुर्क थे। ऐबक का शाब्दिक अर्थ चन्द्रमा का स्वामी होता था।

ऐबक की निम्न लिखित उपाधिया थी

1. कुरान खां
2. हातिमताई
3. लाखबक्श

ऐबक ने सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की बल्कि उसने मलिक व सिपहसलार की उपाधि के साथ ही संचालित किया। 1208 में गयासुद्दीन ने ऐबक को दासता से मुक्त कर दिया।

ऐबक ने दिल्ली में कुवैत-उल-इस्लाम नामक मस्जिद का निर्माण करवाया जो की भारत में प्रथम मुस्लिम मस्जित मानी जाती है। इसने ढाई दिन के झोपड़े का निर्माण करवाया।

इसने **ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी** के नाम पर **कुतुब मीनार** का निर्माण करवाया जो की 5 मंजिला ईमारत थी। प्रथम मंजिल का निर्माण कुतुबुद्दीन द्वारा, दूसरी से चौथी का इल्तुतमिश के द्वारा व पांचवी का फ़िरोज़ शाह तुगलक के द्वारा करवाया गया।

ऐबक ने दिल्ली के किले के पास **राय पिथोरा** नामक एक नगर बसाया जो की मध्य काल में निर्मित प्रथम नगर माना जाता है।

इसकी मृत्यु 1210 में चौगान खेलते हुए। घोड़े से गिर कर हो गयी।

2 इल्तुतमिश (1211 ई. 1236 ई.)

कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु के बाद आराम शाह शासक बना परन्तु वह अयोग्य था। इसी कारण उसे पराजित कर ऐबक का गुलाम **शमशुद्दीन इल्तुतमिश** गद्दी पर बैठा। अतः इल्तुतमिश को गुलामो का गुलाम कहा जाता है।

इल्तुतमिश "इल्बारी तुर्क" था। ऐबक ने ग्वालियर पर विजय प्राप्त करने के उपरांत इसे ग्वालियर का सूबेदार नियुक्त किया था। तथा बाद में इसे बदायू का सूबेदार बना दिया गया। अतः सुल्तान बनने से पूर्व वह बदायू का सूबेदार था।

सर्वप्रथम इसने अपनी राजधानी को, लाहौर से दिल्ली स्थानांतरित किया। अतः इसे दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।

इसने बगदाद के खलीफा बिल्ला मंसूरी से वैधानिक पत्र प्राप्त किया तथा उसके नाम के सिक्के चलवाये। अतः इल्तुतमिश दिल्ली का प्रथम वैधानिक और सम्प्रभुता संपन्न सुल्तान बना

इसकी उपाधिया -

1. सुल्तान
2. नासिर-अमीर-उल-मोमनीन

इल्तुतमिश के विरोधी -

1. यासिर(ताजुद्दीन) एल्दौज : यह ऐबक का ससुर व गुलाम था, तथा गजनी का सुल्तान था। इल्तुतमिश ने ख्वारिज्म शाह की मदद से तराइन के तृतीया युद्ध(1215 ई.) में एल्दौज को पराजित कर बदायू के किले में कैद कर लिया, तथा बाद में मार डाला।
2. नसीरुद्दीन कुबाचा : यह भी ऐबक का गुलाम व जीजा था , इल्तुतमिश ने 1227-28 ई. में इसके ऊपर आक्रमण किया तथा सिंध व मुल्तान पर अधिकार कर उसे दिल्ली सल्तनत में मिला दिया। कुबाचा ने सिंधु नदी में डूब कर आत्महत्या कर ली।

NOTE : 1221 में मंगोल आक्रांता चंगेज खा ने ख्वारिज्म शाह पर आक्रमण किया और उसे पराजित कर दिया। शाह का पुत्र जलालुद्दीन मंगबर्नी गजनी से अपनी जान बचा कर भारत भाग आया। उसने इल्तुतमिश से शरण मांगी परन्तु इल्तुतमिश ने भारत को मंगोल आक्रमण से बचने के लिए उसे शरण देने से मना कर दिया। चंगेज खान मंगबर्नी का पीछा करते हुए सिंधु नदी के तट तक पहूच गया। परन्तु भारत पर आक्रमण नहीं किया।

NOTE : चंगेज खा का मूल नाम तमूजिन अर्थात लोहकर्मी था। यह अपने आप को ईश्वर का अभिशाप कहने पर गर्व महसूस करता था। वह इल्तुतमिश का समकालीन था।

1226 ई. इसने रणथम्बोर व जालोर के चौहानो को पराजित किया। इसके बाद इसने क्रमशः। बयाना, नागौर, सांभर, व अजमेर के उप्पर भी अधिकार कर लिया।

उसने 1234-35 ई. के दौरान भिलसा (मप्र) के हिन्दू मंदिरो को तोड़ा। तथा उज्जैन के महाकाल मंदिर को भी लूट लिया।

प्रशासन सुधार :

इल्तुतमिश ने **इक्ता प्रणाली** चलाई जो की वेतन के बदले दी जाने वाली भूमि होती थी।

शासन को सुचलित रूप से संचालित करने हेतु अपने चालीस वफादार गुलामो का एक समूह बनाया। जिसे बरनी ने "गुलाम चालीसा" या तुरकन-ए-चालीसा(चहलगनी)

Important : प्रथम तुर्क शासक था जिसने शुद्ध अरबी सिक्के चलाये तथा सिक्के पर टकसाल का नाम लिखना अनिवार्य करदिया।

दो प्रकार के सिक्के चलाए:

1. चाँदी का टंका
2. ताम्बे का जीतल

NOTE : ग्वालियर विजय के बाद इल्तुतमिश ने अपनी पुत्री रजिया का नाम चाँदी के टंके पर अंकित करवाया और उसे अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। इल्तुतमिश के महल के आगे संगमरमर के दो शेरो की मूर्ति लगी थी। तथा इनके गले में घंटी बंधी हुई होती थी, जिसे बजने पर फरियादी को तुरंत न्याय मिलता था।

इल्तुतमिश के निर्माण कार्य:

1. दिल्ली में कुतुबमीनार का निर्माण पूरा करवाया
2. सबसे बड़े बेटे नसीरुद्दीन महमूद की मृत्यु(1229) होने पर दिल्ली में मदरसा-ए-नासिरी बनवाया जिसे सुल्तान गढ़ी का मकबरा भी कहते है. यह भारत का प्रथम मकबरा था।
3. नागौर में अतारकिन का दरवाजा बनवाया - (NOTE : इससे प्रेरित हो कर अकबर ने गुजरात विजय के बाद बुलंद दरवाजा बनवाया जो फतेहपुर सिकरी में है।)
4. बदायू (उप्र) में हौज-ए-शम्सी (शम्सी ईदगाह) का निर्माण करवाया।

1236 में बामयान (बनयान) अभियान पर अचानक इसकी तबियत ख़राब हो गयी यह पुनः दिल्ली लौट आया। और वही उसकी मृत्यु हो गयी। इल्तुतमिश का मकबरा दिल्ली में बनाया गया। स्क्रीच शैली (इंडो + ईरानी) में निर्मित भारत का यह प्रथम मकबरा माना जाता है।

इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद अमीरो ने इल्तुतमिश के छोटे बेटे रुकनुद्दीन को शासक बना दिया, जो की अयोग्य शासक था। शासन की बागडोर वास्तविक रूप से तुर्कान शाह के हाथो में थी, जो की तनाशाह महिला थी। रजिया सुल्ताना ने शुक्रवार की नमाज़ के दिन लाल वस्त्र पहन कर तुरकन शाह के विरुद्ध लोगो से सहायता मांगी। लोगो ने रज़िया को सुल्ताना बना दिया।

3 रज़िया सुल्ताना 1236 ई. से 1240 ई. :

रज़िया को लोगो का समर्थन प्राप्त था लेकिन बदायू व लाहौर के गवर्नर इसके विरोधी थे सबसे बड़ा विरोधी इल्तुतमिश का वज़ीर मौहम्मद जुनैदी था। रज़िया के समय सुल्तान व तुर्क आमीरो के बिच संगर्ष प्रारम्भ हुआ जो की बलबन के सत्तारूढ़ होने तक चला।

रज़िया सुल्ताना राजगद्दी पर बैठते समय पुरुषो के परिधान (कुबा व कुलाह) पहन कर बैठती थी।

रज़िया ने तुर्को को अपने पक्ष में करने के लिए शक्तिशाली तुर्क अल्तुनिया से विवाह किया परन्तु अल्तुनिया व रज़िया दोनों की हत्या 1240 में कैथल हरियाणा में कर दी गयी।

रज़िया सुल्ताना को भारत में मुस्लिम इतिहास की प्रथम सुल्ताना माना जाता है। इसने उमदत-उल-निस्वा की उपाधि धारण की थी।

4 मुइनुद्दीन बहरामशाह (1240 ई. – 1242 ई.)

1241 में मंगोलो का आक्रमण हुआ।

इसने नायब-ए-मुमलकत का पद सृजित किया।

1242 में इसकी हत्या कर दी गयी।

5 अलाउद्दीन मसूद शाह (1242 ई. – 1246 ई.)

यह रुकनुद्दीन का पुत्र था। इसने अपनी समस्त शक्तिया चालीसा समूह को सौप दी।

6 नसीरुद्दीन महमूद (1246 ई. – 1265 ई.)

यह इल्तुतमिश पोता था बलबन के सहयोग से मसूद शाह को पराजित कर दिया और स्वयं शासक बन गया, परतु वास्तविक शक्तिया बलबन के हाथो में थी, क्युकी बलबन ने अपनी पुत्री का विवाह नासीरुद्दीन महमूद के साथ किया। महमूद ने बलबन को **उलुग खाँ** की उपाधि दी। नासीरुद्दीन महमूद धार्मिक प्रवर्ति का व्यक्ति था। वह खली समय में कुरान की नक़ल करता था।

1265 में महमूद की मृत्यु हो गयी, और बलबन शासक बना

7 बलबन (1265 ई. - 1287 ई.)

बलबन का मूल नाम बहुदीन था। यह भी इल्तुतमिश की भाती इल्बारी तुर्क था। शासक बनने से पूर्व उसने महमूद के वज़ीर के रूप में बिस वर्ष तक कार्य किया। इस दौरान वह सुलतान न होते हुए भी सुल्तान के छत्र का प्रयोग करता था।

बलबन का राजत्व का सिद्धांत **लोह एवं रक्त** निति पर आधारित था। इसके अनुसार सुल्तान संसार में ईश्वर का प्रतिनिधि होता है तथा उसमे देवत्व का अंश होता है उसकी समानता कोई नहीं कर सकता

बलबन ने सुल्तान की प्रतिष्ठा बढ़ाने हेतु चालीसा का दमन बड़े क्रूर तरीके से किया। उसने बदायू के गवर्नर बकबक खाँ को जनता के सामने लोगो से पिटवाया तथा कोड़े लगवाए। अवध के गवर्नर हैवत खाँ को भी कोड़े लगवाए। और बंगाल के अमिन खाँ को अवध के फाटक पर लटकवा दिया।

बलबन ने अपने पद की प्रतिष्ठा बढ़ने के लिए दरबार में कुछ गैर इस्लामिक प्रथाएं शुरू की। जैसे सिजदा, पबौस(पायबोस) तथा फ़ारसी उत्सव नवरोज को मनाना प्रारम्भ किया।

बलबन ने सैनिको को दी हुई जगीरो की जांच करवाई तथा अयोग्य व वृद्ध सैनिको को पैंशन देकर सेवा से मुक्त कर दिया

सामंतो की गतिविधियों पर ध्यान रखने हेतु उसने दीवान-ए-बरिद नामक नए गुप्तचर विभाग की स्थापना की.

मंगोलो के आक्रमण से बचने के लिए। इसने उत्तरी पश्चिमी सिमा पर किलो की एक श्रृंखला बनवा दी तथा बलबन ने सम्पूर्ण सीमांत प्रदेशो को **दो भागो** में विभाजित कर दिया।

1. सुनम-समाना - शासक बुगरा खान को बनाया।
2. मुल्तान-सिंध-लाहौर - शासक अपने बड़े बेटे महमूद खाँ को बनाया परन्तु 1286 में हुए मंगोल आक्रमण में महमूद खाँ मारा गया। बलबन ने उसे शहीद की उपाधि प्रदान की। वह महमूद की मृत्यु से इतना टूट गया की एकांत में जाकर फुट फुट कर रोटा था।

अमीर खुसरो (तोता-ए-हिन्द) व हसन देहलवी (भारत का सादी) ने अपना साहित्यिक जीवन महमूद खाँ के शासन काल के दौरान किया।

मध्यकाल के दौरान अमीर खुसरो व हसन देहलवी दोनों ही निजामुद्दीन ओलिया के शिष्य थे। ऐसा माना जाता है की निजामुद्दीन ओलिया ने मध्यकालीन भारत के दौरान दिल्ली सल्तनत के 7 शासको का शासन काल देखा व खुसरो ने 8 शासको का शासन काल देखा।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य :

अपने पुत्र महमूद की मृत्यु के कारण बलबन इतना टूट गया की वह उसकी मृत्यु का कारण बना।

बलबन की मृत्यु पर इतिहासकारो ने लिखा हे की लोगो ने अपने कपडे फाड़ डाले। तथा सुल्तान के शव को कब्रिस्तान ले जाते समय अपनी सर पर धूल फेकि, तथा 40 दिन तक बिना बिस्तर के जमीं पर सोए।

बलबन साधारण(गरीब) व तुच्छ व्यक्तियों से नहीं मिलता था। वह कहता था की जब में गरीब व्यक्ति को देखता हु तो मेरे शरीर की प्रत्येक नाड़ी क्रोध से उत्तेजित हो जाती है।

बलबन प्रथम भारतीय मुसलमान शासक था। जिसने अपने आप को जिल्ले इलाही की उपाधि दी।

1279 ई. में बलबन ने ख्वाजा नामक अधिकारी की नियुक्ति की जो की इक्तेदारो पर नियंत्रण रखता था।

बलबन की मृत्यु के बाद उसका अयोग्य (पोता) **पौत्र कैकुबाद** उत्तराधिकारी बना जिसे लकवा हो जाने पर अमीरो ने कैकुबाद के पुत्र **शम्सुद्दीन क्यूमर्स** जो की शिशु ही था को गद्दी पर बिठाया, क्युकी बूगरा खाँ केवल सूबेदारी से ही संतुष्ट था।

जलालुद्दीन फिरोज खिलजी जो की कैकुबाद का वज़ीर था, इसने सबसे पहले कैकुबाद उसके बाद उसके पुत्र क्यूमर्स की हत्या कर दिल्ली सल्तनत पर खिलजी राज वंश की स्थापना की

खिलजी राजवंश (1290 ई. - 1320 ई.):

खिलजी वंश का संस्थापक जलालुद्दीन फ़िरोज़ खिलजी था। खिलजी काल को खिलजी क्रांति के नाम से भी जाना जाता है।

1 जलालुद्दीन फ़िरोज़ खिलजी(1290 ई. - 1296 ई.)

कैकुबाद की हत्या करने के बाद इसने किलोखरी के किले (दिल्ली) में अपना राज्याभिषेक करवाया।

उपाधि : शाइस्ता खाँ (कैकुबाद द्वारा दी गयी)

उपलब्धिया : किलोखरी को अपनी राजधानी बनाया। 70 वर्ष की आयु में शासक बना (सबसे वृद्ध शासक था)

शासन निति : आंतरिक निति (सबको प्रसन्न रखने की निति)

बलबन के एक रिश्तेदार **मालिक छज्जू** ने इसके खिलाफ विद्रोह किया। जलालुद्दीन ने अलाउद्दीन खिलजी को विद्रोह दबाने के लिए मनिकपुर भेजा अलाउद्दीन खिलजी ने छज्जू को पराजित कर दिया। परन्तु फिरोज ने उसे माफ़ करदिया।

NOTE: अलाउद्दीन का पहेली बार उल्लेख इसी अभियान में मिलता है। इस अभियान के बाद जलाल ने अल्लाउद्दीन खिलजी को मनिकपुर का सूबेदार बनाया।

जलाल ने ईरान के उलेमा सादीमौला को हाथियों के पैरो से कुचलवा कर मरवा डाला

जलालुद्दीन कहता था की मुसलमानो का रक्त बहाना उसके उसूलो के खिलाफ है।

जलालउद्दीन खिलजी के काल में मंगोलो का आक्रमण 1292 ई. में हुआ। यह आक्रमण अब्दुल्ला ने पंजाब के उप्पर किया जिसे अलाउद्दीन खिलजी ने पराजित कर दिया।

जल्लालुद्दीन फिरोज खिलजी ने मंगोलो को भी उदारता दिखाई, उसने चंगेज खां के वंशज उलुग खां के साथ अपनी बेटी का विवाह कर दिया। उलुग खा अपने 4000 साथियो के साथ दिल्ली और गुजरात के आसपास के क्षेत्रों में आकर बस गया, जिन्हे नविन मुस्लमान कहा जाता है।

1291 ई. रणथम्बोर आक्रमण:

शासक - हम्मीर देव , जलालुद्दीन खिलजी ने एक साल तक घेरा डाला अंत में जलाल व हम्मीर के बिच **झाईन का युद्ध** हुआ जिसमे जलालुद्दीन पराजित हुआ। जलालुद्दीन ने कहा की "मुस्लमान के सर के एक बाल की कीमत ऐसे 100 किलों से ज्यादा समजता हु"।

1292 ई. में मंडोर जोधपुर को जीता तथा इसे दिल्ली सल्तनत में मिला दिया गया।

1294 ई. में जलालुद्दीन ने अलाउद्दीन खिलजी को **मालवा व भिलसा के अभियान** पर भेजा। अलाउद्दीन सफल रहा। अलाउद्दीन ने उज्जैन धारानगरी के मंदिरो को लुटा व तुड़वा दिया।

1294 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने जलालुद्दीन की **अनुमति लिए बिना देवगिरि (महाराष्ट्र)** के शासक रामचंद्र यादव पर आक्रमण किया, और बेशुमार धन लुटा। जलाल के विष्वास पात्रो ने जलाल को पत्र लिख कर कहा की अलाउद्दीन खिलजी विशवासघाती है, उससे यह धन छीन लिया जाए।

NOTE: अलाउद्दीन खिलजी मध्य काल के दौरान प्रथम ऐसा शासक था। जिसने जलाल के शासन में पहेली बार दक्षिण भारत का अभियान किया।

1296 ई. में **अलाउद्दीन ने** अपने विश्वास पात्र **इख़्तियार हुद** की सहायता से **जलालुद्दीन को मार डाला॥**

अलाउद्दीन खिलजी ने जलाल के पुत्र अर्कली खां व उसके समस्त परिवार को मोत के घाट उतार दिया। जलालुद्दीन की विधवा पत्नी मलिका-ए-जहान ने अपने पुत्र कद्र खां को **रुकनुद्दीन इब्राहिम** के नाम से सुल्तान घोषित कर दिया परन्तु अलाउद्दीन ने इन्हे भी मार डाला।

इतिहास कार बरनी ने कहा की शहीद सुल्तान के चंदोबे(मुकुट) से अभी रक्त की बुँदे टपक ही रही थी की अलाउद्दीन ने खून टपकते हुए चंदोबे को अपने सिर पर धारण किया और अपने आप को सुल्तान घोषित कर दिया।

2 अलाउद्दीन खिलजी (1296 ई. – 1316 ई.):

जोधपुर के संस्कृत शिलालेख (ताम्रपत्र) में कहा गया है की, अलाउद्दीन के देवतुल्य शौर्य से यह धरती काँप उठी।

इसकी उपाधिया :

1. खलीफा का नायब
2. सिकंदर-ए-सानी (सिक्को में)
3. विश्व का सुल्तान
4. जनता का चरवाहा

राज्याभिषेक : बलबन के लाल महल में

सुल्तान बनने से पूर्व यह कड़ा का सूबेदार था। अलाउद्दीन के शासन काल में मंगोलो के सर्वाधिक 7 बार आक्रमण हुए

अल्लाउद्दीन खिलजी केअभियान :

गुजरात अभियान (1299 ई.): अल्लाउद्दीन ने अपने 2 सेनापतियों **उलुग खां** व **नुसरत खां** को सेनापति बना कर गुजरात के शासक **कर्ण बघेल** के खिलाफ यह अभियान किया। बघेल अपनी पुत्री देवल के साथ देवगिरि भाग गया। बघेल की पत्नी कमला देवी दोनों सेनापतिओ को मिली, जिसे उन्होंने अलाउद्दीन को सौप दिया। अलाउद्दीन ने कमला देवी के साथ विवाह किया। यह उसकी सबसे प्रिय रानी बानी।

गुजरात अभियान के दौरान ही नुसरत खाँ ने मालिक काफूर को जो की एक हिन्दू था, 1 हजार दीनार में ख़रीदा अर्थात काफूर को 1000 दिनारी कहा जाता है।

जैसलमेर अभियान 1299 ई. : अलाउद्दीन ने राव दुधा व उसके सहियोगी तिलक सिंह को पराजित किया।

रणथम्बोर आक्रमण 1301 ई. : शासक हम्मीर देव को पराजित किया। इस अभियान के दौरान उलुग खान व नुसरत खाँ सेनापति थे। नुसरत को हम्मीर ने मार डाला। हम्मीर की पत्नी रंग देवी ने राजपूत महिलाओ के साथ अग्नि जोहर किया। हम्मीर की पुत्री देवल दे ने पद्मला तालाब में कूद कर जल जोहर किया।

NOTE: रणथम्बोर जोहर फ़ारसी साहित्य में उल्लेखित प्रथम जोहर है। अमिर खुसरो के तारीख-ए-अलाइ (खजाइन-उल-फुतुह) में इसका उल्लेख मिलता है।

हम्मीर के 2 विद्रोही रणमल व रतिपाल को अल्लाउद्दीन खिलजी ने मार डाला।

चित्तौड़ अभियान -1303 ई. : शासक : रावल रतन सिंह

कारण : सामरिक महत्व + पद्मिनी का अद्भुत सौन्दर्य

एक माह तक किले का घेरा डाला। फिर रतन सिंह को बंदी बना लिया। गोरा व बदल ने वापस छुड़ाया। परन्तु स्वयं शहीद हो गए। पद्मिनी ने 16000 राजपूत महिलाओ के साथ जोहर कर लिया। अलाउदीन ने 30000 राजपूतो को मौत के घाट उतर दिया।

चित्तोड़ किले का नाम अपने पुत्र खिज्र खाँ के नाम पर खिज्राबाद रखा तथा उसे वहा का शासक नियुक्त किया। स्वयं दिल्ली लौट आया। कुछ समय बाद ख़िज्र खाँ को वापिस दिल्ली बुलाया और राजपूत शासक मालदेव को वहा का प्रशासन सौपा।

NOTE: अमीर खुसरो इस अभियान में साथ मे था तथा उसने पद्मिनी के जोहार का उल्लेख अपने ग्रन्थ खुजाइन-उल-फुतुह में किया, जिसे बाद में 1540 में **मालिक मोहम्मद जायसी** ने अपने ग्रन्थ **पद्मावत** में भी लिखा।

सौख (मथुरा) अभियान 1304 : अलाउद्दीन खिलजी ने सौख के शासक नाहर सिंह व उसके सहयोगी अनंगपाल जाट को पराजित किया। तथा बृजभूमि के अनेक हिन्दू मंदिरो को तोड़ दिया। वहा पर मस्जिद का भी निर्माण करवाया। अलाउद्दीन की इस विजय का उल्लेख मथुरा से प्राप्त एक फ़ारसी लेख में मिलता है, जिसमे उसकी 2 उपाधिओ - **अलाउद्दीन शाह** व **सिकंदर-ए-सनी** का उल्लेख भी मिलता है।

मालवा विजय 1305 : यहाँ का शासक महलकदेव

अलाउद्दीन के सेनापति आइन-ए-मुल्क (मुल्तान का सूबेदार) ने महलकदेव को पराजित किया।

सिवाना अभियान 1308 ई. : अलाउद्दीन खिलजी के सेना पति कमालुद्दीन गर्ग ने सातल देव को पराजित किया

जालोर अभियान 1311 ई : 1304 ई में जालोर के शासक कान्हड़देव ने अलाउद्दीन की अधीनता स्वीकार कर ली, परन्तु 1311 तक अपने आप को पुनः स्वतंत्र कर लिया। अलाउद्दीन ने कमालुद्दीन गर्ग के नेतृत्व में सेना भेजी, कान्हड़ पराजित हुआ।

NOTE: जालोर विजय के साथ ही अलाउद्दीन का राजस्थान अभियान पूर्ण हो गया।

NOTE: नेपाल, असम व कश्मीर को छोड़ कर समस्त भारत अलाउद्दीन खिलजी के साम्राज्य का हिस्सा था।

दक्षिण के अभियान : सेनापति - मालिक काफूर। उद्देश्य - धन लूटना व कर वसूल करना। अप्रत्यक्ष शासन स्थापित किया।

वारंगल अभियान (प्रथम आक्रमण) : शासक - प्रताप रूद्र देव अलाउद्दीन के सेनापति - 1303 मालिक छज्जू पराजित हुआ। पर 1308 में मालिक काफूर विजय रहा।

1308 में प्रताप रूद्र देव ने अपनी सोने की मूर्ति बनवा कर उसे सोने की जंजीर के द्वारा गले में लटकाया तथा कोहिनूर हिरा अलउद्दीन को भेंट किया।

देवगिरि अभियान (1306 ई. - 1307 ई.) : शासक रामचंद्र यादव को काफूर ने पराजित किया। अलाउद्दीन ने इसके साथ अच्छा व्यहार किया तथा। एक लाख टंका व चांदी का चंदोबा देकर सम्मानित किया। तथा रायरयान की उपाधि प्रदान की।

1313 ई. में देवगिरि पर पुनः आक्रमण किया। वहा के शासक शंकर देव को मार डाला।

होयसेल अभियान (1310 ई): शासक वीर बल्लाल ने अलाउद्दीन की अधीनता स्वीकार कर ली।

मदुरा अभियान 1311 : यहाँ दो पण्डे भाइयो वीर व सुन्दर में उत्तराधिकार संघर्ष चल रहा था। सुन्दर ने काफूर से सहायता मांगी, तथा वीर को पराजित किया। परन्तु अलाउद्दीन की अधीनता स्वीकार करने से इंकार कर दिया। काफूर ने सम्पूर्ण मदुरा को लूट डाला

NOTE : यह धन प्राप्ति की दृष्टि से अलाउद्दीन का सबसे सफल अभियान था

NOTE : अलाउद्दीन ने अपने मित्र अलाउल मुल्क के कहने पर भारत विजय का विचार त्याग दिया।

विद्रोह: अलाउद्दीन ने खिलाफ सबसे बड़ा विद्रोह उसके भतीजे अकत खाँ व नविन मुसलमानो ने किया। इस विद्रोह को दबाने हेतु अलाउद्दीन ने 4 अध्यादेश जारी किये।

1. अमीरो को दी गयी जगीरो को जप्त कर लिया गया।
2. गुप्तचर प्रणाली का विकास किया गया।
3. दिल्ली में शराब निषेध कर दी।
4. अमीरो के आपसी मेल मिलाप व आपस में विवाह पर रोक लगा दी। उसके पूर्व सुल्तान से अनुमति लेना अनिवार्य कर दिया।

अलाउद्दीन खिलजी का प्रशासन

अलाउद्दीन खिलजी खलीफा की सत्ता में विश्वास नहीं रखता था। उसने खलीफा से अनुमति पत्र प्राप्त नहीं किया परन्तु अपने आप को खलीफा का नायब घोषित कर दिया। अलाउद्दीन खिलजी के शब्द ही कानून थे।

प्रशासनिक सुधर :

अलाउद्दीन खिलजी ने निम्नलिखित विभागों की स्थापना की -

1. दिवान-ए-रियासत : व्यापारियों पर नियंत्रण हेतु।
2. बारिद-ए-मुमालिक : गुप्तचर विभाग।
3. मुन्ही : सुचना देने वाले अधिकारी।

सैन्य प्रशासन :

दशमलव व्यवस्था के तहत सेना का पुनर्गठन किया। अलाउद्दीन खिलजी प्रथम ऐसा शासक था जिसने सैनिको को नगद वेतन देना प्रारम्भ किया। 234 टंका वार्षिक वेतन दिया जाता था। यह पहला ऐसा शासक था जिसने स्थाई सेना राखी इसने सैनिको का हुलिया रखना व घोड़े दागने की प्रथा प्रारम्भ की। इसकी सेना में 4.75 लाख सैनिक थे।

बाजार नियंत्रण: अलाउद्दीन खिलजी ने बाजार नियंत्रण प्रणाली प्रारम्भ की जिसका उद्देश्य काम खर्च पर अधिक सेना रखना था

अलाउद्दीन खिलजी ने 4 प्रकार के बाजार बनवाए

1. गल्ला मंडी : विभिन्न प्रकार के अनाज हेतु
2. सराय-ए-अदल : कपडा बाजार
3. सामान्य बाजार : दैनिक आव्यशकता वाली चज़ो हेतु
4. घोड़े-मवेशी व गुलाम बाजार : गुलाम मिलते थे।

अलाउद्दीन खिलजी ने राशनिंग प्रणाली चलाई। ऐसा करने वाला यह भारतीय इतिहास का प्रथम शासक था।

अलाउद्दीन खिलजी ने इनाम इक्ता व वक्फ भूमि को जप्त कर खालसा भूमि में सम्मिलित कर लिया। तथा खालसा भूमि से कर लेना प्रारम्भ कर लिया। ऐसा करने वाला वह प्रथम शासक था।

अलाउद्दीन खिलजी द्वारा लिए जाने वाले कर ।

1. बिस्वा = 1 बीघा का 20वा हिस्सा।
2. खैराज = उपज का 1/2 हिस्सा कर के रूप जाता था।
3. खुम्स = युद्ध की लूट का 1/5 भाग सैनिक व 4/5 राज्य।
4. गारी कर = आवास पर लिया जाने वाला कर।
5. चरि कर = दुधारू पशु पर लिया जाने वाला कर।

NOTE: गारी कर व चरि कर वसूलने वाला अलाउद्दीन प्रथम सुल्तान था।

राजस्व इकठ्ठा करने हेतु इसने **दिवान-ए-मुस्तखराज** नामक विभाग की स्थापना की।

निर्माण (स्थापत्य) :

अलाउद्दीन खिलजी ने क़ुतुब मीनार के पास **अलाइ दरवाजा** का निर्माण करवाया। जिसमे **पहेली बार गुम्मद का प्रयोग** हुआ।

अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली के समीप सीरी फोर्ट निर्माण का करवाया जिसमे हजार खम्बो वाले महल (हजार सीतून) का निर्माण करवाया।

अलाउद्दीन खिलजी ने अपनी स्थापत्य कला में अरबस्क शैली का प्रयोग किया। जो की हिन्दू व मुस्लिम शैली का मिश्रण है।

NOTE: अलाउद्दीन दिल्ली सल्तनत का प्रथम ऐसा शासक था जिसने वैश्यवृत्ति पर रोक लगा दी।

अलाउद्दीन खिलजी का मकबरा महरोली के क़ुतुब काम्प्लेक्स के पीछे बना हुआ है।

अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु 2 जनवरी 1316 ई को जलोदर नामक रोग से हो गयी। ऐसा माना जाता है की मलिक काफूर ने अलाउद्दीन खिलजी को धीमा ज़हर दिया था। अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु के बाद काफूर ने उसके पुरे परिवार को मार डाला। तथा अलाउद्दीन के एक पुत्र मुबारक खाँ को कैद कर लिया।

तथा शिहाबुद्दीन उमर को नया सुल्तान बनाया।

मुबारक खाँ ने जेल में रहते हुए ही षड्यंत्र रच कर काफूर की हत्या करवा दी। और स्वयं शासक बन गया।

3 मुबारक खाँ खिलजी (1316 ई. – 1320 ई.)

उपाधि : खालिफतुल्लअल्ला - अपने आप को ही खलीफा घोषित कर लिया। यह ऐसा करने वाला प्रथम सुल्तान था।

इसने देवगिरि को जीतकर दिल्ली सल्तनत में मिला लिया। ऐसा करने वाला यह प्रथम शासक था।

बरनी के अनुसार मुबारक शाह कभी कभी शराब के नशे में दरबार में नग्न हो कर आ जाता था तो कभी कभी स्त्रियों के वस्त्र धारण कर के आ जाता था।

मुबारक खाँ ने गुजरात के एक हिन्दू को इस्लाम स्वीकार करवा कर अपना वज़ीर स्वीकार किया तथा उसका नाम नसुरुद्दीन खुशरव रखा।

निजामुद्दीन औलिया का अभिवादन स्वीकार करने से माना कर दिया।

खुसरव ने 13 अप्रैल 1320 को मुबारक की हत्या कर दी तथा स्वयं गद्दी पर बैठ गया। तथा अपने आप को पैग़म्बर का सेनापति उपाधि दी तथा औलिया को 5 लाख टंका की भेट दी। गयासुद्दीन तुगलक ने यह भेट वापिस लेना चाहा परन्तु औलिया ने मना करदिया। 5 सितम्बर 1320 को गयासुद्दीन तुगलक ने खुसरव की हत्या कर दी तथा खुद दिल्ली का सुल्तान बन गया।

NOTE : दिल्ली सल्तनत काल के दौरान खुसरव सुल्तान बनने वाला प्रथम हिन्दू शासक था।

तुगलक राजवंश (1320 ई. - 1414 ई.):

दिल्ली सल्तनत काल के दौरान सबसे लम्बे समय तक शासन करने वाला राजवंश था जिसने 94 वर्ष तक शासन किया। तुगलक करोना/मिश्रित तुर्क थे अर्थात पिता तुर्क व माता हिन्दू होती थी।

1 गयासुद्दीन तुगलक (1320 ई. – 1325 ई.)

तुगलक वंश का संस्थापक था। यह एक हिन्दू महिला का पुत्र था। इसकी उपाधि मलिक-उल-गाज़ी

29 बार मंगोलो को पराजित करने वाला शासक गयासुद्दीन तुगलक था। अंतिम रूप से मंगोलो को पराजित करने के बाद इसने **गाजी की उपाधि धारण की**। ऐसा करने वाला यह दिल्ली का **प्रथम सुल्तान** था।

1322 में अपने पुत्र जॉन खाँ को दक्षिण भारत अभियान पर भेजा उसमे वारंगल व मदुरा पर अधिकार कर दिल्ली सल्तनत में मिला लिया। जॉन खाँ ने वारंगल का नाम सुल्तानपुर रख दिया। सर्वाधिक साम्राज्य विस्तार इसीकाल में हुआ अतः दिल्ली सल्तनत की जड़े कमज़ोर हुई।

बंगाल अभियान से लौटते वक्त उसके स्वागत के लिए जॉन खाँ ने गयासुद्दीन के लिए एक भव्य लकड़ी का महल बनवाया। यह महल अफगानपुर दिल्ली के पास बनवाया गया था। जिसका वास्तुकार अहमद नियाज था। इसी महल में दब कर गयासुद्दीन तुगलक की मृत्यु हो गयी।

NOTE : माना जाता की गयासुद्दीन की मृत्यु औलिया के श्राप के कारण हुई क्युकी औलिआ ने गयासुद्दीन को कहा की **दिल्ली अभी दूर है**। गयासुद्दीन को तुगलकाबाद में दफनाया गया।

महत्वपूर्ण कार्य :

दिल्ली के समीप तुगलकाबाद किले का निर्माण करवाया। तथा इसे अपनी राजधानी बनाया।

अलाउद्दीन द्वारा चलायी गयी कठोर नीतियों को समाप्त किया तथा उदारवदी नीतिया अपनाई जिन्हे **रस्मेरियाना** कहा जाता है।

तुगलक राजवंश दिल्ली सल्तनत का एकलौता राजवंश हे जिसने किसानो के लिए उदारवादी निति अपनई। इन्होने किसानो के लिए सिचाई हेतु नेहरो का निर्माण करवाया। राजस्व को घटा कर इसने 1/3 भाग कर दिया। तथा किसानो के बकाया ऋणों को माफ़ कर दिया। तथा ऋण बकाया होने पर दिए जाने वाले शारीरिक दंड को भी बंद कर दिया।

NOTE : इसने भू राजस्व में राज्य की मांग का आधार हुक्म-ए-हासिल अर्थात पैदावार के अनुरूप राजस्व लिया जाता था। किसानो के होने वाले नुकसान को समायोजित करने का प्रावधान किया।

इसे यातायात व्यवस्था व डाक प्रणाली का पूर्ण रूपेण व्यवस्थापक माना जाता है।

2 मोहम्मद बिन तुगलक (1325 ई.-1351 ई.)

यह दिल्ली सल्तनत काल के दौरान सबसे विद्वान व पढ़ा लिखा शासक था जो खगोल विज्ञानं, गणित, व आयुर्विज्ञान अदि में निपुण था। इसने पहली बार गैर मुसलमानो व भारतीय मुसलमानो को उच्च सरकारी पदों पर नियुक्त किया। अर्थात बरनी ने इसे छिछोरा, जुलाह, नाइ, रसोइया कहा।

यह पहला ऐसा मुस्लिम शासक था जिसने हिन्दू त्योहारों को मनाया। इसने अपनी राजधानी देवगिरि को बनाया तथा उसका नाम दौलताबाद कर दिया।

दिल्ली सल्तनत का वह पहला ऐसा शासक था जिसने सांकेतिक मुद्रा चलाई। उसने चांदी के टांके का मूल्य ताम्बे के जित्तल के बराबर कर दिया। इस वजह से व्यापारियों ने जीतल लेने से माना कर दिया। अर्थात लोगो ने ताम्बे का टंका बना कर चांदी का टंका ले लिया। अर्थात सुल्तान का खाजाना खली हो गया

NOTE : कागज की सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन सबसे पहले चीन देश के काबुलीख़ाँ द्वारा किया गया।

मोहम्मद बिन तुगलक ने अपना राजस्व सुधार ने के लिये दोआब क्षेत्र में कर की वृद्धि की परन्तु वहा अकाल पड़ गया। इस पर सुल्तान ने दिल्ली छोड़ कर गंगा के पास अपना शिविर लगाया। तथा 2.5 वर्ष तक इस शिविर में रहा और अकाल पीड़ित किसानो की सहायता हेतु। सौनघर नामक अकाल संहिता का निर्माण करवाया तथा, **दिवान-ए-कोही** नामक एक नए कृषि विभाग की स्थापना की। जिसके तहत किसानो को प्रत्यक्ष रूप से सहायता दी जाती थी। ऐसा करने वाला यह प्रथम शासक था

NOTE: फसल चक्र के आधार पर खेती करवाने वाला बिन तुगलक पहला शासक था।

इसके अंतिम समय में - गुजरात में तागि नामक व्यक्ति ने विद्रोह कर दिया। जिसे दबाने हेतु मोहम्मद बिन तुगलक गुजरात गया तो तागि भाग कर सिंध चला गया। वह उसका पीछा करते हुए सिंध पंहुचा। और इस दौरान बीमार पड़ा और 20 मार्च 1351 को उसकी मृत्यु हो गयी।

इसकी मृत्यु पर बदायुनी ने लिखा की सुल्तान को उसकी प्रजा से और प्रजा को सुल्तान से मुक्ति मिल गई।

मोहम्मद बिन तुगलक को अभागा आदर्शवादी सुल्तान कहा जाता है।

इसी के शासन काल के दौरान **इब्नेबतूता** आया और इसने **रेहला** नामक ग्रन्थ की रचना की

2 फिरोज तुगलक 1351 ई. 1388 ई.

जन्म 1309 ई. में। माता का बीबी जैला। पिता रज्जब तुगलक यह गयासुद्दीन तुगलक के भाई थे। फिरोज तुगलक, मोहम्मद बिन तुगलक का चचेरा भाई था।

फिरोज शाह तुगलक **सल्तनत काल का अकबर** कहलाता है।

फिरोज तुगलक की उपलब्धिया :

फ़िरोज़ तुगलक ने **दीवाने बन्दगान** (दास विभाग) की स्थापना की। दसो के निर्यात पर रोक लगा दी।

दारुल शिफा नामक विभाग की स्थापना की जिसके तहत निशुल्क चिकत्सा दी जाती थी।

दीवाने खैरात की स्थापना की जिसके द्वारा गरीब व असहाय लोगो की सहायता मिलती थी।

दीवाने इस्तिहक (पेंशन विभाग) : बुजुर्गो को पेंशन देने का प्रबंध करवाया

PWD : सार्वजानिक निर्माण विभाग का निर्माण करवाया

इसने **24 कष्टदाइ** करो को **समाप्त किया** तथा शरीअत में उल्लेखित केवल चार कर **जजिया जकात खैराज** व **खुम्स** ही वसूलता था।

इसने एक **तास घड़ियाल** नामक **जल घडी** का निर्माण करवाया।

फिरोज शाह तुगलक ने शिक्षा में व्यवसाइक अध्ययन पाठ्यक्रम में लागु करवाया ताकि अच्छे कारीगर मिल सके

कुतुब मीनार की 5वी मंजिल का पुनर्निर्माण निर्माण करवाया।

सर्वाधिक नेहरो का निर्माण इसी के शासन काल के दौरान किया गया। नहर निर्माण के बाद इसने **हक़-ए-सर्ब** / हब-ए-सर्ब नामक **सिचाई कर** लगवाया।

फिरोज शाह तुगलक ने 12 हजार फलो के बाग़ लगवाए जिससे 18 लाख टंका वार्षिक आय होती थी। जबकि इसकी कुल सालाना आय 6 करोड़ 85 लाख टंका थी।

फिरोज शाह तुगलक ने लगभग **300 नगरों का निर्माण करवाया** जिनमे से **मुख्य निम्न लिखित है**।

1. फतेहाबाद (हरियाणा)
2. हिसार (हरियाणा)
3. फिरोजपुर (पंजाब)
4. जौनपुर (उप्र) : अपने चचेरे भाई की याद में।
5. फिरोजाबाद (उप्र)
6. फिरोजशाह कोटला (दिल्ली) : जिन्नो का नगर

फिरोज तुगलक को मध्यकालीन भारत का कल्याण कारी निरंकुश शासक कहा जाता है।

फिरोज तुगलक ने खलीफाओं की प्रशंसा पाने के लिए, पूरी(उड़ीसा) व जगन्नाथ मंदिर को लुटा तथा उसकी मूर्तियों को तोड़ कर समुन्द्र में फिकवा दिया।

फिरोज तुगलक ने अपनी आत्म कथा फुतुहात-ए-फिरोजशाही स्वयं लिखी।

1388 ई. में फिरोज तुगलक की मृत्यु के बाद उसका पौत्र तुगलक शाह शासक बना जो की अयोग्य था

जफ़र खाँ के पुत्र **अबू बक्र** ने तुगलक शाह की हत्या कर दी। और स्वयं शासक बना जो की **1390 ई.** तक शासक बना रहा।

2 नसुरुद्दीन मोहमद शाह। : 1390 ई. 1391 ई.

एक साल में क्या ही कर लेगा

3 नसुरुद्दीन मोहम्मद शाह॥ 1391 ई. 1394 ई.

इसके समय गुजरात में लोगो ने विद्रोह कर दिया था।

4 महमूद शाह तुगलक : 1394 ई. 1414 ई.

तुगलक वंश का अंतिम शासक था। मंगोल आक्रांता तैमूर ने 1398 ई. इसी के शासन काल के दौरान आक्रमण किया।

1414 ई. में दिल्ली के अनेक राज्यों ने अपने आप को स्वतंत्र घोषित कर लिया। और 1414 में ही इसकी मृत्यु हो गयी।

इसी की साथ तुगलक वंश समाप्त हो गया।

सैय्यद राजवंश (1414 ई. - 1451 ई.):

दिल्ली सल्तनत काल के दौरान अनेक राज्यों द्वारा अपने आप को स्वतंत्र घोषित करदिये जाने के बाद हुई राजनैतिक उठापटक में दिल्ली की गद्दी सैय्यद वंश के हाथ लगी।

दिल्ली सल्तनत काल के दौरान सैय्यद वंश एक मात्र ऐसा वंश था जो की अपने आप को पैग़म्बर मोहम्मद का वंशज मानते थे , अतः यह शिया समुदाय के थे। इस वंश का संस्थापक खिज्र खाँ था। खिज्र खाँ के पिता मर्दान दौलत अरब के निवासी थे। जो की फिरोज शाह तुगलक के आमिर वर्ग में शामिल थे। तैमूर के आक्रमण के दौरान मर्दान दौलत व खिज्र खाँ ने तैमूर की सहायता की। इसी सहायता से प्रसन्न हो कर तैमूर ने खिज्र खाँ को मुल्तान लाहौर व सिंध की सूबेदारी प्रदान की। खिज्र खाँ ने तैमूर के बेटे शाह रुक खाँ के प्रतिनिधि के रूप में कार्य किया। 20 मई 1421 को खिज्र खाँ की मृत्यु हो गई।

1 मुबारक शाह (1421 ई. 1434 ई.)

मुबारक शाह खिज्र खाँ का पुत्र था। यह सैय्यद वंश का सबसे प्रतापी शासक था। इसके खिलाफ अनेक विद्रोह हुए, जिसे उसने सफलता पूर्वक दबा दिया।

मुबारक शाह ने यमुना के किनारे **मुबारकबाद** नामक एक नए नगर का निर्माण करवाया।

मुबारक शाह से असंतुष्ट लोगो ने एक गुट का निर्माण करा जिसमे हिन्दू व मुस्लिम दोनों सम्मिलित थे। मुसलमानो का मुखिया सरवर उल मुल्क को बनाया गया। तथा हिन्दूओ का मुखिया रिद्धपाल बना। इन सभी ने सुल्तान को मुबारकबाद नगर दिखने के बहाने से वह बुलाया और उसे मार डाला।

बाकि के राजाओ ने कुछ खास उखाड़ा नहीं हे जो की एग्जाम आये तो हम आगे बढ़ते है।बस इतना याद रखो की अंतिम शासक हम्मीर खाँ को 1450 में बहलोल लोदी ने मार डाला और सैय्यद वंश का पतन हो गया।

लोदी राजवंश (1451 ई. - 1526 ई.):

बहलोल लोदी ने अंतिम सैय्यद वंश के शासक हम्मीर खाँ को 1450 में मार डाला और शासन की बागडोर अपने हाथो में ले ली, और दिल्ली सल्तनत पर एक नए राजवंश लोदी वंश की नीव डाली।

दिल्ली सल्तनत काल में यह प्रथम अफगान साम्राज्य था, जिसकी स्थापना बहलोल लोदी ने की।

1 बहलोल लोदी: 1451 ई. – 1489 ई.

बहलोल लोदी के पिता का नाम मालिक काला था। जिसकी मृत्यु बहलोल के जन्म के पूर्व ही हो गयी। अतः बहलोल का लालन पालन उसके दादा मलिक बहराम व उसके चाचा इलम खाँ ने किया।

सबसे पहले इसने गाजी की उपाधि धारण की। इसके शासन काल के दौरान सर्कि शासक महमूद शाह ने इस पर आक्रमण किया। इस आक्रमण के दौरान एक अफगान सेनापति "दरिया खा" लोदी से मिला इसी कारण लोदी यह युद्ध जितने में सफल रहा। यह युद्ध पानीपत के पास नरेला नामक स्थान पर लड़ा गया।

ग्वालियर अभियान से लौटते समय इसे लू लग गयी और इसी कारण इसकी मृत्यु हो गयी।

NOTE: दिल्ली सल्तनत में सर्वद्धिक लम्बे समय तक शासक बहलोल लोदी रहा। इसने **बहलोली प्रकार के सिक्के** चलाए, जो की अकबर के आने तक चलते रहे।

यह अपने सरदारों के सामने गद्दी पर नहीं बैठता था। इसके कुल 9 पुत्र थे, जिनमे उसकी मृत्यु के बाद उत्तराधिकार संघर्ष हुआ। परन्तु सिकंदर लोदी शासक बना।

2 सिकंदर लोदी 1489 ई. 1517 ई.

इसका मूल नाम जैबंद/जैबूबन्द था। इसे नियाज खाँ भी कहा जाता था। यह लोदी वंश का सर्वश्रेष्ठ शासक माना जाता है।

सिकंदर लोदी ने 1504 ई. में यमुना के किनारे आगरा नगर बसाया तथा बादल गढ़ के किले का निर्माण करवाया। 1506 ई. में आगरा को अपनी राजधानी बनाया। आगरा की स्थापना का उद्देश्य राजस्थान के शासको व व्यापारिक मार्ग पर नियत्रण करना था।

इसने जमीन में गढ़े हुए धन में अपना कोई हिस्सा नहीं लिया।

इसने अपने पिता के विपरीत सिंहासन पर बैठना प्रारम्भ किया और अफगान अमीरो की जगीरो की जांच करवाई और उन्हें दण्डित करना प्रारम्भ किया। वह अमीरो को जनता के सामने कोडो से पिटवाता था।

सिकंदर लोदी ने हिसाब किताब रखने हेतु **लेखा परिक्षण** प्रणाली प्रारम्भ की। यह धर्मांध था अतः इसने समस्त हिन्दुओ पर जजिया कर लगवाया तथा अनेक हिन्दू मंदिरो को तोड़ डाला अतः इसे **औरंगजेब का पूर्वगामी** कहा जाता है।

सिकंदर लोदी ने अनुवाद विभाग की स्थापना की। तथा मुस्लिम शिक्षा में सुधर हेतु ईरान के विद्वान शैख़ अब्दुल्ला को बुलाया। इसकी मृत्यु 1517 ई में हो गई। इसका मकबरा खैरपुर दिल्ली में है।

सिकंदर लोदी ने सिकंदरी गज - भूमि माप प्रणाली चलाई।

3 इब्राहिम लोदी : 1517 ई. – 1526 ई.

सिकंदर लोदी का बड़ा बेटा था जो अपने छोटे भाई जलाल खाँ लोदी को हरा कर शासक बना।

1517-18 ई में राणा सांगा से खतौली के युद्ध में पराजित हुआ।

1526 पानीपत के युद्ध में बाबर के हाथो मारा गया। इस प्रकार युद्ध भूमि में मारा जाने वाला दिल्ली सल्तनत का प्रथम शासक था।

भारत का इतिहास - अध्याय 7

(मुग़ल साम्राज्य: 1526 ई. - 1857 ई.)

बाबर 1526 ई. – 1530 ई.

मुग़ल साम्राज्य का संस्थापक बाबर को माना जाता है। बाबर का जन्म 14 फरवरी 1483 को ट्रांस ऑक्सियना के प्रान्त फरगना में हुआ।

इसके पिता का नाम उमर शैख़ मिर्जा था। माता का नाम कुतलुग निगार खानम था। दादी का नाम ऐसान दौलत बेगम था। बाबर पितृ पक्ष की और से तैमूर तुर्क का 5वा वंशज था, जब की माँ की और से चंगेज़ खाँ मंगोल का 14वा वंशज था

1504 ई. में इसने काबुल पर विजय प्राप्त की। तथा 1507 में मिर्जा की उपाधि का त्याग कर पादशाह/बादशाह की उपाधि धारण की। ऐसा करने वाला यह प्रथम मुग़ल सम्राट था।

बाबर ने भारत पर पहला आक्रमण 1519 में बाजोर(पंजाब) में कीया। इसी आक्रमण के दौरान उसने भेरा(पंजाब) के किले को जीता।

IMPORTANT: भेरा आक्रमण के दौरान ही उसने सर्वप्रथम तोपखाने का प्रयोग किया।

बाबर द्वारा लडे गए प्रमुख युद्ध :

- 1526 ई : पानीपथ का प्रथम युद्ध। बाबर विजयी। इब्राहिम लोदी हारा
- 1527 ई : खानवा का युद्ध। बाबर विजयी। राणा सांगा हारा
- 1528 ई : चंदेरी का युद्ध। बाबर विजयी। मेदिनीराय हारा
- 1529 ई : घाघरा का युद्ध। बाबर विजयी। महमूद लोदी हारा

NOTE: घाघरा का युद्ध ऐसा प्रथम युद्ध था, जो की जल व थल दोनों पर लड़ा गया। इसमें पहेली बार नवो का प्रयोग किया गया।

NOTE: पानीपत विजय के बाद बाबर ने काबुल के प्रत्येक निवासी को चाँदी का एक एक सिक्का दिया, अतः उसे कलंदर कहा जाता है।

NOTE: खानवा युद्ध के दौरान उसने जिहाद का नारा दिया, तथा सैनिको पर लगने वाले तमगा कर को हटा दिया। खानवा युद्ध के बाद ही उसने गाजी की उपाधि धारण की।

NOTE: बाबर की मृत्यु 26-12-1530 को आगरा में हुई जिसे। आगरा के नूरे अफगान (आराम बाग़) में दफनाया गया। परन्तु बाद में उसे यहाँ से निकाल कर काबुल के नूरे अफगान बाग़ में दफनाया गया

बाबर ने अपने ग्रन्थ तुजुके बाबरी की रचना की, यह मूल तह तुर्की भाषा में थी।इसका चार बार फ़ारसी भाषा में अनुवाद किया गया - 2 बार हुमायु के समय **पायन्दा खाँ** व **जैन खाँ** के द्वारा। तीसरी बार **अब्दुल रहीम खानेखाना** के द्वारा। तथा चौथी बार शाह जहाँ के शासन काल में **अबू अली तुरबती** के द्वारा किया गया। इसका अंग्रेजी में अनुवाद 1905 में **AS Beverage** के द्वारा किया गया।

बाबर ने सड़क मापने के लिए गज-ए-बाबरी का निर्माण करवाया। बाबर को बाग़ लगवाने का बड़ा शौक था अतः उसने ज्यामितीय विधि के आधार पर नूरे अफगान (आराम बाग़ का निर्माण करवाया)

हुमायु 1530 ई. – 1540 ई.

जन्म 6 मार्च 1508 को हुआ। माता का नाम महम बेगम। पिता का नाम बाबर।

हुमायु ने अपने पिता के आदेश अनुसार अपने साम्राज्य का विभाजन अपने भाइयो में कर दिया। जो की क्रमशः इस प्रकार था -

- कामरान : काबुल व कंधार
- अस्करी : संभल
- हिन्दाल : मेवात
- सुलेमान मिर्ज़ा : बदख़्शा

NOTE : कामरान इस विभाजन से खुश नहीं था अतः उसने पंजाब पर आक्रमण किया और उस पर अधिकार कर लिया। हुमायु ने माफ़ कर दिया।

हुमायु का सबसे बड़ा विरोधी अफगान नेता शेर शाह सूरी था।

हुमायु ने 1534-35 ई. में गुजरात के शासक बहदुर शाह के विरुद्ध अभियान किया परन्तु इस दौरान, बहादुर शाह ने चित्तौड़ के किले का घेरा डाल रखा था। चित्तौड़ की रानी कर्मावती ने हुमायु को राखी भेज कर सहायता मांगी हुमायु रानी की सहायता करने के लिए। सहारन पुर (उप्र) तक पहुंचा परन्तु आगे निर्णय नहीं ले सका, इस दौरान बहादुर शाह ने चैत्तौड पर अधिकार कर लिया।

हुमायु ने बहादुर शाह को अप्रैल 1535 में मंदसौर के युद्ध में पराजित किया बहादुर शाह भाग कर मांडू पहुंचा, यहाँ पर भी हुमायु ने उसका पीछा नहीं छोड़ा तो वह अहमदाबाद पहुंचा अहमदाबाद तक पीछा करने के बाद बहादुर शाह भाग कर गोवा चला गया।

हुमायु ने अस्करी को मालवा व गुजरात का सूबेदार नियुक्त किया।

चौसा का युद्ध : 26 जून 1539

यह युद्ध हुमायु व शेर शाह सूरी के बिच लड़ा गया। शेर शाह ने हुमायु को बक्सर के निकट पराजित किया। अनेक मुग़ल सैनिक मारे गए। हुमायु अपनी जान बचने के लिए कर्मनासा (गंगा) नदी में कूद गया। जहा उसकी जान निज़ाम सक्का नामक भिस्ती ने बचाई। इसी उपकार के बदले हुमायु ने **1555 ई. में सक्का** को **एक दिन** का **बादशाह** बनाया, **उसने चमड़े के सिक्के** चलाए ।

NOTE : निजाम सक्का की मजार अजमेर में बानी हुई है।

NOTE : इस युद्ध के बाद शेर खाँ ने शेर शाह सूरी की उपाधि धारण की और अपने नाम के सिक्के चलाए।

कन्नौज/बिलग्राम का युद्ध : 17-5-1540

शेर शाह ने इस युद्ध में हुमायु को निर्णायक रूप से पराजित किया। हुमायु भारत छोड़ कर भागने पर मजबूर हो गया और इसी के साथ भारत में द्वितीय अफगान साम्राज्य की नीव पड़ी। इस युद्ध के लिए कहा जाता है की "एक भी तीर गोली नहीं चली और मुग़ल सेना भाग खड़ी हुई।"

शेर शाह सूरी की सेना ने हुमायु का अफगान तक पीछा किया वह भाग कर सिंध (थट्टा) पंहुचा, जहा उसका विवाह 1541 ई. में **हमीदा बनो बेगम** के साथ हुआ। इसी के गर्भ से अमरकोट के राजा वीरसाल के किले में **15 अक्टूबर 1542** को **अकबर का जन्म** हुआ।

निर्वासन काल के दौरान हुमायु ने फारस के शासक तहमाश्प के यहाँ शरण ली।

5 साल के अकबर को 1547 ई. में कामरान ने काबुल के किले पर लटकवा दिया, ताकि हुमायु किले पर तोप नहीं चला सके। हुमायु ने कामरान को अंधा कर बंधी बना लिया।

इसी समय अफगान नेता शेर शाह सूरी की मृत्यु हुई हुमायु ने भारत पर पुनः विजय करने का विचार बनाया।

मच्छीवाडा का युद्ध : 15 -5 -1555 :

इस युद्ध में हुमायु की सेना ने अफगानो को पराजित किया। तथा सम्पूर्ण पंजाब पर अधिकार कर लिया।

सरहिंद का युद्ध : 22-6-1555

इस युद्ध में सुर शासक सिकंदर शाह को बैरम खाँ ने पराजित कर दिया। इसी युद्ध के साथ हुमायु एक बार पुनः भारत का शासक बना।

24 जनवरी 1556 में हुमायु दिनपनाह नामक नगर में स्तिथ पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिरा और 26 जनवरी 1556 को उसकी मृत्यु हो गयी।

लेनपूल ने लिखा है की हुमायु का अर्थ भाग्यशाली होता है। परन्तु वह अत्यंत दुर्भाग्य शाली शासक था जो जिंदगी भर लड़खड़ाता रहा। और अंततः लड़खड़ाकर ही उसकी मृत्यु हो गई।

हुमायु को ज्योतिष विद्या पर बहुत ज्यादा विश्वाश था, अतः वह सप्ताह के हर दिन अलग अलग रंग के वस्त्र पहनता था।

हुमायु का मकबरा:

अकबर के काल में निर्मित यह प्रथम ईमारत थी। जिसका निर्माण अकबर की सौतेली माँ हाजी बेगा बेगम के द्वारा करवाया गया। इसका वास्तुकार मिरक मिर्ज़ा गयास था। इसमें **पहली बार दोहरे गुम्बद का प्रयोग**किया गया। **पहली बार चार बाग़ पद्दति**का प्रयोग किया गया। इसे **ताजमहल का पूर्व गामी** माना जाता है। 1857 की क्रांति के दौरान अंतिम मुग़ल सम्राट बाहदुर शाह ज़फर व उसके 3 शहजादों को अंग्रेज़ अफसर हडसन के द्वारा इसी मकबरे से गिरफ्तार किया गया।

NOTE: मुग़ल काल में पहली बार संगमरमर का प्रयोग एत्मादुदौला के मकबरे में किया गया। इसी मकबरे में पहली बार **पित्रा ड्यूरा** का प्रयोग किया गया

अकबर 1556ई . – 1605 ई .

जन्म 15-10-1542 को हुआ। माता का नाम हमीदा बेगम जिन्हे मरियम मकानी भी कहा जाता था। इसके जन्म पर हुमायु ने सरदारों को कस्तूरी बांटी। इसका पहला विवाह 9 वर्ष की आयु में हिन्दाल की पुत्री रजिया सुल्ताना (रुकैया बेगम) के साथ किया गया। अकबर का राज्य अभिषेक 14 फरवरी 1556 को कलानौर नामक स्थान में किया गया।

पानीपत का द्वितीय युद्ध 5-11-1556 : हेमू और अकबर(बेरम खाँ) के मध्य. अकबर ने अंतिम हिन्दू शासक हेमू को पराजित किया। इस युद्ध का नेतृत्व बैरम खाँ के द्वारा किया गया। हेमू को मार कर अकबर ने गाजी की उपाधि धारण की। बेराम खाँ अकबर का संरक्षक था जिसकी हत्या गुजरात के पाटन नामक स्थान पर एक सुर व्यक्ति मुबारक खाँ के द्वारा की गयी।

अकबर ने बेराम खान की विधवा पत्नी सलीमा बेगम से विवाह कर लिया, तथा उसके पुत्र अब्दुल रहीम को खानेखाना की उपाधि प्रदान की। तथा उसे वकील-ए-मुतलक़ का पद प्रदान किया।

NOTE : 1560 ई. से 1562 ई. के दौरान अकबर के शासन काल पर महामंगा, उसकी पुत्री जीजी अंगा, व उसके पुत्र आधम खान का सर्वाधिक प्रभाव था। इस काल को **पेटीकोट सरकार**(हरम दल) कहा जाता है।

1562 में अकबर की अजमेर यात्रा के दौरान, आमेर के शासक भारमल ने मुगलो की सर्वप्रथम अधीनता स्वीकार की तथा अपनी पुत्री हरखा बाई का विवाह अकबर के साथ किया। हरखा बाई को "मरियम उज्जमानी" के नाम से जाना जाता है। इन्ही के गर्भ से 30-8-1510 को सलीम(जहांगीर) का जन्म हुआ।

आमेर शासक भारमल ने भगवानदास व मान सिंह को मुग़ल सेवा में रखा।

चित्तौड़ विजय : अकबर ने 1567-68 ई. में चित्तौड़ का अभियान किया इसी अभियान के दौरान अकबर ने एक फतेहनामा जारी किया तथा कत्लेआम करवाया, जो की अकबर के जीवन पर धब्बा माना जाता है।

असीरगढ़ विजय : असीरगढ़ मध्यप्रदेश के बुरहानपुर के पास है। यहाँ के शासक मीरन बहादुर को पराजित करने के लिए अकबर स्वयं गया। यह अकबर के जीवन का अंतिम युद्ध था।

इसी विजय के उपलक्ष में अकबर ने एक सोने का सिक्का चलवाया, जिस पर अकबर को एक घोड़े पर बैठे हुए दिखाया गया है तथा हाथ पर बाज का चित्रण है।

अकबर की मृत्यु 25-10-1605 को पेचिस के कारण हो गई। जहांगीर ने उसका मकबरा सिकंदरा आगरा में बनवाया। इस मकबरे की बनावट बौद्ध विहार जैसी है। तथा इसमें गुम्बद का प्रयोग नहीं किया गया है। इसमें केवल 4 सुन्दर मीनारों का प्रयोग किया गया है।

अकबर के समय की प्रमुख घटनाए :

- 1562 : दास प्रथा और सती प्रथा पर रोक लगाई।
- 1563 : तीर्थ यात्रा कर को समाप्त किया।
- 1564 : जज़िया कर समाप्त किया।
- 1571 : फतेहपुर सिकरी की स्थापना।
- 1574 : घोड़े दागने की प्रथा प्रारम्भ की।
- 1575 : मनसबदारी प्रथा प्रारम्भ की। फतहेपुर सिकरी में इबादत खाने की स्थापना।
- 1577 : सिख गुरु रामदास को 500 बिगा ज़मीन दी जहा बाद में अमृतसर नगर बसाया गया।
- 1578 : इबादत खाने को सभी धर्मो को लिए खोल दिया गया।
- 1579 : महाजर की घोषणा। जिल्ले इलाही व फर्रे इजदी की उपाधि।
- 1580 : सम्पूर्ण साम्राज्य 12 सुबो में विभाजित किया। 1605 तक अकबर के शासन काल में सुबो की संख्या 15 हो गई थी। मुग़ल काल में सर्वाधिक सूबे औरंगजेब के शासन काल में 20-21। **1580 में टोडरमल की देहसला प्रणाली लागु।**
- 1582 : इबादत खाने में बहस पर रोक लगाई । दिन-ए-इलाही धर्म की स्थापना। दिन-ए-इलाही धर्म स्वीकार करने वाला प्रथम व्यक्ति **महेश दास (बीरबल)** था।
- 1583 : कुछ विशेष दिनों पर पशुवध पर रोक लगा दी।

जहाँगीर 1605 ई. 1627 ई.

जन्म : 30-8-1569

बचपन का नाम : सलीम

पिता का नाम : अकबर | माता का नाम : हरखा बाई

प्रथम विवाह: भगवंतदास आमेर के शासक की पुत्री मान बाई से किया गया। इनकी उपाधि शाह बेगम। इनका पुत्र खुसरो था। खुसरो ने विद्रोह कर दिया तो जहांगीर ने उसे अँधा करवा दिया। खुसरो का वध 1622 में शहजादा खुर्रम(शाहजहाँ) के द्वारा किया गया।

द्वितीय विवाह: मारवाड़ के राजा उदय सिंह की पुत्री जोधा बाई। इनको **मलिका ए जहाँ** की उपाधि दी। इन्हे जगत गोसाई के नाम से भी जाना जाता है। इन्ही के गर्भ से खुर्रम(शाह जहाँ) उत्पन्न हुआ।

जहांगीर ने शासक बनते ही 12 घोषणाएं प्रकाशित करवाई जिन्हे आयने जहांगीरी कहा जाता है।

खुसरो ने 1606 में विद्रोह किया क्युकी अजीज कोका व मान सिंह उसे बादशाह बनाना चाहते थे। विद्रोह करने से पूर्व उसने 5वे सिख गुरु अर्जुन देव से आशीर्वाद लिया जिसे जहांगीर ने राजद्रोह का आरोप लगा कर मृत्यु दंड दे दिया।

जहाँगीर के जीवन पर सबसे ज्यादा प्रभाव नूर जहा का था। नूर जहा की माता अस्मत बेग ने गुलाब से इत्र बनाने का अविष्कार किया। नूर जहा ने श्रृंगार वस्त्र व गेहनो की नई रीती चलाई। जहांगीर की मृत्यु के बाद नूर को 2 लाख सालाना पेंशन दे कर लाहौर भेजा जहा 1645 में उसकी मृत्यु हो गयी।

जहांगीर का मकबरा नूर जहा के द्वारा लाहौर के सहोदरा नामक स्थान पर रावी नदी के तट पर बनवाया गया।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य : दक्षिण में विजय करने के बाद, जहांगीर ने **शहजादा खुर्रम** को **शाहजहा** की उपाधि दी। खुर्रम ने 1615 में मेवाड़ शासक अमर सिंह के साथ संधि की। यह संधि अकबर द्वारा अपनाई गई राजपूत मुग़ल निति का चरमोत्कर्ष थी।

जहांगीर ने फ़ारसी भाषा में तुजुके जहांगीरी लिखवाई जिसमे अपने प्रारंभिक 16 वर्षो का इतिहास स्वयं ने आगे के तीन वर्षो का इतिहास मोतमिद खाँ ने जबकि इसे पूरा करवाने का श्रेय मोहम्मद हादी को जाता है।

जहांगीर के शासन काल में **1608** में **प्रथम अंग्रेज व्यापारी कप्तान हॉकिंस** आया था जो अपने साथ हैक्टर नामक जहाजी बेडा भारत लेकर आया तथा आगरा के दरबार में मिला।

इसी के शासन काल में **1615** में **सर टॉमस रॉ स्मिथ** भारत आया तथा यह जहांगीर से **अजमेर** के **मैगजीन के किले** में मिला।

शाहजहाँ : 1627 -1658

शाहजहाँ : 1627 -1658

जन्म : 5-1-1592

बचपन का नाम : खुर्रम

विवाह : नूर जहा के भाई असफ खाँ की पुत्री अर्जुमंद बनो बेगम के साथ किया गया जो इतिहास में मुमताज के नाम से प्रसिद्द हुई। जिसकी मृत्यु 1631 में शाहजहाँ के 14 वे बच्चे को जन्म देते समय बुरहानपुर में हुई। इसकी यद में ताजमहल का निर्माण किया गया। स्थापत्य व कला के विकास की दृष्टि से शाहजहाँ के शासनकाल को मुग़ल काल का स्वर्णिम युग कहा जाता है।

शाहजहा अपने जीवन के अंतिम 8 वर्ष आगरा के किले के शाह बुर्ज (मुस्समन बुर्ज) में कैदी के रूप में रहा। बंदी के रूप में रहने वाला यह मुग़ल काल का प्रथम शासक था। इसकी मृत्यु 1666 में हुई उसे ताज महल में मुमताज की कब्र के पास दफनाया गया।

इसकी मृत्यु के बाद उत्तर्राधिकार संघर्ष हुए जो की क्रमशः निम्नलिखित हे :

- **बहादुरगढ़ का युद्ध : 14-2-1658** - शाहसुजा व शाही सेना (दारा शिकोह) के बिच यह युद्ध लड़ा गया, जिसमे सुजा हार गया।
- **धरमत का युद्ध : 15-4-1658** : औरंगजेब और मुराद की सेना के बिच धरमत नामक स्थान पर लड़ा गया।
- **सामूगढ़ का युद्ध : 29-5-1658** : आगरा के पास लाडे गए इस युद्ध में औरंगजेब व मुराद की सम्मिलित सेना ने दारा को पराजित किया तथा शाह जहा को बंदी बना कर मुस्समन बुर्ज में कैद कर लिया।
- **खजुआ का युद्ध : 5-1-1659** - इलाहबाद के पास खजुआ नामक स्थान पर औरंगजेब ने सुजा को पराजित किया।
- **देवराई(दौराई) : अप्रैल 1659** - अजमेर के पास औरंगजेब ने दारा को अंतिम रूप से पराजित किया और मार डाला। दारा को हुमायु के मकबरे में दफनाया गया।

लेनपूल ने दारा को लघु अकबर कहा है। दारा ने 52 उपनिषदों का फ़ारसी भाषा में अनुवाद करवाया जिसे सिर्रे अकबर कहा जाता है।

औरंगजेब : 1658 - 1707

औरंगजेब का काल मुग़ल काल का पतन काल माना जाता है। औरंगजेब कट्टर सुन्नी मुस्लमान था। उसने सिक्को पर कलमा खुदवाना, 9 रोज का त्यौहार मनाना। तुलादान व झरोखा दर्शन जैसी परम्पराओ पर रोक लगा दी। उसने 1669 में बनारस फरमान के द्वारा हिन्दू मंदिरो को तुड़वाया। **1663** में उसने **सती प्रथा** के उप्पर **पूर्णतः रोक** लगा दी। औरंगजेब की धार्मिक नीतिओ के कारण जिन्दा पीर व सादगी के कारण शाही दरवेज कहा जाता है।

इसने अकबर द्वारा बंद किये गए जज़िया कर को पुनः प्रारम्भ कर दिया। संगीत कला पर रोक लगा दी। परन्तु वह स्वयं एक कुशल विणा वादक था।

मुग़ल कालीन कला

मुग़ल स्थापत्य भारतीय + ईरानी + मध्य एशिया + तुर्की का मिश्रण है।

मुख्य विशेषता :

- विशाल व आकर्षक गुम्बद
- पित्रा ड्यूरा
- चार बाग़ पद्धति
- महलो में बहते हुए पानी का प्रयोग
- सफ़ेद व लाल संगमरमर

बाबर द्वारा बनवाई गई इमारते :

- पानीपत की काबुली बाग मस्जित - यह इटो से निर्मित है।
- रुहेलखंड(संभल) की जामा मस्जिद
- बाबरी मस्जिद
- नूरे अफगान बाग़ (आराम बाग़)

हुमायु द्वारा बनवाई गई इमारते

- दीनपनाह नगर - 1534-35
- आगरा की मस्जिद
- फतेहाबाद की मस्जिद - यह ईरानी शैली पर निर्मित है।

शेर शाह सूरी द्वारा बनवाई गई इमारते

दिल्ली में शेरगढ़ नामक नया नगर और इसके दो दरवाजे लाल दरवाजा व खुनी दरवाजा

सासाराम बिहार में झील के बीचोबीच अपना मकबरा बनवाया यह 4 मंजिला है। पानी में होने के कारण द्विगुणित दीखता है। यह अष्ट कोणीय है। कनिंघम महोदय ने इसे "ताज महल" से भी सुन्दर माना है।

अकबर कालीन इमारते

- आगरा का लाल किला : यह यमुना नदी के किनारे पर स्तिथ है। इसमें दो दरवाजे है दिल्ली दरवाजा व अमरसिंह दरवाजा। आगरा के लाल किले में अकबर ने लगभग 500 इमारतों का निर्माण करवाया। आगरा के किले का डिज़ाइन कासिम खां के द्वारा तैयार किया गया। **इसकी प्रमुख इमारते निम्न लिखित हैं:**
    - अकबर का महल
    - जहांगीर का महल : इसके महल में ग्वालियर के राजा के मान मंदिर की नक़ल की गई है।
- अकबर ने 1583 में इलाहबाद किले का निर्माण करवाया।
- अकबर ने लाहौर का किला व अजमेर का किला व अटक के किले का निर्माण करवाया।
- 1598 से 1605 तक अकबर ने आगरा के किले में निवास किया। तथा इसे अपनी राजधानी बनाया।

फतहेपुर-सिकरी :

अकबर ने 1569 में सिकरी के निकट पहाड़ी पर इस नगर की नीव डाली। इसका वास्तुकार बहाउद्दीन था।

प्रमुख विशेषताए : चापाकार (इस्लामिक) एवं धरणिक(हिन्दू) शैली का मिश्रण है।

इसकी प्रमुख इमारते :

1. दीवाने आम : इसका आयताकार प्रांगण था अकबर यहाँ बैठकर न्याय करता था।
2. दीवाने-खास: अकबर का व्यक्तिगत भवन था। इसमें वृत्ताकार मंच बना हुआ था। यह 36 तोड़ो पर बना हुआ था यह मंच जलाशय से जुड़ा हुआ था।
3. जोधा बाई का महल : यह फतेहपुर सिकरी का सबसे बड़ा महल था जो गुजरती कारीगरों द्वारा निर्मित था।
4. तुर्की सुल्ताना का महल : सिर्फ एक मंजिला ईमारत है। इस महल को मुग़ल स्थापत्य का मोती कहा जाता है
5. पंचमहल : पांच मंजिला ईमारत। इस पर बौद्ध शैली का प्रभाव था।
6. बीरबल का महल : पहली बार छज्जो में कोष्ठकों का प्रयोग किया गया था।
7. जमा मस्जिद : स्थापत्य कला की दृष्टि से फतहेपुर सिकरी की सर्वश्रेष्ठ ईमारत है। इसे फतेहपुर सिकरी का गौरव कहा जाता है। फर्ग्युसन ने इसे पत्थर में रूमानी कथा कहा है।

8. बुलंद दरवाजा: गुजरात विजय के उपलक्ष में बनवाया गया। यह जमीं से 176 फिट ऊँचा है ईरानी अर्ध गुम्बदीय एवं चाप स्कन्द शैली में निर्मित है। अतारकिन के दरवाजे से प्रभावित था।
9. शैख़ सलीम चिस्ती का मकबरा : अकबर के में यह लाल पत्थर में बना लकिन जहांगीर ने इसे सफ़ेद संगमरमर में बनवाया

फर्गुसन ने फतहेपुर सिकरी को अकबर की परछाई कहा है, स्मिथ ने इसे पत्थर में ढला रोमांच कहा है

जहांगीर काल की इमारते

- 1612 में अकबर का मकबरा
- एत्मादुद्दौला का मकबरा
- जहांगीर का मकबरा

शाहजहा कालीन इमारते :

इसको भारतीय वास्तुकला (मुग़ल काल) का स्वर्णिम युग कहा जाता है। इसने लाल पत्थर के स्थान पर सफ़ेद संगमरमर का प्रयोग किया।

- दीवाने आम : शाहजहाँ के शासन काल में सफ़ेद संगमरमर से निर्मित प्रथम ईमारत।
- दीवाने खास
- मोती मस्जिद : यह सबसे सुन्दर ईमारत
- मुस्समन बुर्ज
- खास महल व झरोखा दर्शन
- ताजमहल : अहमद लाहोरी इसके वास्तुकार थे। इन्हे शाह जहा ने नादिर उल असरार की उपाधि दी थी। मुख्य मिस्त्री - उस्ताद ईशा। पहली बार 4 ईमारत का प्रयोग ताज महल में ही किया गया। हैवल ने इसे भारतीय नारीत्व की साकार प्रतिभा कहा है। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इसे काल के गाल पर टिका हुआ आंसू कहा है।

दिल्ली की इमारते :

1. दीवाने आम : तख्ते ताउस(मयूर सिंहासन) का वास्तुकार बेबादल खाँ था।
2. दीवाने खास : चाँदी + सोने की परत चढ़ाई गई है। यहाँ लिखा हुआ हे की दुनिया में अगर कही स्वर्ग है तो यही, यही और यही है।
3. दिल्ली की जमा मस्जिद।

औरंगजेब कालीन ईमारत

बीबी का मकबरा : इसे ताज महल की फूहड़ नक़ल कहा जाता है।

मुग़ल कालीन चित्र कला।

*जहांगीर का काल मुगलकालीन चित्र कला का स्वर्णिम काल कहा जाता है

बाबर : तुजुके बाबरी (बाबरनामा) में एक मात्र चित्रकार बिहजाद का उल्लेख है, जिसे पूर्व का राफेल कहा जाता है।

हुमायु : मुग़लकालीन चित्रकला का प्रारम्भ इसके शासन काल से माना जाता है। प्रमुख चित्रकार निम्न लिखित हैं:

- मीर सय्यद अली
- अब्दु समद

अकबर : प्रमुख चित्रकार निम्न लिखित है:

- मीर सय्यद अली
- अब्दु समद
- दसवंत खाँ (अग्रणी चित्रकार)

जहांगीर : चित्रशाला की स्थापना अकारिजा खाँ के नेतृत्व में आगरा में हुई। जहांगीर के काल में सबसे प्रमुख चित्रकार

- उस्ताद मंसूर
- अबुल हसन

यह दोनों प्राकृतिक चित्र बनाने में माहिर मने जाते थे।

जहांगीर के काल में बिशनदास को भी अग्रणी चित्रकार माना गया है। जो की मानव छवि बनाने में माहिर था। जहांगीर स्वयं एक महान चित्रकार था।

मुगलकालीन प्रसिद्द चित्र :

1. एक कृशकाय घोड़े के साथ भटकते हुए मजनू का चित्र : बसावन के दवरा (अकबर के कला में)
2. साइबेरिया का एक बिरला सारस : उस्ताद मंसूर (जहांगीर के काल में)
3. बंगाल का अनोखा पुष्प : अबुल हसन (जहांगीर के काल में)
4. ड्यूटर पाल का चित्र : अबुल हसन (जहांगीर के काल में)
5. तुजुके जहांगीरी के मुख्य पृष्ठ पर जहांगीर का चित्रण : अबुल हसन (जहांगीर के काल में)

भारत का इतिहास - अध्याय 8

(आधुनिक भारत का इतिहास)

यूरोपियो का भारत में आगमन

14वी - 15वी शताब्दी में भारत और यूरोप के मध्य स्तिथ समुन्द्र पर अरबी लोगो का अतिक्रमण था। यह अरबी लोग भारत से मसाले खरीद कर यूरोपीय देशो में उच्च दामों पर बेचते थे।

इन अरबी लोगो के बिचौलियापन को समाप्त करने के लिए यूरोप के पॉप ने एक आदेश जारी कर यूरोप के 2 देश **पुर्तगाल** व **स्पेन** को भारत के साथ जलीय मार्ग खोजने का आदेश दिया इस आदेश को **"पापलबूल"** कहा गया।

सर्वप्रथम स्पेन का नाविक **कोलंबस** ने अपनी यात्रा प्रारम्भ की, वह जल में भटक गया, और एक द्वीप पर पंहुचा जिसका नाम इंडीज बताया, कालांतर में यही इंडीज - **वेस्ट इंडीज** के नाम से प्रसिद्द हुआ। इसी प्रकार 1484 ई. में उसने **अमेरिका** की खोज की।

कोलम्बस के बाद **वास्कोडिगामा** ने प्रयास किया। यह पुर्तगाली नाविक था जो की 1497 ई. में अफ्रीका महाद्वीप के चक्कर लगते हुए। 90 दिन की यात्रा के बाद **आशा अंतरीप द्वीप**(Cape of good hope) पर पंहुचा यहाँ उसे एक गुजरती यात्री(मछुआरा) अब्दुल माणिक मिला। इसी की सहायता से वह **20-5-1498** को कलिकट बंदरगाह पंहुचा। **कालीकट का एक और नाम कप्पकडाबू** था। कालीकट का शासक हिन्दू जमोरिन था जिसने वास्कोडिगामा का स्वागत किया। वापस जाते समय राजा ने वास्कोडिगामा को 4 जहाज मसाले के दिए, जिसे वापस जा कर उसने 50 गुना मुनाफे में बेचा। पुर्तगालियों ने अपनी **प्रथम व्यापारिक कोठी 1503 - कोचीन में** स्थापित की।

वास्कोडिगामा कुल 3 बार भारत आया:

- 1498 ई.
- 1502 ई.
- 1524 ई. अंतिम बार पुर्तगाली वायसराय के रूप में भारत आया।

पुर्तगालियों का प्रथम वायसराय फ्रांसिस्को-दी-अलमिडा था। जिसने ब्लू वाटर पोलिसी अपनायी।

यूरोपियो का भारत में आगमन का क्रम: पुर्तगाली > डच > अंग्रेज > डेनिस > फ्रांसीसी

सबसे पहले पुर्तगाली आये और सबसे अंत में गए, सबसे अंत में फ्रांसिसी आये परन्तु सबसे पहले गए। अंग्रेज डचो से पूर्व भारत में आये परन्तु व्यापारिक कंपनी की स्थापना डचो के बाद में हुई।

पुर्तगाली का भारत में आगमन

1661 में तत्कालीन सम्राट चार्ल्स द्वितीय द्वारा पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से विवाह करने पर बम्बई दहेज़ में दिया गया।

अन्य महत्वपूर्ण तत्व :

पहेली बार तम्बाकू का पौधा 1608 में जहांगीर के काल में पुर्तगालीयो द्वारा लाया गया।

पुर्तगाली शासन के दौरान ही मध्य अमेरिका से मूंगफली आलू पपीता मक्का अनानास व अमरुद का प्रवेश भारत में करवाया गया।

इसके आलावा बादाम लीची काजू इत्यादि भारत आये।

1556 ई. में भारत में प्रथम प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना हुई।

भारतीय जड़ीबूटियों पर प्रथम पुस्तक 1563 में प्रकाशित हुई।

डच व्यापरयो का आगमन

डच होलेंड/नीदरलेंड के निवासी थे। 1596 में प्रथम डच व्यक्ति कर्नेलिस-डे-डहस्तमान भारत आया।

NOTE : 1602 में डच संसद ने एक अधिनियम पारित कर। यूनिटेड ईस्ट इण्डिया कंपनी ऑफ नीदरलेंड की स्थापना की। तथा इसे भारत में 21 वर्षो हेतु व्यापर करने का अधिकार दिया।

NOTE : 1605 में प्रथम डच कंपनी की स्थापना मुसलीपट्टनम में की जहा पर निल का निर्यात होता था। अंग्रेजो से बाद में आये थे लेकिन कंपनी पहले शुरू की।

अंग्रेज कंपनी का आगमन

यूरोपियो में सबसे सफल कंपनी अंग्रेजो की थी। सर्व प्रथम अंग्रेज व्यापारी के रूप में जॉन मिल्डेनहॉल 1597 में अकबर के शासन काल में भारत आया 7 साल भारत में रहा परन्तु अकबर से व्यापारिक फरमान प्राप्त नहीं कर पाया।

1599 ई में पूर्वी देशो के साथ व्यापर करने के लिए ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ ने 217 लोगो के एक समूह को 15 वर्ष हेतु एक अधिकार पत्र प्रदान किया। इस समूह में वह स्वयं भी शामिल थी जिसका नाम "governor and company of merchants of London trading into the east indies" था। एलिजाबेथ प्रथम ने शाही फरमान देकर 15 वर्ष हेतु पूर्वी देशो के साथ जो व्यापारिक अधिकार पत्र प्रदान किया इसी को Charter Act (राजलेख अधिनियम) कहा जाता है।

1608 ई. में प्रथम व्यापारिक जहाज हैक्टर(रेड ड्रैगन) की सहायता से कैप्टेन हॉकिंस सूरत पंहुचा तथा इसे अपनी प्रथम व्यापारिक कोठी बनाया। 1609 में जहांगीर के दरबार में आगरा पंहुचा जहा उसने जहांगीर से फ़ारसी भाषा में बात की इसी से प्रभावित हो कर जहांगीर ने उसे **खान की उपाधि** दी तथा 400 का मनसब दिया।

उसने बादशाह से सूरत में व्यापारिक कोठी खोलने की अनुमति लेना चाही लेकिन पुर्तगालियों के इसका विरोध करने पर जहांगीर उसे अनुमति नहीं दे पाया।

1613 में हॉकिंस के चले जाने बाद जहांगीर ने फरमान जारी कर सूरत की कोठी को वैधानिकता प्रदान की।

अंग्रेजो की प्रथम वैधानिक फैक्टरी 1611 में मुसलीपट्टनम(आंध्र प्रदेश) में स्थापित की गयी।

1615 में जेम्स प्रथम के राजदूत के रूप में कंपनी की और से **सर टॉमस रॉ स्मिथ** भारत आया और जनवरी 1616 ई. में वह जहांगीर से अजमेर के मैगजीन के किले में मिला और व्यापारिक फरमान प्राप्त करने में सफल रहा। वह भारत में 3 साल तक रहा और 1619 में पुनः इंग्लैंड चला गया। अंग्रेजो का प्रथम गवर्नर माना जाता है।

1698-99 में कंपनी ने बंगाल के सुल्तान अजीमुशान से एक अधिकारिक पत्र प्राप्त कर बंगाल के तीन गांव - सुतनुति, गोविंदपुर, व कालीघाट 1200 रूपए वार्षिक में जमींदारी ले ली, तथा यही पर एक फोर्ट विलियम की स्थापना की जिसे कालांतर में कलकत्ता के नाम से जाना जाता है। जिसकी नीव **जॉब चारनौक** के द्वारा राखी गयी।

1701 में औरंगजेब ने एक फरमान जारी किया तथा कहा की भारत में रहने वाले तमाम यूरोपियो को गिरफ्तार कर लिया जाए।

NOTE 1694 में ब्रिटिश संसद एक अधिनियम जारी कर ब्रिटैन के समस्त नागरिको को भारत में व्यापर करने का अधिकार दे दिया इस प्रकार भारत में एक और कंपनी "English company trading to the east indies" की स्थापना हुई

1702 ई. में ब्रिटेन संसद ने पुनः अधिनियम जारी कर दोनों कंपनियों का विलय कर दिया और फिर इसका नाम "The united company of England trading to the east indies" रखा।

1707 में इस कंपनी के अधिकारों को असीमित कर दिया गया। 1715 में इस कंपनी ने मुग़ल सम्राट फ़र्रुख़सियर के समक्ष जॉन शरमन की अध्यक्षता में एक शिष्ट मंडल भेजा। इस शिष्ट मंडल में हेमिल्टन नामक एक शैल्य चिकित्सक भी था जिसने फ़र्रुख़सियर के एक असाध्य रोग का इलाज किया। तथा उसकी पुत्री का भी इलाज किया। इसी से प्रस्सन हो कर फ़र्रुख़सियर ने अंग्रेजो को बंगाल में कर मुक्त व्यपार करने का अधिकार पत्र प्रदान किया। यही अधिकार पत्र भारत में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना का कारण मन जाता है। अतः इतिहास करो ने फ़र्रुख़सियर को घृणित कायर या मुर्ख लम्फट राजा कहा है।

भारत के प्रमुख गवर्नर , गवर्नर जनरल, वायसराय

टॉमस रॉ स्मिथ अंग्रेजो का प्रथम राजदूत व गवर्नर

रोबर्ट क्लाइव : बंगाल का प्रथम गवर्नर। प्लासी के युद्ध के समय गवर्नर इसे भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का जनक माना जाता है।

वारेन हेस्टिग्स : सम्पूर्ण बंगाल का गवर्नर जनरल। पहली बार राज्यों को मिलाया गया। इसी के समय राजस्व अधिकारी के रूप में कलेक्टर का पद सृजित किया गया। प्रथम कलेक्टर जॉन कैम्पबेल।

लॉर्ड विलियम बेंटिग : 1833 के चार्टर अधिनियम के द्वारा इसे सम्पूर्ण भारत का गवर्नर जनरल बनाया गया। इसी से मिल कर राजा राम मोहोन राय ने सती प्रथा डाकण प्रथा इत्यादि प्रथाओं पर रोक लगाया। इसी के शासन काल में मेकाले भारत आया (भारतीय लोगो की शिक्षा हेतु)।

NOTE: भारतीय लोगो की शिक्षा हेतु पहली बार प्रावधान 1813 के चार्टर अधिनियम में किया गया। जहा भारतीय लोगो की शिक्षा के लिए 1 लाख रूपये वार्षिक का प्रावधान किया गया। इसी अधिनियम के द्वारा ईसाई मिशनरिओ को भारत में ईसाई धर्म का प्रसार प्रचार करने की अनुमति दी।

लॉर्ड डलहौजी (1848-1856):

एक ही शासन काल में सर्वाधिक समय तक (8 वर्ष) शासन करने वाला गवर्नर जनरल था। इसने राज्य हड़प निति से सतारा, अवध, उदयपुर, झांसी को हड़प लिया। इसने गोद निषेध प्रथा चलाई जिसे अंग्रेजी में "doctrine of lapse" कहते है। इसे भारत में रेलवे का जनक माना जाता है भारत में प्रथम रेल 16 अप्रैल 1853 को चलाई गई **बम्बई से ठाणे** इंजन का नाम **ब्लैक ब्यूटी** था। लॉर्ड डलहौजी को भारत में डाक-तार-बेतार सेवा का जनक कहा जाता है। सार्वजनिक निर्माण विभाग (PWD) की स्थापना इसी के प्रशासन में हुई। भारत में प्रथम कारखाना 1848 में बना। रुड़की विश्वविद्यालय की स्थापना इसी के शासन काल में हुई। वुड डिस्पैज का नियम इसी के शासन काल में लागु किया गया, जिसमे प्राथमिक व उच्च शिक्षा हेतु पहली बार अलग प्रावधान किये गए। अतः **वुड डिसपेज** को **भारतीय शिक्षा का मेग्ना कार्टा** कहा जाता है।

लॉर्ड केनिंग : क्रांति के समय भारत का गवर्नर जनरल था। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा नियुक्त अंतिम गवर्नर जनरल। 1857 की क्रांति के दौरान पकडे गए भारतीय स्वंत्रता सेनानियों को मुक्त कर दिया गया। अतः इसे दयालु गवर्नर जनरल भी कहा जाता है। क्रांति के बाद भारत का शासन सीधे सीधे ब्रिटिश ताज को हस्तानांतरित हो गया तथा एक नया पद वायसराय सृजित किया गया। अतः लॉर्ड केनिंग भारत का प्रथम गवर्नर जनरल & वायसराय बना।

लार्ड मेयो : अजमेर में मेयो कॉलेज की स्थापना की 1872 । आधुनिक भारत में पहली बार जनगणना की गई। एक अफगान के द्वारा इसकी गोली मार के हत्या कर दी गई।

NOTE : पहला ऐसा गवर्नर जनरल जिस पर देशद्रोह का आरोप लगाया गया - क्लाइव

लार्ड लिट्टन (1876 - 80) : 1876 में इसके काल में पहली बार दिल्ली दरबार का आयोजन किया गया। रॉयल टाइटल एक्ट के जरिये ब्रिटॉन के सम्राट को भारत का सम्राट घोषित कर दिया गया। वर्नाकुलर प्रेस एक्ट के द्वारा भारतीय समाचार पत्रों पर प्रतिबंद लगा दिया। आर्म्स एक्ट के द्वारा 1878 भारतीय लोगो के हथियार रखने पर प्रतिबंद लगा दिया। इसने सिविल सेवा परीक्षाओ में बैठने की आयु घटा कर 19 वर्ष कर दी। भारतीयों को पहली बार सिविल सेवा परीक्षाओ में बैठने का अधिकार 1856 दिया गया।

NOTE: प्रथम ICS बनने वाले व्यक्ति सत्येंद्र नाथ टैगोर थे।

लॉर्ड रिप्पन : पहली बार व्यवस्थीत जनगणना 1881 में हुई। इसे स्थानीय स्वशासन का जनक कहा जाता है अर्थात यह सत्ता का विकेन्द्रीकरण करने वाला प्रथम गवर्नर जनरल & वायसराय था। इसने लॉर्ड लिट्टन द्वारा लागु किये गए वर्नाकुलर प्रेस एक्ट को समाप्त कर दिया।

NOTE : भारीतय प्रेस का मुक्तिदाता चार्ल्स मेटकॉफ को कहा जाता है।

लॉर्ड कर्जन (1899-1905): 1903 अकाल आयोग की स्थापना की। 1905 में बंगाल का विभाजन यह कहते हुए करदिया की बहुत बड़ा क्षेत्र हे सुव्यवस्थित प्रशासन संचालित नहीं किया जा सकता हे। अतः क्षेत्रीयता के आधार पर भारत को पहली बार विभाजन का श्रेय कर्जन को जाता है।

NOTE: साम्प्रदायिकता के आधार पर भारत में पहली बार 1909 में मार्ले मिंटो के द्वारा किया गया जब पहली बार मुस्लिमो हेतु पृथक निर्वाचन की व्यवस्था की गयी। 1911 में बंग भंग वापस ले लिया गया तथा दिल्ली को राजधानी घोषित कर दिया गया, तथा 1912 में दिल्ली को राजधानी बना दिया गया।

लॉर्ड माउंट बेटन: स्वंत्रता के समय भारत का प्रथम गवर्नर जनरल एंड वायसराय। अंग्रेजो द्वारा नियुक्त अंतिम गवर्नर जनरल एंड वायसराय

C. राजगोपालाचारी: स्वतंत्र भारत का प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल एंड वायसराय था।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

1 लॉर्ड डलहौजी के शासन काल में हिन्दू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम 1856 लागु किया गया। डलहौजी के काल में ही लोक सेवा विभाग की स्थापना की गयी

2 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के समय गवर्नर जनरल लॉर्ड डफरिन थे।

अंग्रेज व बंगाल

1717 के फरमान का अंग्रेज दुरुपयोग कर रहे थे। 1740 में बंगाल का शासक अलीवर्दी खां बना। इसने इस दुरुपयोग को रोकने का प्रयत्न किया। परन्तु सफल नहीं हो पाया।

1756 में अलीवर्दी खां की मृत्यु हुई तथा उसका दोहित्र सिराजुद्दोला शासक बना। सिराज जब शासक बना तो उसके तीन प्रमुख विरोधी थे

1 पूर्णिया का गवर्नर शौकत बैग

2 उसकी मौसी घसीटी बेगम

3 उसका दामाद मीर जाफ़र

सिराज ने अक्टूबर 1756 में मनिहारी के युद्ध में शौकत बैग को पराजित कर दिया। घसीटी बेगम पर देश द्रोह का आरोप लगा कर उसे जेल में दाल दिया।

मीर जफ़र को सेनापति के पद से हटा कर मीर मदान को सेनापति बनाया

प्लासी के युद्ध के कारण

- दस्तक का दुरूपयोग
- अंग्रेजो को दी गई सुविधाओं का दुरपयोग
- कासिम बाजार पर नवाब का अधिकार: सिराज ने 4 जून 1756 को कासिम बाजार पर अधिकार कर लिया
- कलकत्ता पर अधिकार : 16 जून 1756 को कलकत्ता पर अधिकार कर लिया तथा अंग्रेज यहाँ से भाग छूटे।
- कलकत्ता पर अधिकार करने के बाद सिराज ने इसका नाम बदल कर अलीनगर रखा।
- 20 जून 1756 को हॉलवेल ने अपने 145 साथियो के साथ सिराज के सामने आत्म समर्पण करदिया।
- ब्लैक हॉल की घटना : हॉलवेल के अनुसार कलकत्ता पर अधिकार के समय सिराज ने 20 जून 1756 को 18 * 14.10 वर्ग फुट के एक कमरे में 146 अंग्रेजो को ठूस ठूस के भर दिया। जून की इस भीषण गर्मी में 123 लोग मारे गए। कलकत्ता में इस घटना को **कालकोठरी की घटना** कहा। रॉबर्ट क्लाइव को इस घटना की खबर मिली तो क्लाइव ने अलीनगर पर पुनः आक्रमण किया अंततः सिराज व क्लाइव के बिच **9 फरवरी 1757 को अलीनगर की संधि** हुई। जिसके अनुसार अंग्रेजो को उनके सभी अधिकार पुनः लौटा दिए गए।

क्लाइव ने सिराज के खिलाफ षडियंत्र रचा और सिराज के दरबार के प्रमुख व्यक्तियों अमीचंद को धन का लालच देकर तथा मीर जाफ़र को बंगाल का नवाब बनाने का लालच देकर अपनी और मिला लिया। क्लाइव ने एक नकली दस्तावेज तैयार किया जिसमे जाफर व अमीचंद की शर्ते लिखी गई, जिसके अनुसार अमीचंद को कुल राजस्व का 50 प्रतिशत धन का लालच देना व जाफर को बंगाल का नवाब बनाना इत्यादि शर्ते शामिल थी। क्लाइव ने इसके उप्पर हस्ताक्षर किये।

प्लासी का युद्ध : 23 जून 1757

इस युद्ध में रॉबर्ट क्लाइव ने सिराज को पराजित किया। सिराज का सेनापति मीर मदान युद्ध में लड़ते हुए मारा गया। दूसरे प्रमुख सेनापति मीर जाफर ने उसके साथ विश्वासघात किया तथा सिराज को महल जाने के लिए बोला जहा जाफ़र के पुत्र मीरन ने सिराज को मार डाला।

इतिहास कार पन्नीकर ने प्लासी के युद्ध को एक सोदा बताया और कहा की बंगाल के धनि लोगो व जाफर ने नवाब को अंग्रेजो के हाथो बेच दिया

मीर जाफर को **आधुनिक भारत का प्रथम देशद्रोही** माना जाता है।

प्लासी के युद्ध के बाद बंगाल का शासक अंग्रेजो के हाथो की कटपुतली मात्र बन गया

मीर जाफ़र 1757 - 1760:

मीर जाफर को क्लाइव ने बंगाल का नवाब बनाया जाफर ने क्लाइव को 24 परगनो की जमींदारी दी तथा मुग़ल बादशाह आलम गिर द्वितीय से क्लाइव को उमरा की उपाधि दिलवाई।

जाफ़र ने 1757 से 60 के दौरान 3 करोड़ रुपये व अनेक उपहार क्लाइव को दिए अतः जाफर को क्लाइव का गीदड़ कहा जाता है।

जाफर अंग्रेजो से दुखी हो गया और वह उनके चंगुल से निकलने का प्रयत्न करता रहा। 1760 में अंग्रेजो ने जाफर के स्थान पर उसके दामाद मीर कासिम को बंगाल का नवाब बना दिया।

वडेरा का युद्ध 1759 में जाफर के शासन काल में ही लड़ा गया।

मीर कासिम 1760 - 1763

अलीवर्दी खाँ के उत्तराधिकारिओ में सबसे योग्य शासक। उसने नवाब बनते ही हॉलवेल को 2.70 लाख व वेंसिटार्ट को 5 लाख रुपये उपहार में दिए

कंपनी के हस्तक्षेप से बचने हेतु अपनी राजधानी को मुर्शिदाबाद से मुंगेर स्थानांतरित किया।

इसने भारतीय व्यापारियों को भी सभी कर से मुक्त कर दिया।

कंपनी ने 1763 में कासिम को हटा कर जाफर को पुनः नवाब बना दिया। 1763 में पटना हत्या काण्ड में मीर कासिम ने हजारो अंग्रेजो को जिन्दा जला कर मार डाला।

दिसंबर 1763 में वह अवध चला गया, तथा अवध के नवाब शुजाउद्दौला के साथ मिल कर एक सयुंक्त सेना का गठन किया तथा तत्कालीन मुग़ल बादशाह शाह आलम द्वितीय को भी अपनी तरफ सम्मिलित कर लिया।

बक्सर का युद्ध : 23 अक्टूबर 1764

बिहार के आगरा जिले में स्तिथ है बक्सर। इस युद्ध में अंग्रेजी सेना का नेतृत्व हैक्टर मुनरो ने किया जब की गवर्नर वेंसिटार्ट था। हैक्टर मुनरो की सेना ने शुजाउद्दौला, मीर कासिम, व शाह आलम द्वितीय की सयुक्त सेना को बुरी तरह पराजित किया। भारतीय इतिहास में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना हेतु यह निर्णायक युद्ध माना जाता है।

इस समय बंगाल का नवाब जाफर था। 1765 में उसकी मृत्यु हुई और उसकी मृत्यु के बाद उसके पुत्र नज़्मुद्दोला को बंगाल का नवाब बनाया गया।

1765 में क्लाइव एक बार पुनः गवर्नर बन कर भारत आया। क्लाइव ने अवध के नवाब शुजाउद्दौला के साथ 16 अगस्त 1765 को इलाहबाद की संधि की। इस संधि में 50 लाख रूपए युद्ध की क्षतिपूर्ति हेतु शुजाउद्दौला द्वारा क्लाइव को दिए गए।

क्लाइव ने मुग़ल बादशाह आलम द्वितीय से बंगाल बिहार व उड़ीसा की जमींदारी भी ले ली तथा इसके बदले 26 लाख रुपये सालाना मुग़ल बादशाह को दिए गए।

रॉबर्ट क्लाइव ने बंगाल में द्वेद शासन की स्थापना की। इसी द्वेद शासन के दौरान उसने 1766 से लेकर 1770 तक लगभग 7 करोड़ रूपए बंगाल से राजस्व के रूप में वसूले। इसी दौरान बंगाल में भयंकर अकाल पड़ा और लगभग डेढ़ करोड़ लोग बंगाल में भूखमरी के कारण मर गये।

1857 की क्रांति :

- ब्रिटेन की महारानी : विक्टोरिया

- ब्रिटेन के PM : पॉम स्ट्रेन

- भारत का गवर्नर जनरल : केनिंग

क्रांति पर प्रमुख पुस्तके :

1 अशोक मेहता : द ग्रेट रिबेलियन

2 वीर सावरकर : भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम

3 S. N. सेन : 1857 की क्रांति

4 R. C. मजूमदार : सिपाही विद्रोह (The Sepoy Mutiny)

1857 की क्रांति के 3 चरण माने जाते है।

1. 1740 से 1765 : इस चरण में अंग्रेजो ने भारतीय रियासतों के समकक्ष आने की निति अपनाई
2. 1765 से 1813 इस दौरान अपनाई गई निति को "Ring Phase या अधीनस्त घेरे की निति कहा जाता है जिसके तहत भारतीय राज्यों को पडोसी राज्य से सुरक्षा प्रदान करने हेतु अंग्रेजो ने उनके साथ वायदा किया तथा अप्रत्यक्ष रूप से भारीतय राज्यों पर अपना शासन स्थापित कर लिया। यह निति मुख्यतः वेलेज़ली के द्वारा अपनाई गई (सहायक संधि)।
3. 1813 से 1857 : इस दौरान अंग्रेजो ने अधीनस्त पार्थिक्य की निति अपनाई, जिसके द्वारा इन्होने भारतीय शासको को अपनी शक्तियों का एहसास कराया। 1848 में लॉर्ड डलहौजी ने अंतिम मुग़ल सम्राट बहादुर शाह ज़फर को कहा की "लाल किला खली कर दे" 1856 में केनिंग ने बहादुर शाह ज़फर द्वितीय को पत्र लिखा और कहा की वह भारत में अंतिम मुग़ल बादशाह होगा।

1857 की क्रांति के कारण:

1 आर्थिक कारण

स्थाई बंदोबस्त : 1793 ई. में लॉर्ड कार्नवालिस गवर्नर जनरल बन कर आया तथा उसने राजस्व वसूलने की एक नयी व्यवस्था को लागु किया। इस व्यवस्था के तहत सम्पूर्ण भूमि का स्वामी जमींदार को बना दिया गया।

यह अधिकार उसे 20 वर्ष हेतु दिया गया। इस व्यवस्था के तहत राजस्व निश्चित कर दिया गया।

जमींदार को किसी एक निश्चित दिन सूर्यास्त होने से पूर्व राजस्व जमा करवाना होता था। ऐसा नहीं कर पाने की स्तिथि में सूर्यास्त कानून की सहायता से जमींदार की जमींदारी नीलाम कर दी जाती थी।

यह व्यवस्था बंगाल बिहार व उड़ीसा में लागु की गयी।

रैय्यतवाडी : यह व्यवस्था कप्तान रीढ़ व टॉमस मुनरो द्वारा लागु की गयी। इस व्यवस्था को बम्बई व मद्रास के क्षेत्रों में लागु किया गया। इस व्यवस्था में सम्पूर्ण भूमि का स्वामी किसान ही होता था, और किसान ही सीधे राजस्व अंग्रेजो को जमा करवाता था। इस व्यवस्था में राजस्व निर्धारित नहीं था। रैय्यतवाडी व्यवस्था भारत में सर्वाधिक 51 प्रतिशत भाग पर लागु थी।

महालवाड़ी : महालवाड़ी व्यवस्था कैप्टेन बर्ड व मैकेंज़ी के द्वारा लागु की गयी। यह व्यवस्था पंजाब अवध आगरा व मध्य भारत में लगाई गई। इस व्यवस्था के तहत महाल अर्थार्त गांव का राजस्व किसी एक व्यक्ति के द्वारा अंग्रेजो को जमा करवाया जाता था।

तालुकेदारी : अवध के क्षेत्र में : महालवाडी व्यवस्था से आमिर वर्ग ओर ज्यादा आमिर हो कर शहर में निवास करने लगा इस स्तिथि में किसानो व जमींदारों के बिच राजस्व इक्कट्ठा करने के लिए एक नविन वर्ग का विकास हुआ जिसे तालुकेदार कहा जाता था।

धार्मिक कारण :

1806 में वेल्लौर विद्रोह हुआ, क्युकी वेल्लौर के सैनिको को उनके धार्मिक चिन्ह माथे पर लगाने से मना कर दिया।

1813 में ईसाई मिशनरी भारत आये तथा ईसाई धर्म का प्रचार प्रसार करने लगे।

1830 में धर्म परिवर्तित करने की इजाज़त दे दी गयी।

1850 में धार्मिक निर्योग्यता अधिनियम पारित किया गया, जिसके द्वारा कहा गया की यदि कोई व्यक्ति ईसाई धर्म में परिवर्तित होता है तो उसे उसकी पैतृक सम्पत्ति से वंचित नहीं किया जायेगा।

तात्कालिक कारण :

लॉर्ड डलहौजी की गोद निषेध व राज्य हड़प निति।

1856 में सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम बनाया गया, जिसके तहत भारतीय सैनिको व अधिकारियो को समुन्द्र पार विदेशो में कही भी भेजा जा सकता है।

कलकत्ता के दमदम शास्त्रागार में नए चर्बी वाले कारतूस तथा पहले से प्रचलित ब्राउन बेस राइफल के स्थान पर एक नयी एनफील्ड नामक राइफल लाइ गई, जिसमे इन नए कारतूसों का प्रयोग होना था। सैनिको में यह अफवाह फैला दी गयी की इन कारतूसों में गाय व सूअर की चर्बी लगी हुई है।

विद्रोह की रुपरेखा

कुछ इतिहास करो के अनुसार दो भारतीय अज्जीमुल्ला(नाना साहब के सलाहकार) व सतारा के अपदस्त राजा रानोजी, लॉर्ड डलहौजी के द्वारा अपनाई गई व्यपगत निति का विरोध करने व उसकी शिकायत करने हेतु लन्दन गए। वही पर उन्होंने क्रांति की योजना बनाई। भारत वापस लौटते समय क्रीमिया के शासक उमर पाशा से मिले। 31 मई 1857 का दिन विद्रोह के लिए चुना गया। क्रांति के प्रतिक चिन्ह के रूप में कमल का फूल और रोटी को चुना गया।

कमल का फूल विद्रोह में शामिल होने वाली सभी सैनिक टुकड़ियों को तथा रोटी का चिन्ह गांव के मुखिया व गरीब किसानो तक पहुंचाया गया।

विद्रोह का आरम्भ :

चर्बी वाले कारतूसों के खिलाफ पहला विद्रोह कलकत्ता की बैरकपुर छावनी के एक सैनिक मंगल पण्डे जो की तत्कालीन गाजीपुर(वर्तमान - बलिया) का रहने वाला था। इसने कारतूसों का प्रयोग करने से मना करते हुए कैप्टेन बाग़ और मेजर ह्यूसन को गोली मरी और मार डाला।

मंगल पण्डे 34वी नेटिव इन्फेन्ट्री रेजिमेंट का सैनिक था। उसे इस हत्या कांड के बाद 8 अप्रैल 1857 को फांसी दे दी गयी। इस प्रकार क्रांति के दौरान शहीद होने वाला प्रथम व्यक्ति मंगल पण्डे था।

10-5-1857 को मेरठ में 20 वी N. I. रेजिमेंट के सैनिको ने विद्रोह कर दिया। तथा अपने अन्य साथी सैनिको को जेल से मुक्त किया और दिल्ली की और प्रस्थान किया।

12-5-1857: को दिल्ली पर कब्ज़ा किया और बहादुर शाह ज़फर द्वितीय को भारत का बादशाह व विद्रोही नेता घोषित किया।

4 जून 1857 को झाँसी में गंगाधर राव की विधवा रानी लक्ष्मी बाई के नेतृत्व में विद्रोह की शुरुआत हुई।

17 जून 1857 को अंग्रेज जनरल ह्यूरोज से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुई।

ह्यूरोज ने रानी की वीरता से प्रभावित हो कर कहा की "भारतीय क्रांतिकारियों में वह एक मात्र महिला मर्द थी" तथा लक्ष्मी बाई को "महलपरी" कहा गया।

प्रमुख विद्रोह व उसका दमनः

विद्रोह	नेता	विद्रोही दमन	
दिल्ली	बहादुरशाह द्वितीय	निकोलसन लारेंस	11 may
लखनऊ	बेगम हजरत महल	कैम्पबेल	4 june
कानपुर	नाना साहब	कैम्पबेल	5 june
झांसी	रानी लक्ष्मीबाई	ह्यूरोज	4 june
इलाहाबाद	लियाकत अली	कर्नल नील	6 june
बनारस	सेना, जनसाधारण	कर्नल नील	
बिहार	कुंवर सिंह	विलियम टेलर	
पंजाब	सेना, जनसाधारण	जॉन लारेंस	
बरेली	बख्त खां	कैम्पबेल	june
फतेहपुर	अजीमुल्ला	जनरल रेनर्ड	
फैजाबाद	मौलवी	अहमद-उल्ला	

1857 की क्रांति के लिए विभिन्न विचारको द्वारा दिए गए विचार

- 1 I. R. Rees कट्टरपंथियों का ईसाइयो के विरुद्ध संग्राम
- 2 V. D. Savarkar : भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम
- 3 Dr. Tarachand : राष्ट्रीय विप्लव
- 4 Ashok Meheta :राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए सुनियोजित संग्राम
- 5 Dr. S. N. Sen : यह राष्ट्रीय विद्रोह नहीं था क्युकी उस समय राष्ट्रीयता की भावना लोगो में नहीं थी।
- 6 Enchison : यह पहला ऐसा मौका था जब भारतीय हिन्दुओ और मुसलमानो को एक दूसरे से नहीं लड़ा सकते थे।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान दिए गए नारे :

- वन्दे मातरम : बंकिमचंद्र चटर्जी (आनंद मठ)
- जण गण मन अधिनायक जय हो : रविंद्र नाथ टैगोर
- वेदो की ओर लोटो : दयानन्द सरस्वती
- इन्क्लाब जिंदाबाद : भगत सिंह
- करो या मारो : गाँधी जी
- सरे जहाँ से अच्छा : मोहमद इकबाल
- जय हिन्द, दिल्ली चलो : शुभाष चंद्र बोस
- राष्ट्रीयता एक धर्म है : अरिवंद घोष
- स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है : बाल गंगाधर तिलक
- दिन दुखियो की सेवा ही सच्ची ईश्वर की सेवा है : विवेकानंद
- तुम मुझे खून दो में तुम्हे आज़ादी दूंगा : रास बिहारी बोस(originally) Then S.C. Bose

गाँधी युग और राष्ट्रीय आंदोलन

मोहनदास करम चंद गाँधी

जन्म : 2 अक्टूबर 1869

माता का नाम : पुतली बाई

पिता का नाम : करम चंद

पत्नी का नाम : कस्तूरबा गाँधी

मृत्यु : 30 मार्च 1948 (शहीद दिवस)

महात्मा गाँधी की उपाधिया :

- 1 बापू : - सरोजनी नायडू
- 2 राष्ट्रपिता : - शुभाष चंद्र बोस
- 3 मलंग बाबा : - खान अब्दुल गफ्फार खान
- 4 देशद्रोही फ़क़ीर : - चर्चिल
- 5 अर्धनग्न फ़क़ीर : - फ्रैंक मोरिस (मीडिया कर्मी)
- 6 महात्मा : - रविंद्र नाथ टैगोर
- 7 भारतीय राजनीती का बच्चा : - एनी बिसेन्ट
- 8 केसर-ए-हिन्द: अंग्रेज
- 9 भारतीय लोगो का सार्जेंट: अंग्रेज

गोल मज़े सम्मलेन (Round Table Conference) :

1 1930 ई. : पहला गोल मज़े सम्मलेन

2 1931 ई. : दूसरा गोल मज़े सम्मलेन

3 1932 ई. : तीसरा गोल मज़े सम्मलेन

गांधीजी के बारे में मुख्य तथ्य :

जन्म 2 अक्टूबर 1869 को पोरबंदर काठियावाड़ गुजरात में हुआ ।

1876 प्राइमरी स्कूल में अध्ययन के साथ ही साथ कस्तूरबा से सगाई हुई।

1881 में राजकोट हाई स्कूल में अध्ययन के लिए गए। 13 वर्ष की आयु में विवाह कर दिया गया।

भावनगर स्कूल से मेट्रिक पास कर शामलदास कॉलेज में प्रवेश लिया परन्तु 1 सत्र बाद ही कॉलेज छोड़ दिया।

1888 में प्रथम पुत्र का जन्म। वकालत की पढाई हेतु लन्दन गए। 3 साल की पढाई पूरी कर के 1891 में वापस देश लौटे।

बम्बई कोलकत्ता तथा राजकोट में वकालत की।

1893 में भारतीय मुस्लिमो द्वारा तथा एक व्यवसाय संघ की मांग पर तथा एक मुस्लिम व्यापारी अब्दुल्ला खाँ के निमंत्रण पर दक्षिण अफ्रीका के ट्रॅन्सवेल की राजधानी प्रोटोरिया पहुंचे तथा वहा रंग भेद निति का सामना किया।

1894 में अफ्रीका में नेटाल इंडियन कांग्रेस की स्थापना की तथा एक साप्ताहिक समाचार पत्र "द इंडियन ओपिनियन" भी प्रकाशित करवाया

1901 में ये सपरिवार भारत लौट आये। तथा दक्षिण अफ्रीका में रह रहे भारतीय लोगो को आश्वासन दिया की उन्हें जरुरत पड़ने पर वह पुनः अफ्रीका लौट आएंगे।

1901 के दौरान ही गांधीजी कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में शामिल हुए तथा बम्बई में अपनी वकालत का एक दफ्तर खोला।

1902 में भारतीय समुदाय द्वारा बुलाए जाने पर पुनः अफ्रीका चले गये।

1903 में जोहान्सबर्ग में अपना दफ्तर खोला।

1904 में इंडियन ऑपिनियन सोसाइटी बनाई।

1906 में जुलु विद्रोह के दौरान भारतीय एम्बुलेंस सेवा तैयार की

जोहान्सबर्ग में अपना प्रथम सत्याग्रह प्रारम्भ किया। अनेक विरोधो का सामना करना पड़ा इसी के फल स्वरुप 1908 में सत्याग्रह के लिए पहली बार जोहान्स बर्ग की जेल में रहे।

1910 जोहान्सबर्ग में टॉलस्टाय फर्म(आश्रम) की स्थापना की गांधीजी ने डरबन में फीनिक्स फर्म आश्रम की भी स्थापना की थी।

1913 रंगभेद तथा दमनकारी नीतियों के विरुद्ध अपना सत्याग्रह जारी रखा। तथा इसी हेतु इन्होने "द ग्रेट मार्च" किया जिसमे लगभग 2000 भारतीयों ने न्युक्लेन्स से लेकर नेटाल तक की यात्रा की। अफ़्रीकी सरकार को इनके सामने झुकना पड़ा।

1915 21 वर्षो के प्रवास के बाद जनवरी 1915 में भारत लौटे तथा 1915 में ही अहमदाबाद में ही साबरमती के तट पर साबरमती आश्रम की स्थापना की

1916 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में उद्घाटन भाषण दिया

गांधीजी के राजनैतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले थे इन्ही की सलाह पर 1915 से 1916 तक भारतीय क्षेत्रों का दौरा किया।

गांधीजी के आंदोलन :

चम्पारन सत्याग्रह आंदोलन: 1917 में बिहार के चम्पारन में हुआ। इस आंदोलन का मुख्य कारण तीन कठिया पद्दति थी। इस पद्दति के अनुसार 3/20 वे भाग पर निल की खेती करना अनिवार्य कर दिया। किसान इससे मुक्ति चाहते थे। अतः राजकुमार शुक्ला के निवेदन पर गाँधी जी बिहार चम्पारण आए। उन्होंने सत्याग्रह किया तथा यह सफल रहा गांधीजी ने अंग्रेजो को 25% राजस्व लौटने पर मजबूर कर दिया। यह गांधीजी का प्रथम सफल आंदोलन था। इसी से प्रभावित होकर रविंद्र नाथ टैगोर ने इन्हे महात्मा की उपाधि दी।

अहमदाबाद मिल मजदुर आंदोलन (1918): यह आंदोलन भारतीय व अंग्रेजी कपडा मिल मालिकों के खिलाफ था। प्लेग महामारी के दौरान मिल मालिकों ने भारतीय मजदूरों को उनके वेतन का 70% बोनस देने का वायदा किया परन्तु महामारी समाप्त होते ही। वह इस बात से मुकर गई। तथा 20 % बोनस देने की बात कही। गाँधीजी की मध्यस्तता के कारण मिल मजदूरों को 35% बोनस दिया गया। गांधीजी ने पहली बार भूख हड़ताल करी।

खेड़ा आंदोनल (गुजरात) 1918 : गुजरात में अकाल पड़ा परन्तु अंग्रेजो ने किसानो पर 23% कर और बढ़ा दिया इस पर गाँधी जी ने आंदोलन किया और गरीब किसानो का राजस्व माफ़ करा लिया। इसमें यह शर्त राखी गई की जो किसान सक्षम है वही लगान देगा।

खिलाफत आंदोलन 1919 से 1922 : इसका उद्देश्य तुर्की में खलीफा के पद की पुनः स्थापना हेतु अंग्रेजो पर दबाव बनाना। अंग्रेजो द्वारा भारतीय सुल्तानों के विरुद्ध उकसाए जाने पर अरब में विद्रोह हुआ इससे भारतीय मुसलमानो की भावनाये आहत हुई। 1922 में मुस्तफा कमाल पाशा के नेतृत्व में तुर्की में खलीफा की सत्ता समाप्त कर दी गयी। और इसी के साथ यह आंदोलन भी समाप्त हो गया।

असहयोग आंदोलन 1920-22 : गांधीजी को रोलेट एक्ट व मोंटेग्यू चेम्सफोर्ड अधिनियम के कारण बड़ा आघात लगा गांधीजी ने अंग्रेजो के खिलाफ। असहयोग की निति अपनाई। इसका उद्देश्य ब्रिटिश भारत की राजनैतिक आर्थिक व सामाजिक संस्थाओ का बहिष्कार करना तथा ब्रिटिश शासन को ठप्प कर देना।

असहयोग हेतु किये गए प्रयास -

1. सरकारी उपाधियों को तथा वैतनिक व अवैतनिक पदों को त्याग दिया।
2. सरकारी दरबार व उत्सव में जाना बंद कर दिया।
3. सरकारी तथा अर्धसरकारी स्कूलों का त्याग।
4. विदेशी माल का बहिष्कार
5. 1919 के अधिनियम के द्वारा किये गए चुनावी प्रावधान का बहिष्कार करना।

4 फरवरी 1919 को उप्र के गोरखपुर के पास चौरा-चौरी नामक कस्बे में एक अंग्रेजी पुलिस ठाणे को घेरकर आग लगा दी जिसमे 22 अंग्रेज अधिकारी जल कर मारे गए इसी से आहत हो कर गांधीजी ने असहयोग आंदोलन स्थगित कर दिया।

साइमन कमीशन (1927):

1919 के भारत शासन अधिनियम की समीक्षा हेतु 1927 में एक आयोग का गठन किया गया। इस आयोग के अध्यक्ष सर जॉन साइमन थे इसमें एक भी सदस्य भारतीय नहीं था। अतः भारतीय लोगो ने 3 मार्च 1928 जब जॉन साइमन भारत पहुंचे तो लाहौर में लाला लाजपत राय व उनके सहयोगियों ने विरोध किया। लालाजी पर लाठीचार्ज किया गया। तब लालाजी ने कहा की "मेरे सर पर चलाई गई प्रत्येक लाठी का एक एक वार अंग्रेजी शासन के ताबूत में आखरी कील होगा"

साइमन कमीशन की प्रमुख सिफारिशें

1. प्रांतो में द्वैत शासन समाप्त किया जायेगा तथा। उत्तरदाई शासन की स्थापना की जाएगी
2. केंद्रीय प्रशासन में कोई परिवर्तन नहीं किया जाएगा।
3. भारत में संघीय शाशन की स्थापना की जाएगी।
4. उच्च न्यायलय को सरकार के अधीन रखा जायेगा।
5. प्रांतीय विधान मंडलो के सदस्यों की संख्या में वृद्धि की जाएगी।
6. अल्पसंख्यको के हितो के संरक्षण हेतु गवर्नर जनरल को विशेष अधिकार दिए जायेंगे
7. भारतीय परिषद् की स्थापना की जाएगी
8. बर्मा को ब्रिटिश भारत से अलग कर दिया जायेगा

इन समस्त मांगो की पूर्ति हेतु लन्दन में गोल मेज सम्मलेन आयोजित किया गया ।

डांडी मार्च

दिसंबर 1929 में लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वराज्य का झंडा फेहराया गया। गांधीजी ने घोषणा की की "शैतान ब्रिटिश शासन के सामने समर्पण ईश्वर तथा मानव के विरुद्ध अपराध है"। 26 जनवरी 1930 को पुरे देश में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया।

12 मार्च 1930 को साबरमती आश्रम से अपने 78 अनुयायिओं के साथ 24 दिन की पद यात्रा की। 5 अप्रैल 1930 को डंडी पहुंचे तथा 6 अप्रैल को नमक बना कर कानून तोडा।

सुभाष चंद्र बोस ने इस यात्रा की तुलना नेपोलियन के पेरिस मार्च तथा मुसोलिनी के रोम मार्च से की।

सविनय अवज्ञा आंदोलन 6-4-1930

ब्रिटिश साम्राजयवाद के विरुद्ध यह आंदोलन विशेष रूप से कांग्रेस व गांधीजी के द्वारा चलाया गया।

इसका कारण यह था की, यंग इंडिया समाचार पत्र के लेख द्वारा ब्रिटिश सरकार से 11 सूत्री अंतिम मांग पत्र प्रस्तुत की गयी। जिसमे स्वतंत्रता की मांग शामिल नहीं थी।

गांधीजी को उम्मीद थी की अंग्रेजो द्वारा की गयी इस भूल को पुनः सुधार लिया जायेगा। 41 दिनों तक उन्होंने इंतजार किया परन्तु कोई भी निष्कर्ष नहीं निकला। इसी के फल स्वरुप उन्होंने डांडी मार्च किया। और 6 अप्रैल 1930 को नमक बना कर अवज्ञा की।

इस आंदोलन का उद्देश्य कुछ विशिष्ट प्रकार के गैर क़ानूनी कार्य कर के सरकार को जुका देना था।

1930 से 1932 के दौरान 3 गोल मेज सम्मेलनों का आयोजन लन्दन में हुए।

प्रथम गोल मेज सम्मलेन में कांग्रेस ने भाग नहीं लिया। ब्रिटिश संसद यह चाहती थी की। इन गोल मेज सम्मेलनों में कांग्रेस व गांधीजी की पुर्ण रूप से सहभागिता हो। इसी के मध्येनजर अंग्रेज गवर्नर इरविन व गांधीजी के बिच मार्च 1931 में एक समजोता हुआ जिसे Gandhi-Irwin Pact कहा जाता है।

द्वितीय गोल मेज सम्मलेन: इस गोल मेज सम्मलेन में कांग्रेस ने भाग लिया गांधीजी कांग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में राजपुताना नामक जहाज से लन्दन पहुंचे इस सम्मलेन की अध्यक्षता तत्कालीन प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड के द्वारा की गयी। साम्प्रदयिक कारणों से यह सम्मलेन असफल रहा। ब्रिटिश सरकार ने भारत में एक बार पुनः दमनकारी नीतिया लागु कर दी। अतः जनवरी 1932 में गांधीजी ने एक बार पुनः सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारम्भ किया।

1932 में यावरदा जेल में गांधीजी ने अस्प्रश्यो के लिए अलग चुनावी क्षेत्र के विरोध में उपवास प्रारम्भ किया परन्तु अंत में गुरुदेव की उपस्तिथि में अपना अनशन तोड़ा

1933 में हरिजन नामक साप्ताहिक समाचार पत्र प्रारम्भ किया। तथा साबरमती आश्रम का नाम बदलकर हरिजन आश्रम रखा तथा देश व्यापी आंदोलन छेड़ा।

1934 में भारतीय ग्रामोद्योग संघ की स्थापना

1936 में वर्धा के निकट एक गांव का चयन किया जो की बाद में सेवाग्राम आश्रम के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

1940 व्यक्तिगत सत्याग्रह की घोषणा की। विनोबा भावे को प्रथम व्यक्तिगत सत्याग्रही बनाया।

भारत छोड़ो आंदोलन

इसका प्रारम्भ 6 अगस्त 1942 हुआ गांधीजी ने करो या मारो का मूल मन्त्र दिया। यह आंदोलन भारत को स्वतंत्र भले ही न करवा पया हो परन्तु इसके दूरगामी परिणाम सुखद रहे इसीलिए भारत की स्वाधीनता के लिए किया जाने वाला अंतिम महान प्रयास कहा जाता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य :

1944 में सर आगा खाँ महल में कस्तूरबा गाँधी की मृत्यु हो गयी।

1946 में कैबिनेट मिशन से भेट की तथा पूर्वी बंगाल के 49 गावो की शांति यात्रा की।

1947 में साम्प्रदाइक शांति हेतु बिहार की यात्रा की।

नई दिल्ली में लॉर्ड माउंट बेटन तथा मोहमद अली जिन्ना से मिले तथा विभाजन का विरोध किया।

देश के स्वाधीनता दिवस 15 अगस्त को कलकत्ता में दंगो को शांत करने हेतु उपवास किया।

महात्मा गाँधी हमेशा 2 लोगो से परेशान रहते थे एक तो जिन्ना से तथा दूसरा अपने बेटे हरिलाल से।

1948 में उन्होंने उनके जीवन का अंतिम उपवास किया जो की 13 जनवरी से 18 जनवरी तक किया। यह उपवास उन्होंने देश में फैली साम्प्रदायिक हिंसा के विरुद्ध किया था।

30 जनवरी को शाम के समय प्रार्थना के लिए जाते समय बिड़ला हाउस के बहार नाथूराम गोडसे ने गोली मार के हत्या कर दी।

सामाजिक सुधार अधिनियम :

1 सती प्रथा प्रतिबन्ध:

लॉर्ड विलियम बेंटिक ने सती प्रथा पर 1829 में सर्वप्रथम प्रतिबंद बंगाल में लगाया गया।

1830 में इसे बम्बई व मद्रास में लागु किया गया

1833 में इसे सम्पूर्ण भारत में लागु किया गया।

2 शिशुवध :1785-1804

शिशु हत्या पर प्रतिबंद वेलेजली के काल में लगाया गया। यह बंगालियों व राजपूतो में प्रचलित था।

3 शारदा एक्ट : 1930

इरविन के समय लागु किया गया। इसमें लड़की की आयु 14 वर्ष तथा लड़के की आयु 18 वर्ष निर्धारित की गयी।

4 दास प्रथा : 1843

पहली बार दास प्रथा पर रोक 1833 के चार्टर अधिनियम के द्वारा लागु की गयी, परन्तु इसका पूर्ण रूप से उन्मूलन 1843 में हुआ।

प्रमुख समाधी स्थल :

- 1 राजघाट : महात्मा गाँधी
- 2 शांतिवन : जवाहर लाल नेहरू
- 3 वीर भूमि : राजीव गाँधी
- 4 विजय घाट : लाल बहादुर शास्त्री
- 5 शक्ति स्थल : इंदिरा गाँधी
- 6 अभय घाट : मोरारजी देसाई
- 7 किसान घाट : चौधरी चरण सिंह
- 8 उदय भूमि : के. आर. नारायण
- 9 समता स्थल : बाबू जगजीवन
- 10 कर्म भूमि : डॉ शंकर दयाल शर्मा
- 11 स्मृति वन : इंद्र कुमार गुजराल

विभिन्न उपाधिया

- वल्लभ भाई पटेल : भारतीय बिस्मार्क
- राजा राम मोहन राय : आधुनिक भारत का निर्माता
- गंगाधर तिलक : भारतीय अशांति का जनक
- खान अब्दुल : फ्रंटियर गाँधी
- दादा भाई नैरोजी : द ग्रेट ओल्ड मेन
- मदन मोहन मालवीय : महामना
- लाला लाजपत राय : पंजाब केसरी
- सरोजनी नायडू : भारत की कोकिला
- चितरंजन दस : देशबंधु
- पंडित गोप बंधू दस : उड़ीसा का गाँधी

भारतीय मुस्लिम लीग की स्थापना 30 दिसम्बर 1906 को ढाका में की गई इसके संस्थापक नवाब सलीमुल्ला थे। वकार-उल-मुल्क मुस्ताक हुसैन इसके प्रथम अध्यक्ष थे परन्तु 1908 में सर आगा खां को इसका स्थाई अध्यक्ष चुन लिया गया।

दिल्ली दरबार का आयोजन 12-12-1911 को किया गया। इसमें दिल्ली को भारत की राजधानी बनाने की घोषणा की गई तथा बंगाल विभाजन वापस ले लिया गया। 1 अप्रैल 1912 को दिल्ली भारत की राजधानी बानी।

भारतीय इतिहास पर महत्वपूर्ण प्रश्न

Q) निम्नलिखित में से कौनसा प्राचीन इतिहास का युग नहीं माना जाता है

a) पुरापाषाण युग

b) सांस्कृतिक युग

c) मध्यपाषाण युग

d) नवपाषाण युग

Q) सबसे पुराना ब्राह्मणी साहित्य कौन सा है

a) अरण्यक

b) उपनिषद

c) स्मृति

d) वेद

Q) हस्तकुठार और क्लीवर उपकरण थे

a) पुरापाषाण काल

b) मध्य पुरापाषाण युग

c) नव पुरापाषाण युग

d) लौह युग

TYPING WAY

Q) बिहार में चिरांद एक है

a) एक पुरापाषाण स्थल

b) नवपाषाण स्थल

c) मध्यपाषाण स्थल

d) मध्य पुरापाषाण स्थल

Q) निम्नलिखित में से कौन सा इंडस लोगों के लिए अज्ञात था

a) ताम्बा

b) सोना

c) चाँदी

d) लोह

Q) मोहनजोदड़ो किस नदी के किनारे स्थित है?

a) रवि

b) झेलम

c) चिनाब

d) सिंधु

Q) गोड़ीवाड़ा किस सिंधु शहर से मिला है

a) लोथल

b) हड़प्पा

c) राखीगढ़ी

d) चन्हुदारो

TYPING WAY

Q) निम्नलिखित में से कौनसा जानवर हड़प्पा वासियों को ज्ञात नहीं था?

a) भैंस

b) भेड़

c) बकरी

d) गाय

Q) सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषता थी

a) शहरी सभ्यता

b) कृषि सभ्यता

c) मध्यपाषाण सभ्यता

d) पुरापाषाण सभ्यता

Q) मातृ देवी की आराधना से जुड़ा है

a) आर्य सभ्यता

b) भूमध्यसागरीय सभ्यता

c) सिंधु घाटी सभ्यता

d) उत्तर वैदिक सभ्यता

Q) सिंधु घाटी और हिंदू धर्म की प्राचीन संस्कृति के बीच संबंध दर्शाता है

a) पशुपतिनाथ, इंद्र और मातृदेवी

b) पत्थर, पेड़ और जानवर

c) विष्णु और लक्ष्मी

d) शिव और शक्ति

TYPING WAY

Q) आर्य शब्द से तात्पर्य है

a) एक नैतिक समूह

b) खानाबदोश लोग

c) एक भाषण समूह

d) एक श्रेष्ठ जाति

Q) रावी नदी का वैदिक नाम क्या है

a) पुरुषनी

b) चंद्रभागा

c) अरिजकिया

d) सिंधु

Q) जादुई टोने-टोटके और तंत्र-मंत्र सम्मिलित है

a) ऋग्वेद में

b) यजुर्वेद में

c) अथर्ववेद में

d) सामवेद में

Q) ऋग्वैदिक भगवान वरुण थे

a) शांति के अग्र-दूत

b) शत्रुओं का नाश करने वाला

c) ब्रह्मांडीय व्यवस्था के संरक्षक

d) समृद्धि के देवता

TYPING WAY

Q) 4th बुद्ध परिषद आयोजित किया गया था

a) राजगृह में

b) वैशाली में

c) कश्मीर में

d) पाटलिपुत्र में

Q) पाटलिपुत्र में तीसरी बौद्ध परिषद की अध्यक्षता की

a) मोगलीपुत्त तीसा

b) अशोक

c) महाकासापा

d) वसुमिता

Q) मानव जाति के दुखो के अंत के लिए अष्टांगिक मार्ग का प्रस्ताव किसने रखा

a) महावीर

b) गौतम बुद्ध

c) आदि शंकराचार्य

d) कबीर

Q) गौतम बुद्ध का निधन हुआ था

a) गया में

b) खुशीनगर में

c) सरस्वती में

d) सारनाथ में

TYPING WAY

Q) गौतम बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया था

a) गया

b) पाटलिपुत्र

c) सारनाथ

d) ख़ुशी नगर

Q) निम्नलिखित में से कौन सा बौद्ध त्रिपिटक का हिस्सा नहीं है

a) सुत्त पिटक

b) न्याय पिटक

c) विनय पिटक

d) अभिधम्म पिटक

Q) जैन धर्म और बुद्धवाद दोनों किस चीज़ में विश्वास नहीं करते थे?

a) प्रबुद्धता

b) मोक्ष

c) अनुष्ठान

d) बलिदान

Q) पहले जैन संगीति का परिणाम था

a) 12 अंग का संकलन

b) 12 उपंगों का संकलन

c) त्रिपिटको का संकलन

d) उपरोक्त में से कोई नहीं

TYPING WAY

Q) जैन धर्म में कितने तीर्थंकर थे

a) 20

b) 19

c) 18

d) 24

Q) 600 ई. पू. के दौरान वत्स की राजधानी थी

a) सुक्तिमती

b) हस्तिनापुर

c) कौशांबी

d) कंपिलिया

Q) निम्नलिखित में से किसने पाटलिपुत्र शहर की स्थापना की?

a) उदायिन

b) बिम्बसार

c) अशोक

d) चंद्रगुप्त

Q) नंदा राजवंश की स्थापना किसने की थी

a) महापद्मनंद

b) उदायिन

c) घनानंद

d) खारवेल

TYPING WAY

Q) किस मौर्य राजा ने पंजाब से यूनानियों को उखाड़ फेंका

a) चंद्रगुप्त

b) अशोक

c) बिम्बसार

d) उदायिन

Q) किस मौर्यकालीन शासक को अमित्रघात के नाम से जाना जाता है

a) चंद्रगुप्त मोर्य

b) अशोक

c) बिन्दुसार

d) महापद्मनंद

Q) अशोक ने प्रसिद्ध कलिंग युद्ध कब किया था

a) 255 ई.पू.

b) 261 ई.पू.

c) 248 ई.पू.

d) 270 ई.पू.

Q) पतंजलि ने महाभाष्य किस राजवंश के काल के दौरान लिखा

a) मौर्य वंश

b) कण्व वंश

c) सुंग वंश

d) चेदि वंश

TYPING WAY

Q) सम्राट अशोक किसका का उत्तराधिकारी था

a) चंद्रगुप्त मौर्य

b) बिन्दुसार

c) सुसीमा

d) अघमित्र

Q) कौटिल्य की अर्थशास्त्री की पांडुलिपियों का मूल खोजकर्ता था

a) श्रीकांत शास्त्री

b) श्रीनिवास अयंगर

c) आर शमशास्त्री

d) विलियम जोन्स

Q) कलिंग के खिलाफ अशोक के अभियान की जानकारी का मुख्य स्रोत निम्नलिखित में से कौन सा है

a) दिव्या जान

b) रॉक एडिट XIII

c) पिलर एडिट VII

d) महावास्तु

Q) अर्थशास्त्र किसने लिखा था

a) घनानंद

b) कौटिल्य

c) बिम्बिसार

d) पुष्यमित्र

TYPING WAY

Q) महाराजाधिराज की उपाधि धारण करने वाला पहला गुप्त शासक था

a) चंद्रगुप्त I

b) चंद्रगुप्त II

c) समुद्रगुप्त

d) कुमारगुप्त प्रथम

Q) निम्नलिखित में से किसने समुद्रगुप्त को "भारत के नेपोलियन" के रूप में वर्णित है

a) रोमिला थापर

b) डीडी कौशांबी

c) डीएन झा

d) V.A. स्मिथ

Q) किस गुप्त शासक ने परम भागवत की उपाधि धारण की?

a) चंद्रगुप्त

b) स्कंदगुप्त

c) समुद्रगुप्त

d) चंद्रगुप्त II

Q) फाहियान ने किस के शासनकाल के दौरान भारत का दौरा किया

a) चंद्रगुप्त II

b) समुद्रगुप्त

c) रामगुप्त

d) कुमारगुप्त

TYPING WAY

Q) चंद्रगुप्त द्वितीय को किस नाम से जाना जाता था

a) समुद्रगुप्त

b) स्कंदगुप्त

c) विक्रमादित्य

d) रंगुप

Q) किस गुप्त शासक ने भगवान कार्तिकेय की पूजा का परिचय दिया?

a) श्री गुप्त

b) चंद्रगुप्त

c) कुमारगुप्त

d) स्कंदगुप्त प्रथम

Q) सूर्या सिद्धान्त निम्नलिखित में से किसने लिखा है?

a) कालिदास

b) आर्य भट्ट

c) अमरसिंह

d) शूद्रक

Q) सातवाहनों ने अपने सिक्के मुख्य रूप से बनाए

a) सीसा

b) चाँदी

c) सोना

d) कॉपर

TYPING WAY

Q) महाबलिपुरम में रथ मंदिरों का निर्माण किस पल्लव शासक के शासनकाल में हुआ था

a) महेंद्रवर्मन ।

b) नरसिम्हावर्मन ।

c) परमेस्वरवर्मन प्रथम

d) नंदीवर्मन प्रथम

Q) किस भारतीय राजा ने पूर्वी एशिया के हिस्सों को जीतने के लिए नौसैनिक शक्ति का इस्तेमाल किया था

a) अकबर

b) कृष्ण देव राय

c) राजेंद्र चोल

d) शिवाजी

Q) निम्नलिखित में से किस गुप्त राजा ने भारत पर हूणों को आक्रमण करने से रोक्या

a) कुमार गुप्ता

b) समुंद्र गुप्त

c) स्कंद गुप्त

d) चंद्रगुप्त

Q) किस राष्ट्रकूट शासक ने एलोरा में शिव के प्रसिद्ध कैलाश मंदिर का निर्माण कराया

a) दंती दुर्गा

b) अमोघवर्ष ।

c) कृष्णा ।

d) वत्स राज

TYPING WAY

Q) चोल मंदिरों में से अधिकांश किसको समर्पित थे

a) विष्णु

b) शिव

c) ब्रह्म

d) दुर्गा

Q) निम्नलिखित राजवंशों में से किसने श्रीलंका पर विजय प्राप्त की

a) पंड्या

b) चालुक्यों

c) चोल

d) राष्ट्रकूट

Q) अल बरूनी किसके साथ भारत आया था?

a) मौहम्मद ग़ोरी

b) महमूद गजनी

c) बाबर

d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Q) मुसलमानों के बीच, भारत का पहला विजय प्राप्त क्षेत्र था

a) मुल्तान

b) सिंध

c) दिल्ली

d) काबुल

TYPING WAY

Q) किस लड़ाई ने दिल्ली क्षेत्र के मार्ग को मौहम्मद गोरी के लिए खोल दिया?

a) तराइन की पहली लड़ाई

b) तराइन का दूसरा युद्ध

c) खनवा की लड़ाई

d) पानीपत की पहली लड़ाई

Q) दिल्लीका (दिल्ली) शहर की स्थापना किसके द्वारा की गई थी

a) चौहान

b) तोमर

c) पवार

d) प्रतिहार

Q) भारत की पहली मुस्लिम महिला शासक थी

a) चाँद बीबी

b) बेगम हज़रत महल

c) रजिया सुल्ताना

d) नूरजहाँ

Q) दिल्ली सल्तनत की आधिकारिक भाषा क्या थी

a) फारसी

b) उर्दू

c) अरबी

d) हिंदी

TYPING WAY

Q) किस वंश के सुल्तानों ने सबसे लंबे समय तक शासन किया

a) खिलजी वंश

b) तुगलक वंश

c) गुलाम वंश

d) लोधी वंश

Q) सुल्ताना रज़िया बेगम किसकी बेटी थी

a) बलबन

b) कुतुबुद्दीन ऐबक

c) इल्तुतमिश

d) रुकनुद्दीन

Q) लोधी वंश किसके द्वारा स्थापित किया गया था

a) इब्राहिम लोधी

b) सिकंदर लोधी

c) बहलोल लोधी

d) खिज्र खान

Q) चौगान खेलते समय दिल्ली सुल्तान जो उनकी मृत्यु हो गई थी

a) कुतुब-उद-दीन ऐबक

b) अलाउद्दीन खिलजी

c) फिरोज शाह तुगलक

d) घियासुद्दीन तुगलक

TYPING WAY

Q) बीजापुर को किसके लिए जाना जाता है

a) गंभीर सूखे की स्थिति

b) गोल गुम्बज

c) भारी वर्षा

d) गोमतेश्वर की मूर्ति

Q) भक्ति पंथ के समर्थक कौन नहीं थे?

a) नागार्जुन

b) तुकाराम

c) त्यागराज

d) वल्लभाचार्य

Q) सूफीवाद का दर्शन किस हिंदू दर्शन के समान है

a) कर्म

b) भक्ति

c) कल्पना

d) ज्ञान

Q) मुगल सम्राट हुमायूं का मकबरा है

a) दिल्ली

b) आगरा

c) काबुल

d) सुसूजी

TYPING WAY

Q) बाबर के मुगल सिंहासन का उत्तराधिकारी था।

a) हुमायूँ

b) अकबर

c) शेरशाह

d) बहादुर शाह

Q) ग्रैंड ट्रंक रोड का निर्माण किस शासक के शासनकाल में किया गया था?

a) शेरशाह सूरी

b) बाबर

c) शाहजहाँ

d) अकबर

Q) इसमें से कौन कोनसा स्थल किसी मृत व्यक्ति के लिए स्मारक नहीं है

a) बीबी का मकबरा

b) ताजमहल

c) चारमीनार

d) एतमादुद्दोला

Q) दीन-ए-इलाही को स्वीकार करने वाला अकबर का एकमात्र हिंदू दरबारी था

a) टोडरमल

b) बीरबल

c) तानसेन

d) मानसिंह

TYPING WAY

Q) तानसेन का मूल नाम था

a) बंदा बहादुर

b) रामतनु पांडे

c) लाल बलवंत

d) हरहु कैलाश

Q) अंतिम मुगल सम्राट कौन था

a) बाबर

b) जहाँगीर

c) अकबर

d) बहादुर शाह II

Q) कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद किसके द्वारा बनवाई गई थी?

a) कुतुब-उद-दीन ऐबक

b) अलाउद्दीन खिलजी

c) इल्तुतमिश

d) मोहम्मद आदिल शाह

Q) पहला देश जिसने भारत तक पहुंचने के समुद्री मार्ग की खोज की थी

a) पुर्तगाल

b) डच

c) फ्रेंच

d) ब्रिटेन

TYPING WAY

Q) वास्को डि गामा भारत में कब उतरा

a) 1492

b) 1498

c) 1448

d) 1587

Q) भारत में डचों का सबसे पुराना निर्माण कौन सा था?

a) मुसलीपट्टनम

b) पुलिकट

c) सूरत

d) अहमदाबाद

Q) अंग्रेजों ने भारत में अपना पहला कारखाना स्थापित किया

a) बॉम्बे

b) सूरत

c) सुतंती

d) मद्रास

Q) ब्रिटिश सरकार ने भारत पर सीधे शासन करना कब शुरू किया

a) प्लासी की लड़ाई के बाद

b) पानीपत की लड़ाई के बाद

c) मैसूर के युद्ध के बाद

d) सिपाही विद्रोह के बाद

TYPING WAY

Q) झांसी राज्य भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की किस निति के तहत हड़प लिया गया

a) चूक का सिद्धांत

b) सहायक गठबंधन की नीति

c) रानी लक्ष्मी बाई के खिलाफ युद्ध

d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Q) इलाहाबाद की संधि किससे संबंधित है

a) प्लासी की लड़ाई

b) बक्सर का युद्ध

c) एंग्लो शेख वॉर थर्ड एंजो मैसूर वॉर

d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Q) प्लासी का युद्ध निम्न में से किन के मध्य हुआ?

a) ईस्ट इडिया कंपनी और सिराजुद्दोला

b) ईस्ट इंडिया कंपनी और सुज़ुद्दोला

c) उपरोक्त दोनों

d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Q) 1857 का विद्रोह किसके द्वारा शुरू किया गया था

a) सिपाही

b) ज़मींदार

c) किसान

d) उपरोक्त सभी

TYPING WAY

Q) 1857 के विद्रोह के दौरान दिल्ली में ब्रिटिश कमांडर कौन था

a) कॉलिन कैंपबेल

b) जॉन निकोलसन

c) ह्यूग रोज

d) विलियम टेलर

Q) नए भारत का पैगंबर किसे कहा जाता है

a) दयानंद सरस्वती

b) श्रीरामकृष्ण

c) राजा राममोहन राय

d) स्वामी विवेकानंद

Q) आर्य समाज किसके द्वारा स्थापित किया गया था

a) स्वामी दयानंद सरस्वती

b) स्वामी विवेकानंद

c) केशव चंद्र सेन

d) ईश्वर चंद्र विद्यासागर

Q) सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसायटी के संस्थापक कौन थे

a) बाल गंगाधर तिलक

b) गोपाल कृष्ण गोखले

c) सुरेंद्रनाथ बनर्जी

d) दादाभाई नरोजी

TYPING WAY

Q) प्रथना समाज के संस्थापक कौन थे

a) रामकृष्ण परमहंस

b) स्वामी विवेकानंद

c) डॉ आत्माराम पडुरंगा

d) दयानंद सरस्वती

Q) 'वेदों की ओर लौटो' यह नारा दिया गया था

a) रामकृष्ण परमहंस

b) विवेकानंद

c) ज्योतिबा फुले

d) दयानंद सरस्वती

Q) भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, अखबार यंग इंडिया किसके द्वारा प्रकाशित किया गया था

a) बीआर अंबेडकर

b) सुभाष चंद्र बोस

c) महात्मा गांधी

d) मुहम्मद अली जिन्ना

Q) फ्रंटियर गांधी किसे कहा जाता है?

a) मुहम्मद अली जिन्ना

b) महात्मा गांधी

c) खान अब्दुल गफ्फार खान

d) बाल गंगाधर तिलक

TYPING WAY

Q) भारत में पश्चिमी शिक्षा और अंग्रेजी भाषा की शुरुआत की वकालत किसने की?

a) बाल गंगाधर तिलक

b) राजा राम मोहन रॉय

c) दादाभाई नरोजी

d) गोपाल कृष्ण गोखले

Q) रोलेट एक्ट किस वर्ष में पारित किया गया था

a) 1919

b) 1921

c) 1923

d) 1916

Q) बंगाल के राजस्व का स्थायी बंदोबस्त किसके काल में हुआ?

a) क्लाइव

b) हेस्टिंग्स

c) वेलेस्ले

d) कॉर्नवालिस

Q) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना किसने की

a) A. O. ह्यूम

b) वोमेश चंद्र बनर्जी

c) गोपाल कृष्ण गोखले

d) रास बिहारी बॉस

TYPING WAY

Q) महात्मा गांधी ने अपने डांडी मार्च की शुरुआत की

a) डांडी

b) पोरबंदर

c) अहमदाबाद

d) साबरमती आश्रम

Q) भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत किस वर्ष में महात्मा गांधी द्वारा की गई थी

a) 1941

b) 1945

c) 1942

d) 1946

Q) किसने क्रिस्प प्रस्ताव को "Post dated cheque in a crashing bank" कहा

a) अम्बेडकर

b) एनी बेसेंट

ग) पटेल

d) गांधीजी

Q) "करो या मरो" का नारा किसने दिया

a) महात्मा गांधी

b) नेताजी

c) वीर सावरकर

d) सुब्रमण्य भारती

TYPING WAY

Q) अरुणा आसफ अली को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के ध्वज को कहा फहराने के लिए याद किया जाता है

a) असहयोग आंदोलन

b) सविनय अवज्ञा आंदोलन

c) स्वराज आंदोलन

d) भारत छोड़ो आंदोलन

Q) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पहले अध्यक्ष कौन थे

a) व्योमेश चंद्र बनर्जी

b) बाल गंगाधर तिलक

c) एलन ऑक्टेवियन ह्यूम

d) दादाभाई नरोजी

Q) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और मुस्लिम लीग1916 में एक दूसरे के करीब आए

a) लाहौर

b) अमृतसर

c) लखनऊ

d) हरिपुरा

Q) किस क्रांतिकारी ने अपनी जान खुद ही ले ली

a) चंद्रशेखर आज़ाद

b) खुदीराम बोस

c) रास बिहारी बोस

d) भगत सिंह

TYPING WAY

Q) असहयोग आंदोलन की शुरुआत हुई

a) 1870

b) 1920

c) 1920

d) 1942

Website: https://www.typingway.com

TYPING WAY

TYPING WAY